श्री सयाजी साहित्यमाला पुष्प १४४

(इतिहास गुच्छ)

चीन की संस्कृति

अनुवादक

शान्तिप्रिय आत्मारामजी पंडित

गुजराती हिंदी शिक्षक, आरोग्यता, अथवर्म, इ. के कर्त्ता
तथा कोष की कथा, अवतार रहस्य इ० के अनुवादक

प्रकाशक

जयदेव ब्रदर्स बडोदा

ई. स. १९२८ } { प्रथमावृत्ति
संवत् १९८४ } { प्रति ५००

मूल्य

सजिल्द १-६-०]. [सादी १-४-०

प्रकाशक

महेन्द्र चन्द्र

व्यवस्थापक

जयदेव ब्रदर्स आर्यपुरा बडोदा.

मुद्रक

परभुलाल शिवलाल ठक्कर.

श्री भारतविजय प्रिं. प्रेस मोदीखाना बडोदा

ता. २१-८-२८

श्री

विज्ञप्ति

अपने देशी भाषाके साहित्य की अभिवृद्धि करने के सदुद्देश्य से **श्रीमंत पतितपावन महाराजा साहब श्री सयाजीराव गायकवाड सेनाखासखेल शमशेर बहादुर, जी. सी. एस आई, जी. सी. आई. ई.** ने कृपा कर दो लाख रुपए की जो रकम सुरक्षित रखी है उस के व्याज में से **श्री सयाजी साहित्य माला** द्वारा अनेक विषयों के पुस्तक तय्यार किए जाते हैं।

यह **'चीन की संस्कृति'** नामक पुस्तक एच. ए. गाइल्स कृत 'सिविलेजन आफ चायना' नामक इंग्लिश पुस्तक के गुजराती अनुवाद का हिंदी अनुवाद है और उक्त ग्रंथमाला के इतिहास गुच्छ के-पुष्प १४४ के रूप में **पंडित शान्तिप्रिय आत्मारामजी** द्वारा तय्यार करवा कर विद्याधिकारी की भाषांतर शाखा द्वारा संशोधन करा कर प्रसिद्ध करते हैं।

विद्याधिकारी कचेरी भाषांतर शाखा, बडोदा. ता. २१-७-१९२८	मं. रा. मजमुदार भा. म.	नं. के. दीक्षित विद्याधिकारी

अनुवादककी प्रस्तावना.

मि. हर्बर्ट ए. गाइल्स नामक अंग्रेज विद्वान् ने 'दि सिविलिजेशन आफ चायना' नामक एक छोटा ग्रंथ लिखा था, उसी का यह भाषांतर है। मुख्य ग्रंथकार अपनी आठ पंक्ति की प्रस्तावना में इतनाही कहता है कि जिन लोगों को चीन का ज्ञान नहीं है वे विशेष जानसकें, इस लिए उसने बहुत प्राचीन काल से आजतक जबरदस्त परिवर्तन को प्राप्त होती हुई चीन की संस्कृति का यह संक्षिप्त चित्र दिया है। हम लोगों को भी चीन का विशेष परिचय नहीं है बंबई जैसे शहर में क्वचित् चीनी नजर आते हैं, हम में से बहुत से यह समझते हैं कि चीनियों की नाक चपटी होती है, और वे सिर पर बृहत शिखा धारण करते हैं। उनकी स्त्रियों के पैर जान बूझकर छोटे किए जाते हैं, एवं संपूर्ण प्रजा अफीम के दुर्व्यसन का भारी भोग होगई है, इतने परिचय वाले को यह पुस्तक बहुत उपयोगी होगा।

सामान्यतया लोग अपने से बढे चढे लोगों की संस्कृति की तरफ ध्यान रखते हैं; एवं उसका सच्चा झूठा अनुकरण करते हैं, हम को युरोपीय संस्कृति का मोह लगा है, वह वास्तविक होगा, लेकिन हमारे एशिया खण्ड में और सो भी अपने पडोसी

चीनियों की ज्यादह जान पहचान हो तो बहुत अच्छा हो। राजकीय दृष्टि से चाहे ये लोग आज आगे न हों, दूसरी प्रजाओं को अथवा उन के देशों को निगल जाने में चाहे होशियार नहीं पर ऐसा समय था जब कि चीनने अपने अंग मध्य एशिया तक फैलाये थे। दूसरे यह सम्पूर्ण प्रजा बौद्ध धर्म को मानने वाली है। इस लिये अपने देश में प्रचलित हिन्दू धर्म के साथ वह बहुत अंशोंमें मिलती है। इस तरह अनेक दृष्टिसे चीन का वर्णन हम को उपयोगी हो सकता है।

इस पुस्तक में चीन का इतिहास नहीं दिया गया। लेकिन चीन के रस्मोरिवाज, लोगों का रहन महन, विद्या साहित्य की वृद्धि, खेलकूद, स्त्रियों की प्रतिष्ठा, राजकीय विचार और प्रबंध इसी तरह अन्य कतिपय विषयों का परिचय दिया गया है। बहुत से विषयों में वे हम से मिलते हैं। सुधरे हुए लोग, अथवा विजयी लोग चाहे जितना इन को पीछे पडे हुए या जंगली बतावें लेकिन वे ऐसे जंगली नहीं है सुतराम् बहुत सी बातें उन के अन्दर दूसरों से अनुकरणीय हैं। इस देश में भी नवीन युग के कारण जागृति आई है। उन्होंने अफीम का परित्याग किया है। यह देखकर अब हम को भी अपनी निद्रा छोड देनी चाहिये ऐसा प्रत्येक को अनुभव होना चाहिये।

अन्त में कतिपय स्थानोंपर जो भूलें रह गई हों उन को सुधार कर पाठक पढेगें। चीनियों के स्वभाव तथा उनकी

संस्कृति का सच्चा रहस्य समझकर उस में से अपने लायक उपदेश ले लेने की पाठकों से मेरी प्रार्थना है।

अन्त में श्रीमन्त सरकार महाराजा साहेब जिन के अति उदार आश्रय से गुजराती एवं हिन्दी साहित्य की जो एकसाथ वृद्धि हो रही है, उनकी दीर्घायु की कामना करता हुआ इस छोटी सी प्रस्तावना को समाप्त करता हूं।

अनुवादक.

चीन की संस्कृति

विषयसूची

चीन की [illegible]

प्रथम प्रकरण

प्राचीन समय

रूस की राजधानी मास्को से लेकर लगभग २॥ हजार कोस की रेल, सम्पूर्ण साइबीरिया के अन्दर से घूमती हुई पूर्व की तरफ चली गई है। इस पर चढ के आजकल बहुत से लोग १४-१५ दिवस में ही चीन की सैर कर आते हैं। इसलिये हमारे मनमें यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि चीन कैसा है?

(२) चीन इस शब्द का लंबा चौडा अर्थ करें तो उसमें मंगोलिया, मंचूरिया, पूर्व तुर्कस्थान और शुद्ध चीन के १८ प्रान्तों का समावेश हो जाता है। इस सम्पूर्ण प्रदेश का विस्तार २५ लाख चौरस माइल का है, अथवा अमेरिका के दो युनाइटेड स्टेट्स हों तो उनसेभी बडा है। यदि चीनालोगों के आचार विचार (रस्मोरिवाज) का अभ्यास करना होतो शुद्ध चीन जिस के १८ प्रान्त हैं उस तरफ विशेष ध्यान देना चाहिये।

वह सम्पूर्ण महाराज्य का ३/५ मात्र भाग है, एवं उसका विस्तार साडेसात लाख चौरस माइल हैं, उसकी चार सीमाएं हैं। उत्तर में 'पेकिन राजधानी' दक्षिण में व्यापारिक महत्त्व का केन्द्र 'कन्तान बन्दर' पूर्व में 'शांघाई बन्दर' और पश्चिम में तिब्बत है।

(३) किसी सामान्य चौरस की कल्पना कर उस के चारों ओर मध्यबिन्दु बताने वाले मानों चार स्थान हों, उसीतरह कोई मनुष्य जरासी मेहनत से मानचित्र में ढूंढ निकालेगा, उसको झटपट मालूम हो जावेगा जैसे कि चीन से लौटे हुवे मुसाफिर से तुम को चीन कैसा लगता है यह पूछना निरी बेवकूफी है, उसीतरह युरोपमें एक दोवर्ष रह कर लौटे हुए चीनी से पूंछना कि तुझे युराप कैसा लगता है विचित्र होगा। पेकिन राजधानी माड्रिडके अक्षांश पर है, इसीतरह कन्तान बन्दर भी कलकता के अक्षांश पर है। उपरोक्त चारों स्थलों की आबहवाभी भिन्न भिन्न है। फल-फूल वनस्पति जानवर मनुष्य आदिभी युरोप की तरह अनेक प्रकारके मालूम पडते हैं। पेकिनकी हवा ज्यादह सूखी और स्वास्थ्य को स्फूर्ति देने वाली है। वहां अक्टूबर और एप्रिल में वर्षा नहीं होती, हां थोडासा बरफ गिरता है। जुलाई और अगस्ट में अधिक से अधिक ६ सप्ताह गर्मी पडती है लेकिन रात ठण्डी होती है। दिसंबर और फर्वरी के बीच नदियों में बरफ की एक दो तहें जमजाती हैं। कन्तान बन्दर की तरफ गर्मी ज्यादह पडती है।

वहां ग्रीष्मऋतु बडी और शरीर में आलस्य लाने वाली होती है। सर्दी थोडी पर कठिन पडती है, कहते हैं कि कन्तान बन्दर में एक बार बर्फ दीखपडाथा, फिरतो लोग यही समझतेथे कि रूई के ढेर के ढेर बरसते हैं।

(४) शुद्ध चीन के उत्तर के प्रान्तों में बडे बडे मैदान हैं। वहां थोडे थोडे फासले पर गांव बसे हुए हैं, जहां कच्ची मिट्टी के घर बांधेहुवे हैं। दक्षिण के प्रान्तों में लम्बीलंबी पर्वत मालाएं दीख पडती हैं, जो सम्पूर्ण पृथ्वी की मनोहर कुदरत के साथ सुन्दरता में टक्कर मार सकती हैं। पर्वतों के शिखरों पर साधुओं के मठ दीख पडते हैं। कहीं कहीं तो ये मठ पर्वतों के अतिदुर्गम उच्च शिखरों पर होते हैं। दक्षिण के प्रान्तों में जो असह्य ताप पडता है उस से बचने के लिये, बहुत से धनिक चीना इन मठों में आरहते हैं। सुना जाता है कि कन्तान बन्दर के पास के अनेक पर्वतों पर इसतरह के सौ मठ हैं। उनमें अतिथि और पथिकों के लिये खास खास कमरे रक्खे जाते हैं, ऐसे मुसाफिरों से धन लेकर साधुलोग खुशी से अपनी पूंजी बढाते हैं।

(५)चीन के उत्तरभाग में मंगोलिया के टट्टु खच्चर तथा गधे अच्छी संख्यामें दीख पडते हैं। एवं मंगोलिया के रेतीले मैदानमें भारी बोझलेकर मुसाफरी करनेवाले दो कन्धे के ऊंट बहुत संख्यामें नजर आते हैं, दक्षिण के प्रान्तों में जब तक रेल न थी तब तक उसी पर मुसाफरी की जाती थी, अथवा

मजदूरोंके कन्धों पर पालखी जैसी 'सेडान चेअर' पर बैठ जाना पड़ता, अन्यथा धीरे धीरे चलनेवाली पर अधिक सुख देनेवाली छोटी छोटी नावों पर बैठकर उनको जाना पड़ता था। कन्तानसे पेकिन तक की मुसाफरी करनी हो तो डाक्टर की परीक्षा में जो तीन वर्ष में एक बार राजधानीमें होती उस में उमेदवारों को जाना पड़ता था। किनारेपर किश्तियां चलने लगतीं तोभी तीन महिने तक तो मार्ग प्रतीक्षा करनीही पड़ती थी। जरूरत के कामजात तो कासद घोडोंपर बैठके ले जाया करते, बीचबीच में घोडे बदलकर एक दिनमें दोसौ माइलकी मुसाफरी करते थे।

(६) पेकिन में मुसलमानों की ज्यादह बस्ती है, उनके लिये खासकर मोटी पूंछवाले दुंभा-भेडका उत्तम मांस पेकिन के चौराहों पर अन्य वस्तुओं के साथ बेचा जाता है। दक्षिणमें इस पशु के जीनेकी सम्भावना न होनेसे वहां बकरे का मांस खाते हैं। जिस तरह युरोप के बाजार में गौ भैंस का मांस सरे आम मिलता है, उसी तरह सुअर का मांस चीनमें सब जगह मिलता है। एवं गौबैल का मांस चीनियोंको बिलकुल रुचता नहीं, शायद इसका कारण यह हो कि खेतीके लिये परमोपयोगी एवं मनुष्य के सुखमें वृद्धिकर होनेसे उनके मारनेका निषेध चीन के महान् तत्त्ववेत्ता कानफ्युशियस ने किया होगा। चीन के लोगों का सामान्य भोजन चावल है, पर उत्तर चीनमें रहनेवाले किसानों को चावल महंगा पड़ने से वे बाजरेका विशेष उपयोग करते हैं।

सेव–अमरूद–द्राक्ष–तरबूज–अखरोट आदि फल उत्तरमें बहुत होते हैं, एवं दक्षिणके प्रान्तों में केला नारंगी अनन्नास आम करक फल (पोमेलो) लीची आदि उष्ण कटिबंधके फल प्राप्त होते हैं।

(७) सैकडों वर्षोंसे चीना लोग ऐसे फलोंको ठंडकमें रख संग्रह करते चले आ रहे हैं। इसी कार्यके लिए नदीमेंसे बरफके बड़े बड़े टुकड़े काटकर रख लेते हैं। गरमियों में पेकिन के मजदूर भी सस्ते में बरफ खरीद सकते हैं। पतझड़ की ऋतुसे लेकर मे और जून तक अंगूरोंके गुच्छों को अमृतफल के छिलकों के साथ लपेट बरफ के घरमें बिगड़ न जावें इस लिये रख देते हैं। चीनके पूर्व दिशामें आए हुए शांघाई बन्दर के पासके तलावों में से बरफ के पतले पड़ उखाड़कर गर्मियोंमें काम पड़े इस लिये रख लेते हैं।

(८) उत्तर और मध्यभाग में रहने वाले लोगोंकी अपेक्षा किनारे के रहने वाले लोग बुद्धिमान् होते हैं। चित्त की चंचलता और सामान्य स्वभाव में भिन्न प्रकार के होते हैं। खुद चीना लोग ही कहते हैं कि ' जहां पर्वत वहां सद्गुण ' एवं दरिया के किनारे के लोग बुद्धिमान् होते हैं। उनके कहनेका मतलब यह है कि ये दोनों गुण मनुष्य में एक साथ नहीं रह सकते, उनका इस मनुष्य स्वभाव के प्रति तिरस्कार है। इसी तरह भिन्न भिन्न प्रान्तों में रहने वाले लोग आपस में एक दूसरे को बहुत कम चाहते हैं। उत्तर के दक्षिण वालों से डरते हैं और उनका तिरस्कार

करते हैं, एव दक्षिण के लोग उत्तर के लोगों के प्रति तिरस्कार के भाव बतलाते हैं। इस बात का निश्चय १८६० इस्वी में हो गया था। उस समय फ्रान्स और इंग्लण्ड का मिश्रित लष्कर पेकिन जारहा था, उस समय कन्तान के लोगों को युद्ध के लिये बुलाना बहुत सहल होगयाथा, वे परदेशियों के इतने निमकहलाल रहे थे कि मानों किसी तीसरे पर आक्रमण कर रहे हों।

(९) चीन की मनुष्यगणना आजतक विश्वसनीय कभी भी नहीं हुई। परदेशी मुसाफिरोंने इस का अनुमान भिन्न भिन्न प्रकार से किया है। इस्विसन १८४२ में सेचेरोफ लिखते हैं कि- चीन में लगभग ४० करोड की बस्ती है। १९०२ में जब मनुष्यगणनों हुईथी, तब लगभग ४१ करोड की संख्या हुई थी। अगर ३० करोड ही मानें तोभी मनुष्य जातिका वह एक पंचमांश होता है। इन अंकों से यह अनुमान हो सकता है कि कदाचित् चीनियों की हार बांधकर एक कतार में चलने को कहा जावे तो उस जलूस का पार न मिले, एवं तीस करोड का अन्तिम व्यक्ति जब तक आगे चले तब यहां कितनेही बालक बडे हो हो कर उस जलूस में जुड जाया करें। चीनियां में मनुष्य गणना का रिवाज बहुत दिनों से दाखिल हुवा है। हम को ऐसा प्रमाण मिला है कि इ.स.१५६ में जब वसति गणना की गई, तब वह ५ करोड की हुईथी, आजकल वसति गणना इस प्रकार की जाती है कि प्रत्येक कुटुम्ब के नेता को एक चिट्ठी दीजाती है कि जिस में वह सब के नाम लिखे, परन्तु ये चिट्ठियां एकही दिन में न

लेने के कारण सच्ची नहीं होती, एवं सब अनुमान सेही कहना पडता है ।

(१०) चीन में जो भाषा बोली जाती है उस के लिये यही कहाजाता है कि एक भाषा है, वास्तव मे यह सच नहीं, किन्तु घरेलु भाषाएं भी कम से कम ८ प्रकार की हैं, और वह एक दूसरे से इतनी भिन्न हैं कि जैसे इंग्लिश-डच-जर्मन-फ्रेंच-स्पेनिश इटालियन और पोर्च्युगीज यह जैसे आपस में एक दूसरे से नहीं मिलतीं, इस प्रकार शांगहाई का आदमी जो बोलेगा वह कन्तान का आदमी बिलकुल नहीं समझ सकता । इसी तरह और भी समझना चाहिए । परन्तु पेकिन क दरबार में जो भाषा बोलीजाती है वह सब अमलदारों को सीखनी पडती है।इसीतरह सुशिक्षित व्यापारी तथा अन्यान्य लोगों को भी समझनेका प्रयत्न करना पडता है । यह बोली सामान्यतया मेन्डेरिन नाम से पहचानी जाती है । लिपि तो सम्पूर्ण महाराज्य के लिये एकही है । उसका तात्पर्य भी इतनाही है कि विचारों को कागज पर चित्रित करना । उस के उच्चारण भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं ।।जिस तरह अरबी संख्या के अंक इंगलंड फ्रान्स और जर्मनी में एकतरह से लिखे जाते हैं परन्तु उच्चारण में भेद होता है, इसीतरह चीन मे भी समझना चाहिये ।

(११) चीन में बोले जाने वाली भाषा चाहे जिस प्रान्त की हो, बस उच्चारण में मुसीवत है । एक ही शब्द के आवाज को भिन्न भिन्न प्रकार से बोलने पर भिन्न भिन्न अर्थ वाले भिन्न

भिन्न उच्चारण होनेसे एक बडी भारी कठिनाई आपडती है। अगर इसतरह की दिक्कत न हो तो, चीन की भाषा ही, सब से सहली जान पडे, क्यों कि उसमें जातिभेद वचन विभक्ति अर्थभेद कार्य आदि कुछ भी नहीं है। उच्चारण में अशुद्धि होने पर कई बार बाड़ा गोलमाल हो जाता है। एक समय एक विद्यार्थीने येन Yen मंगवाया, परन्तु किस अक्षर पर भार देने से हंस और नमक अर्थ होता है, यह न समझ वह बतक लेने को दौडा, पर जरूरत थी नमक की, इसी तरह एक अंग्रेज अमलदारने परदेशी खाते की कचहरी में यह बात कही कि टिन्टसिन के लोग परदेशियों को देख माउट्झा माउट्झा कहकर चिल्लाते हैं। उस से मुझे मालूम होता है कि इन परदेशियों की सिरकी टोपी देखकर चीनियों को आश्चर्य लगता है। बात यह है कि माउट्झा का उच्चारण फलाने २ अक्षर पर भार देकर बोलने से 'टोपी' यह होता है, और दूसरीतरह बोलने से बाल काला ऐसा अर्थ होता है, क्यों कि चीनी विदेशियों की दाढी को देखकर बोलते थे। अतः दाढीवाला यह अर्थ होता था, अब तक भी यह विशेषण परदेशियों को लगाया जाता है, एवं लाल दाढी वाले इस नाम से भी पुकारा जाता है।

(१२) चीन की लिपि ३००० वर्ष से चली आ रही है। उस में मनुष्य पशु पक्षी घोडा कुत्ता अंक वगैरह के चित्र निकाले जाते थे। इतनी परिवर्तन शालिनी लिपि में अब

भी पुरातन वस्तुओं के चित्रों के चिन्ह मात्र हैं। पश्चात् सुधार होने पर एक आध भाव किंवा विचार बतलाने के लिये दोके तीन चित्र इकट्ठे लिखे जाते थे—जैसे हाथमें अगर लकडी होतो पिता समझना, परन्तु इस सादी पद्धति से चीनी आगे न बढ सके इसलिये संयुक्त चित्र और आवाज के चित्र निकालने का आविष्कार किया, जिस से लिपि के अक्षर एक साथ बढते ही गये। और जैसे जैसे अधिक शब्दों की आवश्यकता हुई वैसे वैसे संयुक्त चित्रों की संख्या बढती ही गई, अबभी नए विचार और नई वस्तु बतलाने के लिये आवश्यकतानुसार और भी चित्र बढा-लिये जाते हैं। साधारणतया इस समय ऐसी योजना है कि नया विचार जतलाने के लिये प्रचलित चित्रों को भिन्न भिन्न प्रकारसे संयुक्त किया जाता है। जैसे मोटर नामक तोप के लिये नवीन शब्द और चित्र न घडकर चीनियोंने उसके स्थापन के प्रकार को मन में रख कर मेंडक और तोप इन दोनोंका संयुक्त चित्र ढूंढ निकाला है।

(१३) एवं चीन के भिन्न भिन्न प्रान्तों की बोली और मनुष्य एक होने पर भी एक दूसरे से नितान्त भिन्न होरहे हैं। इसीतरह उन के रस्मोरिवाज और आचार विचार ऐसे भिन्न विभिन्न हैं कि राज्य के एकभाग के लोगों के स्वभाव और क्रिया दूसरे भाग वालों से बिलकुल भी नहीं मिलतीं, तो भी सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर प्रतीत होगा कि यह बाह्यभेद दीखपडता है। यह बडा भेद केवल छोटी

बातों में ही है। वस्तुतः उसमें वास्तविक भेद नहीं है। बहुत से मुसाफिर एवं अन्यान्य लोगोंने फलाना रिवाज चीनियों का है, कहा है परन्तु वह चीन के एक देश का रिवाज है। जिस तरह भिन्न भिन्न प्रान्तों में शादी की क्रियाएं आडम्बर पूर्ण होती हैं, तो भी एकाध क्रिया की अनुवृत्ति तो सब जगह लगी रहती है। जैसे बिवाह करने पर अपने नाम पंजिका में लिखवाते हैं, यह बात सब प्रान्तों में एकसी ही है। वरकन्या को घुटने टेकने पडते हैं। अपने अपने संयोग में ईश्वर को साक्षी करते हैं। फिर दो प्यालों में शराब भरी जाती है और एक लालरस्सी दोनों प्यालों में रखी जाती है, उसको छूकर वर और कन्या एक दूसरे से निमकहलाल रहने की शपथ करते हैं। चीन में लाल रंग आनन्द की निशानी के तौर पर और सफेदरंग शोक की निशानी समझा जाता है। एक चीनी अमलदार ने विदेशी पद्धति से भोजन का प्रबन्ध किया था, तब उसने मेज पोंछने के रूमाल पर शुभ चिन्ह समझकर लाल कागज चिपका दिया था ऐसा करने से गोरों का अनिष्ट असर उस भोजन में न होजावे यह हेतुथा।

(१४) हमपूर्व लिख चुके हैं कि चीनी नौकाओं द्वारा यात्रा करते हैं चीन में यांग-सी-और हो-अंग हो-ये पृथिवी की बडी नदियां हैं हीं, परन्तु छोटी २ नादियों का तो मानो जालसा बिछा हुवा है। दक्षिण के प्रान्तों में तो इन नदियों से ही माल का आवागमन होता है। यांग-सी-नदी में बडे बड़े जहाज भी

चल सकते हैं। वह पश्चिम से पूर्व को चीरती हुई जाती है। 'हो अँग हो' अथवा पीलीनदी उत्तर में एक खांचे को छोड अक्षांश के समान्तर में बहती है एवं उस को 'चीन का शोक' कहते हैं। क्यों कि उसने चीन के जान माल की बहुत हानि की है। उसका प्रवाह इतने जोर से चलता है कि उस में साधारण-तया नौकाएं नहीं चला सकते, एवं नौकाओं में बैठकर उसके विरुद्ध जाना नितान्त असंभव है। उसकी मट्टी पीली है और वह एकदम समुद्र की ही तरफ बहती हुई चली जारही है। इसी लिए उसे पीली नदी कहते हैं। उसका पानी भी पीला दीखता है। चीन में जब कोई कार्य न करना हो तो अगस्त्य ऋषि के वादे के माफक 'पीलीनदी का पानी जब सफेदहोगा' तब ऐसा कहते हैं इस नदी के जल को नियमित रूप से बहाने के लिए बडे बडे बन्द बांधे गए हैं। परन्तु जब कभी ज्यादह पानी आता है तब बन्दोंसे ही टकराता है। उस से जानमाल की ज्यादह हानि होती है, और यह नदी एक सी एक दिशा में कभी बहती भी नहीं इस्वी सन् १८५१ तक इस नदी का मुख शाटुंग भूशिर के दक्षिण की तरफ था, वह ३४ अक्षांश उत्तर में आई हुई थी। फिर एका एक ईशान कोने में बहने लगी और उसका मुख शाटुंग भूशिर के उत्तर ३८ अक्षांश आगे बढ गया।

(१५) नदियों के द्वारा ही इस देश में माल का आवागमन होने के कारण इन नदियों को आपस में मिलाने के वास्ते नहरनुमा

कांस खोदे गये हैं। परन्तु उस में से एक भी नहर कहलाने लायक नहीं है! चीनमें एक ही बडी नहर है, चीनालोग उस को व्यापार की नदी कहते हैं। इस कृत्रिम नदी के द्वाराही ठेठ दक्षिण से लेकर पेकिन तक चावल ले जाये जाते हैं। इस राक्षसी नहर की योजना तेरहवीं सदीमें कुब्लेई खान नामक बादशाह के समय में हुई थी, एवं उसी के हाथ से वह पूरी हुई थी वह नहर लगभग ६५० माइल लंबी है, एवं पेकिन और कन्तान के बीच का व्यापार बिना कष्ट के इस के द्वारा संपादित होता है। नहर खाता के अद्भुत पराक्रम के रूप में यह भी चीनकी दीवार के माफक एक अजायब चीज है। यह दीवार भी आजसे कोई २००० वर्ष पहिले की बांधी हुई है। पृथ्वीतल के मनुष्यों के हाथ से सब से अन्तिम अपूर्व कार्य यही संपन्न हुवा है ऐसा मानाजाता है। एवं उस अनन्त दीवार के अन्त का पता नहीं लगता ऐसा जान पडता है। परन्तु आजकल की शोध से यह पता लगा है कि यह भीत कोई १९०० माइल लंबी हैं। पेकिन के एक समुद्र किनारे से उसका आरंभ होकर तिब्बत के उत्तरीय सरहद तक चली गई है। लगभग २२ पाद ऊंची और २० पाद चौडी है! सौ सौ गज के अन्तर पर ४० पाद ऊंचे बुर्जबने हैं। वह ईंटोंसे ही चुनी गई है क्योंकि बहुतसी जगह ईंटेंलगी हुई दीख पडती हैं। इसके अलावा और बहुतसी भीतों के खण्डहर आजकल की शोध में मिले हैं! इन भीतों के बनाने का उद्देश एकमात्र खूनी तातार लोगों को रोकने का ही था।

(१६) संपूर्ण चीन महाराज्य के चारों कोनों पर जहां भिन्न भिन्न प्रकार के मनुष्य और जलवायु हैं, वहां चीनियों को मुसाफिरी करने की व्यापारिक और किसी प्रकारकी मनाई नहीं ! एवं किसी भी सामान्य नागरिक को परिचय पत्र रखने की भी अवश्यकता नहीं पडती ! चीन की भोजन शालाओं में थोडे समय के लिये जो मुसाफिर रहते हैं उनको उनकी जन्मभूमि कहां क्यों आये हो कबतक रहोगे; इत्यादि प्रश्न पूंछकर कभी भी दुःखित नहीं किया जाता ऐसे मुसाफिर अपने खर्च के पैसे भलमनसाइत से दे देवे, और किसी को किसी तरह की तकलीफ न देवे तब उनका कोई नाम भी नहीं पूंछता अकसर चीनी लोग प्रवास प्रिय नहीं होते, उन को अपने घरों पर बडा प्रेम होता है, पृथ्वी के अनेक प्रदेशों में घूमने से होने वाले दुःखों से वे बहुत घबडाते हैं ! मल्लाह, गाडीवान् और भोजन शाला के मेनेजर उनसे बहुतसे पैसे लेलेते हैं किसी किसी समय कोइ भूला भटका मुसाफिर बद-माशों की भोजनशालामें उतर पडता है तो उसे तकलीफ उठानी पडती है। इतना होनेपर वहां के बहुत से लोगोंने प्राकृतिक सौंदर्य एवं इतिहास प्रसिद्ध स्थान देखने के लिये अनेक यात्रायें की हैं। हां कार्यवश अधिकारिओं को एक जगह से दूसरी जगह जानाही पडता है।

(१७) हर एक प्रजा पृथ्वीके भिन्न भिन्न प्रदेशों से आकर उन उन प्रदेशों में बसी है। ऐसे मानने वालों में चीन के प्राचीन

इतिहास संशोधकों का समावेश करनाही चाहिये । भाषा में आचार विचार में कुछ कुछ सादृष्य दीख पड़ने से कितने ही विद्वान ऐसा अनुमान करते हैं कि बेबिलेनिया से आकर चीनी यहां बसे हैं, परन्तु चीन के प्राचीन विश्वसनीय लेखों से यह बात बिलकुल मालूम नहीं होती ।

(१८) चीन का सुवर्णमय युग दन्त कथा के अनुसार ईसा से २००० वर्ष पहिले था, परन्तु चीन के प्राचीन सुधार की निष्पक्षपात से शोधकरनी होतो ईसा के जन्म से पहिले १००० वर्ष से अधिक जाने की आवश्यकता नहीं । उस समय भी चीन की सुधारणा उन्नति के चरमाशिखर पर पहुंची हुई थी इस का भी प्रमाण उपस्थित है । अत एव यह देश सब से प्राचीन है इस में तो कोई शंका ही नहीं ।

(१९) उस जमाने में चीन मध्यराज्य के नाम से प्रसिद्ध था, मानो आजकल चीनाई महाराज्य के वह बीच में एक युग बीत गया हो ऐसा लगता है विषुववृत्त से उत्तर ३० और ४० इन दो अक्षांशों के बीच में आया हुवा था, और उस का आकार चौखूंटां ◇ था । उसका उपरी अग्रभाग पेकिन के पास था, और नीचला अग्रभाग शेन—सी—प्रान्त के सियान—क्यू के ऊपर था । इस्वीसन् १९०० में बाक्सर के लोगोंने चीन में बलवा किया था, तब अपनी सही सलामती के लिये राजमाताने भाग के इसी सीयान—क्यू का आश्रय लिया

था, निरंकुश सत्ता से शाहनशाह राज्य करे यह पुरानी पद्धति थोडे दिनों से निकाल दी गई है, और उसके स्थान पर समय पडने पर राज्यको मदद मिले इस शर्तपर जमीन अथवा प्रान्त का मालिक अथवा अमीर बनाने की (फ्युडलसिस्टम) पद्धति दाखिल हो गईथी, जिस से सम्पूर्ण साम्राज्य के संख्याबंध छोटे बडे महत्व और विना महत्त्व के अनेक भाग हो गये थे, उन हरएक टुकडों में उनका ही अमीन शासन करता था। जो शाहनशाह के समक्ष निमकहलाल रहने की शपथ लेता था। पर ज्यों ज्यों समय गुजरता गया त्यों त्यों छोटे छोटे राज्यों के खाण्डिया राजा और अमीर तथा शाहनशाह का संबन्ध आपस में ऐसा होता गया, जैसा कि पुराने ग्रीस के छोटे बडे राज्यों का हो गया था। ग्रीस में एथेन्स और स्पार्टा के वीच जो युद्ध होता था, उनकी राजधानी एक दूसरेसे ७५ माइल के फासले पर थी। थ्युसिडाइडीझ नामक इतिहासकार कहता है कि इन युद्धों में दुनिया का आधेसे अधिक भाग लगा हुआ था। प्राचीन चीन के छोटे छोटे राज्यों में झगडा करानेवाला ऐसा ही युद्ध स्पर्धा और ईर्ष्या थी, इसकी विशेषतया प्रतीति इस लिये भी होती है कि ये राज्य अन्दर २ भयंकर खूंरेजी करते थे। इन युद्धोंमें हम रथ और घोडे पर चढने की चतुराई की बात बांचते हैं। शस्त्रास्त्रों के पराक्रम और व्यक्ति विशेष के वीरता की कहानी भी बांचने में आती है। इसी के साथ फौजों के एक साथ दूर तक कूच करनेकी और रात बिरात छापा डालने

की बातें भी हम बांचते हैं । उस समय चीन के लश्कर में यह रिवाज था कि रातको अगर कहीं छापा डालना होतो आपस में बातचीत न कर सकें इस लिये उन के मुंह पर लकडे की लगाम लगा देते थे । इसी प्रकार मुल्कों के खालसा करने की, देशों के जीतने की विष के प्रयोगोंसे किंवा जल्लादों की तलवारोंसे आपस में हिंसा करनेवाले राजाओं में एक दूसरे के प्राण अकाल में लेने की बातें नजर आती हैं ।

(२०) चीन के इन क्षुद्र राज्यों की सेनाएं जब युद्ध में जातीं, तब वे एक पंक्ति में खडी होतीं, दाहिनी तरफ तीर कमठे वाले, और बायें भालेवाले खडे रहा करते थे । इन दोनों के बीच में रथ उन में तीन या चार घोडे जोडे जाते थे। युद्ध सामग्री में ढाल तलवार खंजर पांचसे छ पाद लंबी १० वा १५ सेर की लोहे की सांगवाली डांग, लोहे की मोटी कील कडियां घण्ट झांझ और असंख्य ध्वजा पताकाएं होतीथीं । कण्डों को अलाव में डालकर सुलगाते, जिससे प्रकाश में शत्रु के आने की खबर लग जाती थी, फिर गांव के लोगों को युद्ध के लिये निमन्त्रण देते । सेना में किसी को बचाने का तो रिवाज ही नहीं था हां कह के कान जरूर काटलेते थे । जब सुलह तथा बातचीत करने की आवश्यकता होती तब ' सन्धि पताका ' का उपयोग करते एवं सन्धि शर्तों की बातचीत चलतीं, उस ध्वजा में केवल ' लडाई बंद ' ये दो शब्द लिखे रहते थे ।

(२१) जिस भूमिपर जलाई हुई अग्नि की हम बातें कह आए हैं, वे जरूरत के समय अमीर उमरावों के बुलाने के काम में आती थी एक राजाने इसीसे अपना तख्त और जान खोई थी। उसके पास एक खूबसूरत औरत थी उसके सबब वह राज्य के कार्यों में बिलकुल ध्यान नहीं देताथा। वह सदा उदासीनही रहती थी कभी भी हंसते नहीं देखी गई रेशम के फाडनेसे जो अवाज आती है उससे वह खुश होती थी, उस की इस तरंगको पूरा करने के लिये थान के थान फडवाये जाते थे, राजाने यह विज्ञापन दिया था कि जो इस को हंसगोवा उस को सवामन सुवर्ण दिया जावेगा, इसपर मुख्य प्रधानने यह सलाह दीकि 'मानो राजा का जीवन साक्षात् संकट में है' इस लिये अग्नि सुलगाई जावे। जिससे अपने अधिकार के अमीर उमराव सब सेना लेकर आ पहुंचे, यह युक्ति सफल हुई, क्योंकि जो घबराहट और शीघ्रता उस समय हुई, उस को देखकर सदा उदासीन रहने वाली वह स्त्री खडखड हंसने लगी। परंतु पश्चात् जंगली लुटारूओं के हमले जो उस शहरपर पडने लगे, तब प्रथम अपमानित अमीर उमरावों ने पुनः अग्नि के जलाए जाने पर कुछभी उत्तर नहीं दिया, इस समय तो उनकी खास जरुरतथी जिसके परिणाम में राजा मारडाला गया, और वह स्त्री फांसी खाकर मरगई।

(२२) परंतु जिससमय ये अमीर उमराव एक दूसरे के गलों के काटने के काम में न लगे थे, उस समय बहुत सुखी थे, मही

और प्लास्टर से छाये हुये छज्जों के घरों में रहते थे, घर के नीचे के भाग साफ रक्खे जाते थे, और दरी की जगहपर जमीनपर घास बिछाते थे, चीनियों को पहिलेसेही चटाइयोंपर बैठने की आदत होनेसे इन्होंने कुर्सी और मेज बहुत देरसे दाखिल किये। वे टापटीप के भोजन के साथ तेज शराब पीते रेशमी कपडे पहिनते धार्मिक क्रियायों के करते समय गीत गाये जाते एवंनाच रंग तमाशेभी होते। खेती, शिकार और मछली पकडना पुरुषोंका काम, और स्त्रियों का कातना बुनना आदि सांचोंसे कांसे के वर्तन तयार करने वाले लोग उस देशमें थे, एवं सोनार और लुहारभी थे, नीलम जैसे पत्थरों के काटनेका काम करने वाले तथा आभूषणों को चमकाने वाले लोगभी उस देशमें थे। लिखनेकी लिपि की उन्नति खूब हुई थी, और इस समय जिस स्थितिमें है उस समयभी लगभग यही स्थिति थी, तथापि लिखने के अक्षरों की मराड में फरक पडगया है। जिस तरह पुरानी अंग्रजी और अबकी अंग्रेजी के अक्षरों में भेदपड़गया है। व्याकरण का वाक्य विचार भी वैसा का वैसा ही है, और आज से ३००० वर्ष पहिले जो कविताएं थीं, वे सब मानों अज कलकी बोली में उतर आईहैं। उस का अर्थ भी तत्काल लोग समझ लेते हैं। अर्वाचीन आवश्यकताओं के माफिक उसमें फेरफार भी बहुत हुआ है। ईसा से ४९० वर्ष पहिले मेरेथॉन का युद्ध हुवा था। उस समय सैनिकों में जोश भरने के लिये 'मिल्टाइडिए' ने कैसी भाषा

का प्रयोग किया होगा, वह जिस तरह हम निश्चित नहीं कह सकते, उसीतरह चीन का तत्त्ववेत्ता कान्फ्युशियस (ईसासे ५५५ से ४७९ तक) किस प्रकार की चीनी भाषा बोलता था, यह हम भी नहीं कह सकते। प्राचीन चीन में जो पुस्तकें पढने के काम में आतीथीं, वह पतले लकड़ियों के टुकडों के ऊपर लिखी जातीथीं, लकडी और बांस की कलम से उस पर लिखा जाताथा उस कलम के अग्रभाग का कूचा बनाते, जिस से वह पतले रंग में डुबोकर पट्टी पर लिख सकते थे। थोडे दिन पहले यह कहा जाताथा, कि चीनी छुरी से बांस आदि पर अक्षर कुतर-ते थे, पर अब ज्ञात हुवा है कि खराब अक्षरों के छीलने के काम में लातेथे।

(२३) इतिहास के विश्वसनीय युग से भी पहिले चीनियों को आयुर्वेद शास्त्र का पूरा ज्ञानथा, पर जो प्रमाण हमें मिले हैं उन से यह ज्ञात होता है कि जिस समय का हम वर्णन करने लगे हैं उस समय इस शास्त्र की व्यवस्थित पद्धति आरंभ हुई होगी। सामान्य प्रश्न नामका एक ग्रन्थ उपलब्धहुआ है। वह प्राचीन समय के किसी राजा के नाम से लिखा गया है और राजा अपने अमात्य से अनेक रोगों संबंधी चिकित्सा और दीजानेवाली औषधिओं का प्रश्न करता है। यह ग्रन्थपुराना होनेपर भी किसी मूल्य का नहीं एवं ईसा से भी पहिलेका है, यह कहा नहीं जा सकता।

(२४) चीन के इस जमाने के लोग प्रत्येकरोग का वर्गीकरण ऋतुओं के अनुसार चार विभाग में किया करते थे। सिर दुःखना या आधीशीशी ये वसन्त के, इसी प्रकार सब तरह के बुखार भी वसन्त ऋतु संबंधी गिने जाते थे। त्वचा के सब रोग ग्रीष्म ऋतु के कफतथा श्लेष्म शरद् ऋतु के। इन चारों में से किसी एक को समझ उस की चिकित्सा की जाती थी। वनस्पति, वृक्ष, प्राणी, खनिज, और अन्न इन पांचों में से औषधिओंका निश्चय करके दीजाती थी और इन पांच प्रकार के औषधियों में से हर एक औषधि का स्वाद पांचही प्रकार का होता था, और प्रत्येक में कोई न कोई विशेष गुण होता था। हड्डी मजबूत करने की औषधि कबज करने वाली होती थी। मांसपिण्ड मजबूत करने के लिये खट्टी, रक्तशोधन के लिए खारी, एवं सामान्य शक्ति बढ़ाने के लिये कड़वी, तथा मांस बढ़ाने को मीठी औषधि का प्रयोग करते थे। नाड़ी परीक्षा करनेका भी बड़ा रिवाज था। कम से कम २४ तरह की नाड़ियां हैं एवं उस समय के वैद्य नाड़ी के अच्छे परीक्षक होतेथे। विशेष प्रख्यात वैद्योंनें तो १२ प्रकार की नाड़ियां निश्चित कीं थीं। 'सामान्यप्रश्न' नामक ग्रन्थ में एक वाक्य शरीर के रक्ताभिसरण के विषय में है। **सबरक्त हृदय के ही आधीन रहता है** इस से ज्यादह चीनियों ने इस विषय में खोज की हो ऐसा नहीं मालूम होता, परन्तु उनके कीर्तिकाल की इस बात का विशेष विवेचन आगे चलकर कियाजाएगा।

(२५) इस्वी सन् के एक हजार वर्ष पहिले जब चीन में अमीर उमरावों से लश्कर लेकर राज्य करने की पद्धति थी, उसी समय चीनियों ने अपने कुटुंब का नाम रखना शुरू किया था। उस से पहिले चीनी अपनी जाति या समूह के नाम से पहिचाने जाते थे परन्तु एक जाति या समूह के मनुष्य अपने अन्दर जाति या समूह के नाम नहीं लाते थे। बल्कि अपने ही नाम से पहिचाने जातेथे जोकि बचपन में ही उन के माता पिता ने नाम रक्खे थे फिर धीरे धीरे अपने नाम के साथ कुलनाम लगाने लगे। हिन्दुओं की तरह कुटुंब जिसजगह पर रहता है वहां के नाम पर से कुल-नाम रखे जाने लगे। ये कुलनाम भी कुटुम्ब के किसी मशहूर पूर्वज, अधिकारी या ओहदेदार के उपनाम से रखे जाते थे। जिस प्रकार हिन्दुस्थान अथवा इंग्लेण्ड में गुर्जर, सयाजी, फेरिंग, से गुजरात सयाजीपुरा वा फेरिंग्टन किंवा गिस्लिग के कुटुम्ब से गिस्लिंगहाम नाम दिएगए हैं ऐसे नाम चीन में सम्भव भी नहीं हैं। यह नामकरण पद्धति अंग्रेजी नामों में रखी जाए तो उदाहरणार्थ एक बालक का नाम मा-बापने वेलकम रखा हो एवं उसका जन्म केंब्रिज में हुआ हो तो उन के कुलनाम के साथ का नाम केंब्रिज वेल्कम हुआ जिस में केंब्रिज कुलनाम हुआ; परन्तु चीनी अपना कुलनाम अपने नामके पहिले लिखते हैं जैसे लिहंग चंग। परन्तु इतना याद रखना चाहिए कि मांचु लोगों में कुलनाम होते ही नहीं अर्थात् अपनी जाति के साथ

अपने समूह का नाम लिखते ही नहीं, परन्तु अपने नाम से ही अपने को प्रकट करते हैं।

(२६) स्थलों को छोड़ अगर चीन के कुलनामों का विचार करें जैसा कि भारत में होता है तो ये अनेक कारणों से उत्पन्न होते हैं। चीन में प्राकृतिक पदार्थों से नदी पत्थर-गुफा इत्यादिक नामों से भी कुलनाम पड़जाते हैं। पशु जैसे-रीछ बैल सांप एवं शरीर के निशानों से जैसे लंबी आंखवाला, बौना गंजा इत्यादि, इसी तरह लाल काली आदि रंग से भी कुलनाम पड़ा करते हैं। कइओं के तो पशु पक्षियों के नाम से भी कुलनाम पड़जाते हैं। जैसे शेर गीदड कितने ही कुलनाम गुण से पडते हैं जैसे धनवान् पूर्व, चतुर, आशा, सरदार, सखामूला, लक्ष्मी, इत्यादि। ईसाके जन्म से पांच सौ वर्ष पहिले कुलनाम लिखने की पद्धति चीन में प्रविष्ट हो गई थी। यूरोप में तो ईसा के बाद १२०० वर्षतक भी कुलनाम लिखने का रिवाजही नहीं था। बल्कि उस समय के श्रीमन्त सुसभ्य धनाढय लोग ही नाम के साथ कुलनाम लिखते थे। सौ कुलनाम इस नाम की लघुपुस्तक चीन में प्रचलित भी है, वह सब विद्यार्थियों को पढनी पडती है। इस में केवल ४०० कुलनाम ही दिए गए हैं, एवं वे सामान्यतया काममें भी बहुत आते हैं।

(२७) ईसा के जन्म से २२० वर्ष पहिले चीन की राज्य पद्धति बदली गई, और अमीर उमरावों से फौज लेकर राज्य

करने की पद्धति बन्द की गई। धीमे धीमे एक आगे बढ़ते हुऐ लोभी राज्यने दूसरे छोटेछोटे राज्य को हडपना शुरु किया, परिणाम में उस राज्य के हाथ में सम्पूर्ण चीन देश आगया एवं चीन का राज्य महान्‌राज्य कहलाने लगा तब से आजतक वह इसी पद्धति पर चला आरहा है। चीन यद्यपि महान्‌राज्य कहलाता है तो भी वह गत २००० वर्षों में एक कुटुम्ब से दूसरे कुटुम्ब के पास जाता ही रहा है।

(२८) चीन में एक असाधारण शक्तिसम्पन्न मनुष्य पैदा हुआ था। उसने क्रमशः अपने प्रतिस्पर्द्धियों को हराकर सदा-विजय ही सम्पादन किया था। आखिर वह सम्पूर्ण संयुक्त चीन के सिंहासन पर आसीन हुआ। दुनिया के इतिहास में अगर इस तरह का किसीने कार्य किया हो ता हिन्दुसम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य और दूसरा फ्रान्स का बादशाह नेपोलियन बोनापार्ट, यह दोनों थे। नेपोलियन ने ही सब से पहिले स्वयं अपने आप को पहला शाहन्शाह कहलवाया था। और उस के बाद ही सदा का भय दूर करने के लिये उत्तरीय शत्रुओं पर तीन लाख फौजभिजवाई थी। वह शत्रु कौन थे यह भी अब निश्चय होचुका है कि वे हूण थे। उसी शहनशाह ने अपना नौसैन्य गुप्तरीति से किनोर किनारे भिजवाकर आस पास के ही द्वीपों का निरीक्षण किया था। कई लोगों का यह ख्याल है कि वे द्वीप अब जापान ही हैं। चीन की बडी दीवार भी उसी ही शाहनशाह ने बनवाई थी।

कैदियों से मुफ्त में मजदूरी करवा कर ही इस का बड़ा अंश बनवाया था। देश द्रोहियों को सजाएं दे दे कर यही काम करवाया जाता था। उस शाहनशाहने रुपये पैसे आदि भी साफ गोल और खूबसूरत ढलवाये थे। जिस से व्यापार में कौडियों का तो बहिष्कार ही होगया था। सब से महत्त्व की तो यह बात है कि उत्तेजना देकर साहित्य की खूब वृद्धि करवाई थी। परन्तु इस इष्ट आशयसाधन करने के लिये जिन उपायों का उपयोग किया था, वे अवश्य कनिष्ट थे क्योंकि अपने खुशामदी दर्बारियों की खुशामद में फंसकर उसने यह निश्चय किया कि उस के राज्य से ही नवीन साहित्य का प्रारंभ होना चाहिये। इस लिये सब प्राचीन एवं प्रचलित पुस्तकों का नाश करा देना चाहिये। एवं तीन प्रकार की ही पुस्तकें रखनी चाहिएं। १–जिन पुस्तकों से खेती करने बोने काटने-की-एवं देश को अन्न पहुंचाने का ज्ञान मिलसके ऐसी पुस्तकें-२ आयुर्वेदके पुस्तक ३ प्राकृतिक नियम के अनुसार जो वस्तु जिस समय करनी चाहिये वह वस्तु उसी समय पैदाकरनी एवं जो न करने की हो वह न करनी ऐसे भविष्य का परिचय देने-वाली पुस्तकें रखनी चाहियें। इस नियम के अनुसार बहुत से ग्रन्थ नष्ट करदिये गये। जिन विद्वानों ने यह समझा कि यह पवन कुछ दिनों में बन्द होगा, तब पुस्तकें निकाल लेंगे, अतः उन्होंने कितने ही ग्रन्थ नहीं बतलाये उन को कत्लकिया गया एवं

उन की पुस्तकों की भयंकर होली सुलगाई गई। उपर्युक्त ३ प्रकार के सिवाय कोई पुस्तक बचगई होतो आश्चर्य की ही बात है।

(२९) ईसा के जन्मसे २१० वर्ष पहिले यह चीन का शाहनशाह मरगया। तब उस की गद्दी पर उस का सब से छोटा लडका 'दूसरा शाहनशाह' के नाम से बैठा। उसने तुरन्त तख्त नशीन होते ही अपने पिता की उत्तरक्रिया करनी शुरूकरदी, उसका वर्णन १०० वर्ष पश्चात् चीन के आदि इतिहासकार ने इस प्रकार किया है।

(३०) मृत्युके पश्चात् नववें दिन शाहनशाह के शव को माउंटलि में गाड दिया। मृतशाहनशाहने ही अपने समय में इस पर्वत को खुदवा कर खास तैयार करवाया था ताकि वह इसी काम में आए फिर जब उसने अपने राज्य को मजबूत बनाया, तब सात लाख सैनिक भेजकर उस पर्वत में बोरिंग लगाकर जब तक पानी ननिकले तब तक खोदने की आज्ञा दी एवं वहां की नींव मज-बूत बनवाई थी, उसी जगह उस के कबर का पत्थर रखा गया था। फिर राजमहलों से तथा अमरि उमरावों के घरों से नई वस्तुएं तथा कीमती जवाहिरात इकट्ठे कर उस कबर में रख वाये गये थे। कबर के पास तीर कमान चढ़ाकर इस तरह ` गये कि अगर कोई घुसने की कोशिश करे तो उसे स्वयंछूटकर तीर अवश्य लग जावे। इस कबर के छप्पर में नक्षत्र और तारों के चित्र निकाले गये थे। जमीन पर

भूगोल के विभाग चित्रित किये थे। (वॉलरस) दरियाई घोड़े की चर्बी से मोमबत्ती बनाई गई थी, जिस से कि देरतक उजियाला कर सकें। मृत शाहनशाह के पश्चात् जो शाहनशाह गद्दी पर आया था उसने यह कहा कि-मेरे पिता के पास जो नायकाएं थीं और जिन्हें कोई पुत्र नहीं वे सब मरके दूसरी दुनिया में उस के ही पास जावें। इस प्रकार जबर्दस्ती मारी जाने वाली स्त्रियों की संख्या बहुत थी पहले राज गाड़ा गया तब किसीने कहा कि जिन कारीगरों ने यह यंत्र बनाया है तथा बड़ाखजाना गुप्तरीति से गाड़ा है जिस की कि वे कीमत भी जानते हैं अगर वे जीते रहे तो यह बात प्रकट करदेंगे इस लिये क्रिया के पश्चात् जब कबर के पास का रस्ता बन्द किया गया, तब वे कारीगर और मजदूर भी जीते न बचसके एवं मट्टी से भर ऊपर वृक्ष आदि लगवादिये। जहांतहां घास भी लगवाई, जिस से वह स्थान 'माउन्टलि' पर्वत के माफक दीखने लगा।

(३१) चीन की गद्दीपर जो दूसरा शाहंशाह आया, उसका कार्य रिचर्ड क्रामवेल के कार्य भाग से मिलता हुवा है। भेद इतना ही है कि यह थोडे दिनों बाद माथे पर अपयश ले मार डाला गया। फिर चीन की गद्दीपर ऐसे कार्य कर्ता आए, उन्होंने अपनी शक्तिका प्रभाव उस समय के सुधारों पर मजबूती से बैठाया था। इतिहास पर भी उनका प्रभाव दीख पडता है। एक साधारण किसान अपने चारित्रबल से तीन वर्ष तक परिश्रम कर

ईसासे २०६ वर्ष पहले चीन के राजसिंहासन पर आसीन होता देख पडता है। एवं २०० वर्ष तक उसी के घराने के हाथ में राज्य के सूत्र रहते हैं। तदनन्तर गद्दी के छीनने के प्रयत्न कुछ कालतक होते रहे, एवं यह भय भी उत्पन्न होगया था कि कभी हॅन वंशसे गादी का उत्तराधिकार न जाता रहे और कभी राज्य का पाया न हिल जावे। अब भी चीन के उत्तर प्रान्तों में हॅन का वंशज ही विशेष कुल व बडे खानदान का सूचक माना जाता है।

(३२) हॅन वंश जबतक चीन में राज्य करता रहा तब तक अर्थात् ४०० वर्षतक चीन में शान्ति ही रही ऐसा नहीं दीखता उत्तर से तातारी लोगों के दल के दल चले आतेथे, और उन के साथ प्रायः युद्ध ठना रहताथा। दीवार के होते हुए भी यह लोग हमला करने से नहीं रुके। इस के अतिरिक्त तुर्कों के पूर्वज हूणों के साथ भी इनको लडाई करनी पडती थी हॅन वंश के पूर्वजों को इनके पूर्वजों ने ही एक समय उनके ही एक शहर में घेर लिया था तब वह युक्ति से ही इनके पंजे से निकल सके थे। इसीतरह कोरिया वालों के साथ भी लडाई करनी पडती थी। चीन को कोरिया के विजय के उपरान्तहीं मालूम पडा कि जापान भी कोई देश है, जो एक कोने पर छुपा पडा है। एवं सुधार में भी पीछे ही है। ५७ इस्वीतक उसका चीन से कोई संबन्ध न था। इसी वर्ष चीन से एक एलची भेजागया।

जो लोग ऐसा समझते हैं, कि चीनी कूपमण्डूक हैं, एवं युद्ध करने में नालायक हैं, वे लोग नहीं जानते कि ईसा के दोसौ वर्ष पहिले चीनी विजयी हुए थे, एवं मध्य एशिया में घुसकर उन्होंने अपने राज्य में पामीर और खोकन्द जोडदिये थे। आज कल जिसे हम यूनान कहते हैं, उस में बसने वाली जंगली जातियां चीनिओं ने अपने वश में की थीं, और उस समय से आरंभकर के चीन में राज्य का विस्तार होने लगा ऐसा कहा जासकता है।

(३३) चीन के राज्य और राजमहल में हिजड़ कंचुकी अपने खटपटी चंचल स्वभाव से हमेशा राजा को दुःखित किया करते थे, एवं बीच में राज्य के सूत्र २० वर्षतक 'ठ्हेग म्हेग' नामक आदमी के हाथ में रहे थे; जिसने कि बलात्कार से सिंहासन पर अपना अधिकार जमा लिया था। उसने विषप्रयोग तथा दंगे से गद्दी प्राप्तकी थी, लेकिन लडाई में वह हारा और उस के सैनिकों ने बलवा किया आखिर वह राज्य तथा जान खो बैठा। परन्तु हॅन वंश के राजाओं की यह बातें मशहूर हैं कि उस समय साहित्य की खूब वृद्धि हुई और ग्रन्थकर्ताओं को उत्तेजन मिला। जान हथेली पर रखकर भी लोगोंने जो कान्फ्युशियस के आदेश छिपाकर रखे थे, सो उन्होंने प्रसिद्ध किए, और पुस्तकें छपवाने के लिये सभा सोसाइटियां बनवाईं। पहिले शाहनशाह के समय में जो पुस्तकोंकानाश हुवाथा, उस को पूरा करने के लिये भगीरथ प्रयत्न किया गया। कान्फ्युशियस के आदेश

जिस तरह पुस्तक में लिखे हुए थे उसी पर टीका टिप्पणी कर के विद्वान् लोग समझाने लगे। यद्यपि १२ वीं सदी में उनको अस्वीकार किया गया था तो भी इतनी बात तो अवश्य है कि कान्फ्युशियस के आदेशों को समझाने के लिये जितनाप्रयत्न उस समय किया गया, उस का जबरदस्त असर चीनिओं के मनपर पड़ा। यह रोग इतना बढ़गया कि लोग नई नई पुस्तकें बनाकर प्राचीनों के नाम पर प्रचार करने लगे।

(३४) हॅन वंश के कार्य काल में ४०० वर्ष तक चीन की संस्कृति और प्रगति धीरे २ पर वास्तव में आगे बढ़ी थी। इस समय स्याही और कागज की खोज कीगई, और उंट के बाल के ब्रुश बनाए गए। इस से लिखने तथा चित्र की कला को उत्तेजन मिला। पर आजतक चित्रकला तो आरम्भिक स्थिति मेंही है। इसी वंश में मालिक के मरने पर उसके साथ गुलामों को गाडने का रिवाज नेस्त नाबूद हुवा। मरने के बाद २७ मासतक शोक पालने का रिवाज घटा कर २७ दिन का रक्खा गया। परन्तु अब फिर वही ३ वर्ष तक शोक पाला जाता है। साहित्यज्ञों को पदवियां देने का रिवाजभी इसी वंशने डाला है। एवं कान्फयुशियस के वंश के पुरुषों को हमेशा के वास्ते एक बहुमान सूचक इल्काब दिया गया जो अबतकभी चलता है। कान्फ्युशियस कुटुम्ब का नायक डयुक इस पदसे विभूषित कर, राजमहल का एक भाग उसे आवास के

लिये दे, उनका मान एक प्रान्त के अमलदार के माफिक किया जाता है ।

(३५) इस सयय मध्य एशिया में बैक्ट्रिया का राज्य था, वह प्राचीन ग्रीस का प्रान्त गिना जाता था । चीन ने जो विजय मध्य एशिया में प्राप्त की उस के परिणाम में उन को यह प्रान्त हाथ आया ।इससे चीनी बहुतसी बातें सीखे, और अब वह सब की ही है ऐसा माना जाता है । उन्हों ने द्राक्ष की आयात अपने देश में की, उससे शराब बनाकर सैकडों वर्ष तक अपने वर्ताव में ली । अब दो तीन सौ वर्ष से यह शराब बंद हुई है । पहले चीनी, समय का, माप छाया यंत्र से करते थे पर अब चीनीयोंने जल घटिका यंत्र तैयार किया है एवं उस के नमूने अभीतक उस देश में हैं। वह चलतेभी ठीक हैं । उस के आधार से वे बारह बारह घंटों के विभाग कर के दिन रात के २४ घंटों का हिसाब निकाल लेते हैं । पंचांग भी नये ढब से बनाया है । संगीत शास्त्र भी ग्रीस से मिलता हुवा है । चीनी संगीत के लय पाश्चात्य देशों से मिलने के कारण उसका कुछ पाश्चात्य लोगों पर असर नहीं होता । लेकिन कान्फ्युशियस तो इतना कह गया है कि अमुक करुण राग सुनने से उस के मन पर ऐसी असर हुई थी कि तीन मास तक उस को मांस का भोजन भी अच्छा न लगा था ।

द्वितीय प्रकरण

नियम और राज्य प्रबंध

(३६) चीन के प्राचीन इतिहास से ज्ञात होता है कि पहले वस्तुवों की आपस में (विनिमय) अदल बदल हुवा करती थी। तत्पश्चात् कौडी, रेशमी एवं सूती कपडों के छपे हुवे टुकडे तथा हरिण चर्म के टुकडे पैसे के स्थानपर काम में आते थे फिर तांबे के गोल पैसे फिर छेदवाले पैसे इसतरह तांबे के टुकडे पर सिक्का लगाने का रिवाज दाखिल हुवा । सिक्कों के परीक्षक इस को फेक कहतेथे । तथा चीनी इसी को 'नाइव्ज' और 'ट्राउ-झर्स' भी कहते थे । कुछ दिन बीच में सोनामढ़े हुवे सिक्के भी चले, जो देखने में बहुत सुन्दर होते थे । नवमी शताब्दी में कागज के आठ आनेतक के नोट चलते थे, और हुण्डी लिखने का रिवाज भी शुरु होगया था ।

(३७) चीनियों ने लंबाई, गहराई, आदि नापने तथा तोलने की सुलभ पद्धति का आविष्कार किया है । बाजरे के दश कण का १ तसु १० तसु का १ पाद (फुट) होता है । एवं १० पाद का १ चंग होता है । इस तरह सब बातों में इन्होंने दशांश की पद्धति ही ली है । किन्तु १६ छटांक का १ सेर यही एक अपवाद है । एक सेर समझने के लिये इन के

यहां कुदाल का चित्र होता है। इसका १९ वां हिस्सा अंग्रेजी छटांक से ज्यादह है। ५० रुपये भार बाजरी के दाने हो तो (पाइन्ट) सवासेर अमुक होतो (क्वार्ट) अढ़ाई सेर, सवासेर लेकिन इस से बड़ा गोल मात्र हुवा, तब सरकारने पाद, सेर, सवासेर आदि का एक निश्चय ही कर दिया। एक ही गांव के दरजी और तेली की गज की लंबाई में फेर था इस का निर्णय स्थानिक रिवाज से ही होता था।

(३८) ईसा के २०० वर्ष बाद चीन म राज सत्ता निश्चित रूप से स्थापित हुई, उस ने महत्व की सब बातों का निश्चकर दिया। वैसा ही आजतक चला आरहा है।

(३९) चीन का प्राचीन और सर्व मान्य सूत्र यह है कि देश की जमीन का एक तसु भी राजा की मिल्कियत है। जब तक जमीन का महसूल भरे तबतक मालिक, वह दूसरे को जमीन बेच भी सकता है परन्तु विक्रीपत्र पर स्थानिक अमल दार की मोहर आवश्यक है, पैसे भी नाम मात्र के ही लेवे पर देशियों को चीन सरकार ने जो जमीन दी है वह भी जब तक वे लगान देवें तभीतक है। अन्यथा नहीं। स्थानिक सुधराई अथवा इसी तरह के दूसरे किसी कायदे के वश हो कर जो जमीन भाडे पर दीहै, वह अपने अनियंत्रित हक के आधीन होकर दीहै। जमीन के महसूल पर ही सरकार का दार

मदार है। यद्यपिकर निश्चित तौर पर बांधा गया है, तो भी खराब फस्ल होनेपर उस कर में भी फेरफार हो सकता है और कमी भी कियाजा सकता है। इसका आधार लोगों की देने की शक्तिपर निर्भर है।

(४०) चीन की आय नमक वगैरह के इजारे और अन्य वस्तुओं की जकात पर अवलंबित है। अब भी पुराने कायदेसेही जकात ली जाती है। उस की सरहद और नाके राज्यभर में हैं। परदेशी माल पर जकात के नाके, उनके करार नामे के मुताबिक जो बन्दर ठहराये गए हैं वहींपर रक्खे हैं। इसलिए परदेशी जहाजों के माल के जकात का निश्चय वहींपर होजाता है। जो कर पहिले से चले आरहे हैं तथा समझ के साथ रक्खे हैं उस के विरुद्ध लोग किसी तरह का आन्दोलन नहीं करते। लोगों की सम्मति के बिना जो कर जबरदस्ती वसूल किया जाता है उस के विरुद्ध लोग जोर शोर से आन्दोलन करते हैं। असल में अमलदार लोग अपनी जानपर ऐसा जोखम कभी नहीं उठाते। अधिक कर डालने की कदाचित् आवश्यकता ही आपड़े तब स्थानिक अमलदार लोग व्यापारी लोग और नेताओंके साथ सलाह करके सर्वानुमति से निश्चयकर के ढंढोरा पिटवाते हैं कि इतना कर नया डाला गया है, अन्यथा लोग नहीं देते अथवा किसी तरह के भयंकर परिणाम उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है। यदि लोगों पर जरा भी अनुचित्

दबाव डाला जावे तो दुकाने बंद कर सब व्यापार रोक दिया जाता है। इसतरह हडताल आसानी से डाली जासकती है। इस से ज्यादह खतरनाक मामला होतो अपराधी अमलदार की कचहरी पर हल्लाकर उस के देखते देखते सब लूट खसोट कर मकानों को जमीं दोस्त कर डालते हैं। इससे यह पता लगता है कि चीनी लोग अपनी सम्मतिसे ही कर का निश्चय करते हैं।

(४१) चीन के नवीन राज्य प्रबन्ध एवं शासन की बात आगे कहेंगे, परन्तु वहां की राज्य पद्धति एक प्रकारकी बेजबाब-दार निरंकुश राजसत्ता है। इसी तरह उसकी अनेक संस्थाएं भी निरंकुश सत्ताधारियों के हाथों में हैं। तो भी वे लोकमत की उपेक्षा नहीं कर सकतीं। चीन का तत्त्ववेत्ता मेन्शियस (ईसासे २७२ से ३८३ वर्षपूर्व) राज्य शासन के कार्य में प्रजा का ही सब से अधिक महत्त्व समझ अग्रस्थान देताथा। गत २००० वर्षोंसे लोगों के मनमें यह बात अच्छी तरहसे आगई है। चीनी कभी अन्याय नहीं सहन करसकते, लेकिन अपनी अनुमतिसे बनाए हुए कायदों का संतोष के साथ पालन करते हैं।

(४२) चीन की गद्दीपर आजतक जो राजे महाराजे होगए ह उन्होंने अपना (पिनलकोड) फौजदारी कायदा जुदाही बना रक्खा है। उत्तरोत्तर नये कायदों में मनुष्यत्त्व अधिक आता गया है। प्राचीन समय में बडी कठिन शिक्षाएं दीजाती थी। आज कल तथा आज से २५० वर्ष पहिले जो फौजदारी कायदे अमल

में लाए गए हैं, वे श्रेष्ठ पंक्ति के हैं; ऐसा विद्वान् कानूनदाओं का अभिप्राय है। मिंग यंशसे भी पहिले के कायदे अगर देखें जाएं तो इतिहास से ऐसाही मालूम पडेगा कि उस कालमें दण्ड देते समय बिलकुल निर्दयता से काम लेतेथे। उसका मुख्य कारण शिक्षण का अभाव अर्थात् अज्ञान और जंगलीपन था दोहजार वर्षसे पूर्वकी सजायें इस प्रकार थी :—१. कपाल में दाग देना। २. नाट काट लेना। ३ पैर काट लेना। ४ शरीर के और अंग काटने। ५. देहान्त दण्ड। परन्तु २५० वर्ष से चीन में जो सजाएं दी जाती हैं वह इस प्रकार हैं—१. हलके बांस का मार। २. भारें बांस का मार। ३. विशेष समय तक देश निकाल। ४. अमुक दूर के प्रदेश तक देश निकाल। ५. देहान्तदण्ड— अन्तिम दण्ड के दो भाग किये गये हैं (अ) गला घोट कर मार डालना और (ब) शिरच्छेद इन का उपयोग अपराध के अनुसार किया जाता है।

(४३) अपराधी को उस का अपराध स्वीकार करवाना आवश्यक होने से उस के घुंटने की हड्डी तथा अंगुलियों के दबाने का हलका उपयोग भी करते हैं। वह उनकी धाराओं को वांचने से मालूम होता है। पर अपराध स्वीकार करवाने में मर्यादा का उल्लंघन न हो, इस बात का न्यायाधीश पर बहुत भारी बोझा डाला गया है। अगर मेजिस्ट्रेट बे पर्वाही करे तो उस पर सरकारी दोष तो आता ही है लेकिन उस की सब प्रतिष्ठा

धूल में मिल जाती है। रिबारिबा के मारने की बात भी उस कानून में है। पहिले एक हाथ फिर दूसरा हाथ काट डाला जाता है। इसी तरह दोनों पैर फिर दो जगह से छाती चीर कर शरीर से हृदय खींच लेते हैं फिर शिरच्छेद करते हैं। इस तरह का वर्णन धारा पुस्तक में किया है। परन्तु इस तरह की विधि का अपनी आंखों से प्रत्यक्ष किया हुवा कोई भी परदेशी आदमी आज तक नहीं मिला। यह बात भी विचारणीय है। यह कहते हैं कि जब देहान्त दण्डकी शिक्षा फर्माई जाती है उस समय मित्रों के मार्फत या अपने आप शराब या अफीम खाने की मंजूरी मिलती है।

४४. चीन का फौजदारी नियम साधारण उदार नीति पर रचा गया है। परन्तु लोगों का इस तरफ कुछ ध्यान नहीं। ग्रीष्म ऋतु में जब सख्त गर्मी पडती है तब कितनी सजाए रद्द कर दी जाती हैं। अपराध में आने के पहिले अगर वह अपना अपराध क़बूल कर लेता है तो उस के कुछ गुन्हाओं को छोड क्षमा की जाती है। एवं चोर पश्चाताप करे और चोरी का माल मालिक को दे दे तो उस को भी क्षमा मिलती है। इसी तरह एक ही व्यक्ति पर एकसे अधिक आरोप आयें तो सब से बडे आरोप पर उसे सज़ा मिलती है। इसी तरह अपराधी को भगाने में उसके स्त्री पुत्र कुटुम्बी आदि को कुछभी सजा नहीं मिलती। मनुष्य की स्वाभाविक निर्बलताओं का दण्ड देते समय बहुत

ध्यान दिया जाता है। चीन के तत्वज्ञ कान्फ्युशियस के सामने एक समय एक अमीर ऐसी शेखी मार रहा था कि मेरे देश के लोग इतने अधिक प्रामाणिक हैं कि अगर पिताने भैंस चुराई होतो उस के विरुद्ध साक्षी दे सकते हैं तो कान्फ्युसियसने यह कहा कि हमारे यहांतो पिता पुत्र का अपराध छिपावे और पुत्र पिता का अपराध ढांके यही सच्ची प्रामाणिकता है। इसी तरह एक अमलदार ने गुरु के पास फिरयाद की कि हमें चोर लोगों से बहुत दुःख उठाना पडता है । तब गुरु ने जबाब दिया की इस का कारण उपरी लोगों का अतिशय लोभ है। फिर गुरुजी ने कहा कि अगर उपरी लोगों का ऐसा लोभ न होता तो पैसा लेकर भी चोरी करने को कहे तो भी चोरी न करते । इसी मनुष्य के पूछने पर कान्फ्युशियस ने यह जबाब दिया था कि मौत की सजा की बिलकुल आवश्यकता नहीं, अगर तुह्मारा उच्च उद्देश हो तो लोग उत्तम हो सकते हैं।

(४९) चीन के फौजदारी कायदे में और भी कितनी जानने लायक बाते हैं । माबाप का अगर मरण हो जावे तो तीन वर्ष तक शोक मनाने का नियम किया है। परन्तु २७ मास तक ही पालते हैं। तब तक शादी भी नहीं हो सकती। सगे संबंधी भी बाजे आदिभी नहीं बजवा सकते। अमलदार अपनी कचहरी में नहीं जा सकता। एकान्त का सेवन करना पडता है। परन्तु बडे अमलदारों को उपस्थित होना बहुत आवश्यक होनसे

उनके लिये यह नियम नहीं चल सकता इस लिये शाहनशाह के हुकुम से ३ महीने अथवा एक महीने की मुदत ही मानी जाती है।

(४६) शाहनशाह के मरण के समय सम्पूर्ण प्रजा शोक में होती है तब सौ दिन तक कोई बाल बनवा या बना नहीं सकता। स्त्रियां सिरके गहने नहीं पहिन सकतीं। १२ मास अमलदारों के घरों में शादी आदि नहीं हो सकती, इस तरह शोक पालन आवश्यक होनेसे बहुत कष्ट उठाना पडता है। यद्यपि नाटक शालायें एक वर्ष तक बन्द करनी चाहियें तो भी १०० दिन तो अवश्य बन्द रहती ही हैं : कोई भी रोजगार न होनेसे नाईयों और नाटक शाला के आदमियों को भावी शाहनशाह के तरफ से भोजन दिया जाता है।

(४७) हिन्दुओं के समान चीनियोंमें भी एक ही उपनाम के घरोंमें शादीका निषेध है। परन्तु यह निर्बन्ध सर्व साधारण पालन करते हैं ऐसा भी नहीं। शायद इस का यह कारण हो कि एक उपनाम के एक कुटुम्ब के ही होते हैं। परन्तु चीन के कितने ही बडे प्रान्त ऐसे हैं कि उनमें सब लोगों की एक ही अटक होती है। अगर वहां यह निषेध पालन किया जावे तो विवाह में बडाही कष्ट हो और असम्भव से हो जावें। इस लिये ऐसे बडे कुटुम्ब आपस में ही शादी कर लिया करते हैं परन्तु उसमे एक शर्त है कि विवाह करने वाले इतने दूर के सगे होने चाहियें कि एक के मरने पर दूसरे का शोक न हो। ऐसाही

हिन्दुओंमें भी है चीन के वंशजों की गणना पुरुषों से की जाती है। इस से मालूम होता है कि पहिले वंश का विस्तार माता की मारफत हुवा करता था।

(४८) चीन के फौजदारी कायदे में मुर्दे का फैसला जल अथवा अग्नि में करने की मनाई है। अगर कोई बहुत दूर जाकर मरजावे और उस के सगे उसे नहीं लासकते हों तो फिर जलवा अग्नि में डालने की इजाजत है। इस का तात्पर्य यह है कि अग्नि की मदद से पितृलोक के साथ झटपट संबंध होजाता है एवं मृत का आत्मा अपने निज स्थान में पहुंच जाता है। मुर्दा अगर ऐसाही रख दिया जावे तो यह संबंध नहीं होसकता। ऐसे उनके विचार हैं। इसीलिए चीनी बाहर मरने के विचार से घबडाते हैं। अगर उनको निश्चय होजावे कि मरने के बाद हमारे शव को हमारी जन्मभूमि में पहुंचा दिया जावे तो वे यह अवश्य स्वीकार करें।

(४९) शव को जलाने का इतना प्रतिबंध होने पर भी बौद्ध धर्म के साधु, अथवा असाध्य रोगियों को मठ के एक तरफ निश्चित किए स्थानपर रक्खा जाता है। इस स्थान को अनन्त आयुष्य का स्थान कहते हैं। आत्मा का मरण न होने के सबब निर्वाण में प्रवेश करने के लिए उसको ले जाते हैं। निर्वाण की स्थिति में आधि उपाधिकी पीडा नहीं होती आत्मा शुद्ध बुद्ध

और मुक्त है इस बात का अनुभव होता है मरने के बाद उस को पालकी में बैठाकर ठुड्डी के नीच सहरा लगाते हैं और पेटी में संभालकर पधरा देते हैं । एक दिन का निश्चय कर जलूस निकालते हैं । ध्वजा पताका लगाने में आते हैं । मठ में इस को फिराते हैं और अग्नि संस्कार की जगह पर लाते हैं इतने समय तक दूसरे साधू मरे हुए के कल्याण के लिए बुद्ध धर्म के भजन गाते हैं । सब भजन पाली भाषा में लिखे हुवे होने के कारण वे साधु भी नहीं समझ सकते कि इसका क्या मतलब है । सचमुच एक समय ऐसा था कि चीन में प्रखर विद्वान् साधू रहते थे, एवं चीन में जब बौद्ध धर्म का प्रचार हुवा उस समय भी उत्तम कोटि के साधु उत्पन्न हुवे थे परन्तु आज तो एक भी ऐसा नहीं है यह हम छाती पर हाथ रखकर कह सकते हैं । बौद्ध धर्म के भजन चीनाई लिपि में लिखे हुए हैं एवं वह लिपि असल पाली भाषा की आवाज बतलाती है । साधु इसका एक अक्षर भी नहीं जानते, तो भी आजकल के वेदपाठी ब्राह्मणों की तरह केवल घोखलेते हैं । वह शव की सन्दूक चितापर रख दी जाती है, एवं भस्म एक बरतन में पूज्य भाव से इकट्ठा करलेते हैं ।

(५०) चीन में मनुष्य के प्राण की रक्षा, एक आश्चर्य जनक रीति से करते हैं । पेकिन स्थित शाहनशहा के प्रधानों के विना कहे किसी को प्राण दण्ड की शिक्षा नहीं देसकते । परन्तु चीनी व्यवहार में अत्यन्त कुशल होने से फलाने २ अपराध में

देरी लगाने की आवश्यकता नहीं इसीतरह स्त्री और लडकों को फुसलाकर लेजाने वाले उपद्रावियों तथा राजद्रोहियों को यथा समय दण्ड देनेकी सत्ता बडे अमलदारों के हाथ में दी है इस लिये इस अधिकार को वह झटपट अमल में ला सकता है परन्तु अपने सिर पर पूरी उत्तरदायिता उठानी पडती है। इतनी ही बात देखनी पडती है कि प्रजा में किसी तरह का असंतोष तथा समाज की शान्ति भंग न हो।

(५१) यद्यपि कायदे के साधारण अमल कराने में बहुत छूट ही है तथापि शब्द मात्र से ही किसी पर अन्याय नहीं किया जाता। चीन में चोरी करना अपराध है परन्तु भूखा मनुष्य चोरी करे तो वह दण्डनीय नहीं होता। अतएव रोटी वाले बहुत संभाल के रहते हैं। किसी ने चोरी की तो उस को झटपट सख्त सजा मिल जाती है। लोगों को कायदों द्वारा जो सरलता अन्य स्थानों पर है, वैसी न होने से मदद लेने एकदम कचहरी के तरफ नहीं दौडते। नाम मात्र को भी वकील वहां है ही नहीं, जो लोग वादी प्रति वादीओं को मुकदमे में सहायता करते हैं उस की वहां बिलकुल प्रतिष्ठा नहीं है। उनका अपमान न हुवा हो यही अहो भाग्य है। प्राचीन हिन्दुओं की पंचायत प्रथा के अनुसार व्यापारियों के झगडे उनकी मण्डली में अथवा पंचों में अमलदारों की सहायता के बिना निबट जाते हैं। चीनी लोग कोर्टों से बहुत डरते हैं क्योंकि दोनों पक्षों को कुछ ने कुछ

नुकसान, अवश्य सहन करना पडता है। कहावत है कि दावा करने वाला वादी बडे २ शैतानों से नहीं डरता पर छोटे शैतानों घबडा जाता है। वहां उस का एक कारण यह भी है कि अमलदार को अथवा कचहरी के नौकर को वेतन कुछ भी नहीं मिलता इस लिये वह पक्षकार के तरफ से मिलने वाली रिशवत पर अपने उदर पोषण का आधार रखते हैं। एवं चीन का वादी भी यही समझता है कि इनको कुछ दिये बिना नहीं चलेगा।

(५२) चीन में चाहे छोटा हो चाहे बडा किसी अमलदार को वेतन नहीं दिया जाता। यद्यपि सरकार में से उस का वेतन ठहराया हुआ है तो भी वे इतना थोडा है कि कोई उसकी पर्वाह भी नहीं करता। यह पद्धति पाश्चात्य पद्धति से नहीं मिलती। इंग्लेन्ड के अमलदार सरकारी उत्पन्न उगाहते हैं। उसे खजाने में दाखिल करते हैं। फिर वहां से अपना वेतन लेते हैं परन्तु चीन में इस से विरुद्ध है। छोटे २ वसूल करने वाले कर भिन्न प्रकार से उगाहते हैं। अपनी २ हिम्मत के अनुसार भाग रखते। अवशिष्ट उपरी अधिकारी के पास भेज देते हैं। वह भी अपनी हिम्मत के अनुसार रकम रखकर बची हुई रकम पेकिन की मुख्य तिजोरी में भेज देता है। केवल इतना ही देखता है कि इतनी रकम से अपना उपरी खुश हो जावेगा कि नहीं। इस तरह अधिकारी अपने नीचे के अमलदार की तरफ यद्यपि नजर रख सकता है तथापि यह नहीं जान सकता कि गरीब प्रजा से किस जोर जुल्म के साथ ज्यादह वसूल किया गया है। यह

कार्य तो कर देने वाले का ही है कि यद्यपि इस का स्वरूप असंतोष कारक है तथापि अच्छी तरह चला जाता है । क्यों कि अपनी मर्यादा का उल्लंघन बहुत थोडे अमलदार करते हैं क्यों कि मर्यादा को तोडने वाले को आखिर बहुत नुकसान उठाना पडता है । जब चीनी अमलदार के बाबत कुछ उलाहने की बात सुन पडे तो उस का कारण यही अव्यवस्था समझना चाहिये समाज के पैसों को उडाना असंभव हो जावे ऐसे सख्त नियय वहां नहीं है जब जब चीन के अमलदारों को नौकरी से छूटते देखते हैं अथवा समय २ पर उनकी बदली होती है । तो भी जिन पर उन्हों ने शासन किया है वे लोग उनका भला ही चाहते हैं यह देख एक प्रकार का हम को आनन्द ही होता है ।

५३. आज तक चीन में (म्युनिसिपालिटी) नगर सभा विभाग नहीं था । जिन बडे शहरों में अधिक विदेशी लोग रहते हैं । वहां नमूने के तौर पर इस संस्था का प्रबन्ध किया है । वहां के लोग साधारणतया यही समझते हैं कि प्रत्येक मनुष्य को अपना आंगन स्वच्छ रखना चाहिये । बडे रस्ते पुल गटर आदि की तरफ किसी का ध्यान न होने से अनेक दुरुस्ती का कार्य परोपकारी लोगों की उदारता पर अवलंबित रहता है । धनवान् लोगों के संबन्ध में लोगों की जो यह मान्यता है उस के लिये वे प्रसंगों को देखकर रस्ते तथा पुलों को दुरुस्त कर करा देते हैं । इस का परिणाम यह है कि चीन के बडे शहरों में दिया बत्ती की (गटर) नालियों की रस्ते साफ करने की यथा योग्य

व्यवस्था नहीं हो सकती ऐसी दशामें वहां रहने वाले चीनियों का स्वास्थ्य नहीं बिगडता यह देख कर आश्चर्य उत्पन्न होता है। चीन में लोगों के जानमाल के रक्षक तथा प्रबन्धक पोलिस नहीं है तो भी बडे शहरों के विभाग डाल दिये हैं वहां एकाध चौकीदार अथवा और एकाध आदमी रक्षणार्थ रख लेते हैं। रात में बाहर निकलना तथा देर तक बाहर रहना यह गृहस्थ को नहीं शोभता, एवं सही सलामत बत्ती के बिना बाहर निकलना अच्छा नहीं समझा जाता। श्रीमान् हो तो नौकर के हाथ में बत्ती देकर चलते हैं नहीं तो अपने हाथ में ले कर चलते हैं।

(५४) चीन और इङ्गलेण्ड के जीवन में निम्न लिखित भेद है—कोई मुसाफिर इङ्गलेण्ड के एक आध गांव में घूमता हो; और उस के सिर पर एक पत्थर लगा और वह पत्थर मारने वाले को न बता सके तो वह उस बात पर नहीं रहजावे। अगर चीन में यह बात हो तो उस को यह करना चाहिये कि जिस शहेर के विभाग में यह बात हुई हो तो वहां के अमलदार बतला देवे। तब वहां के नेता को उस का दण्ड देना पडता है। क्योंकि अपने गांव या वार्ड में उसने ऐसा क्यों होने दिया। इसलिए नायक कोही बडा ध्यान रखना पडता है कि ऐसा न होने पावे। क्यों कि घर से दण्ड भरना पडेगा। इसी तरह बालकों के अपराध का उन के माबापों को नौकरों का अपराध उन के मालिक को भोगना पडता है।

तृतीय प्रकरण

धर्म और संशय.

(५५) चीनी लोग यद्यपि बडे संशयी हैं तथापि हम यह बात निश्चय से कह सकते हैं कि वे धार्मिक तो नहीं है। बहुत पुराने जमाने से ईश्वर के अस्तित्वको वे मानते आए हैं तथापि पुरातन सादे धर्म पर बौद्ध धर्म की इतनी असर पडी है कि पुराना सरल धर्म कौनसा है यह निश्चित नहीं कर सकते। इस समय तो बौद्धधर्म ही व्यापक होरहा है एवं उसके सिद्धान्त ही लोगों के जीवन में ओतप्रोत हो रहे हैं कि सुख दुःख में यही उनको आश्वासन देते हैं। चीन में जो बौद्ध धर्म है वह असल बुद्ध धर्म जो कि हिन्दुस्तान में लोगोंको बुद्धने सिखाया था अर्थात् तत्त्वज्ञान की सूक्ष्म बातों से बना हुवा नहीं है सुतरां वह अधिक निश्चित एवं सामान्य लोगों की बुद्धि में झट आजावे ऐसा है। सत्कर्मसे ही बुद्ध जीव को मुक्ति देता है। एवं इस पन्थ के साधु संन्यासियों के पास दिव्यशक्तियां हैं, यह सर्व साधारण चीनीयों का ख्याल है तथापि विशेष पूज्यभाव नहीं दीखता। बौद्ध धर्म के मंदिर में मूर्तियों के पास उपासक हंसी मजाख करते हैं और मिठाई आदि भी बेचते हैं। जबतक जीवन में किसी तरह का संकट नहीं आपडता तबतक कोई भी चीनी ईश्वर

या देवोंकी परवाह नहीं करता। परन्तु घर में बीमारी या पैसा की तंगी आ पडती है, तब वह जहांतहां दौडधूप कर के देवताओं को संतुष्ट करने की फिकर में डूब जाता है।

(५६) हिंदुओं के दवी देवताओं की न्याई प्रथम साधुओं की मारफत पूजा करवाई जाती है, बदले में साधुओं को पैसे दिए जाते हैं। जिस देवता की उपासना करनी होती है उस के आगे अगरबत्ती की धूप और दीपक रक्खा जाता है। वे साधु लोक प्रिय नहीं एवं सिर मुंडवाए हुए रहने से चीनी इनकी हंसी करते हैं। वे बौद्ध सिद्धान्त के अनुसार आचरण करते होगें या नहीं, इनके जीवन शुद्ध हैं कि नहीं इस बात में उन्हें संदेहही रहता है। बौद्ध मंदिरों में सब जगह यह खुदवाया है कि (यहां शराब और मांस का प्रवेश नहीं) खाने पीने में हमेशा वनस्पति काही भोजन परोसा जाता है परन्तु आजकल जिसने शराब न पी हो ऐसा साधु दुर्लभ है। ये साधु इतने बिगडे हुवे हैं कि बहुत से चित्रकारों के चित्रण के लक्षण हो रहे हैं।

(५७) तोभी नवीन साधु की दीक्षा लेने वाले को उनकी पंक्ति में बैठने के लिए भयंकर तितिक्षा सहनी पडती है। जैसे एक मनुष्य का सिर मुंडवाकर उस पर नव बार सुगन्धी पदाथ के चौरस पर्त रख कर सुलगाते हैं, जल जल कर जब तक माथे पर दाग न पड जावे तबतक उसको दो साधू पकड़े रहते हैं।

इस तरह उत्तीर्ण हुए को एक प्रमाण पत्र देते हैं जिस से चीन के किसी भी मठ में २४ घंटे का वास और दो समय का भोजन प्राप्त कर सकता है।

(५८) बौद्ध धर्म के प्रारंभ में, चीन के कवि और चित्रकारों के मगजको इस धर्म ने बहुत काबू किया था क्यों कि यही चित्रकार 'स्वर्ण मय चित्र बुद्ध का बनाते जिस से लोग काबू में आजाते थे। ईसा की आठवीं सदीमें चीन में एक ऐसा कवि पैदा हुवा, जिसने बौद्ध धर्म के सच्चे रहस्य का साक्षातकार किया था उसने इसका उपसंहार इस तरह किया कि 'ओ पवित्र श्रद्धा! मैंने अगर तेरा महात्मा जाना होता तो हिरण्य गर्भ ईश्वर मुझे आशा दिलाता'।

(५९) चीन की धर्म पुस्तकों में 'ताओ धर्म' यह शब्द बहुत दीख पडता है। चीन में तीन धर्म है (१) कान्फ्युशियस का धर्म (२) बौद्ध धर्म (३) ताओ धर्म। कान्फ्युशियस का धर्म पडोसीके प्रति अपना कर्तव्य एवं जगत् की व्यावहारिक बातों का ही बतलाने वाला है। किन्हीं के मत से एक हजार नहीं तो ६०० वर्ष पहिले लाउड्झा नामक एक तत्त्ववेत्ता होगया है, वह नैसर्गिक शक्ति का विचार कर, उस के विचार केवल दन्तकथाओं से ज्ञात होते हैं। उस के नाम पर एक ग्रन्थ भी है पर यह सिद्ध होगया है कि उसका नहीं है।

(६०) इस महान् प्राचीन गुरु के उपदेश व्यवहार के लिए नितान्त उपयुक्त नहीं है बल्कि दुनिया से विरुद्ध हैं जैसे यह कहता है कि राजाकी कुछ भी जरूरत नहीं क्योंकि सर्वोत्तम राजा के राज्य में भी दंगे तोफान और अव्यवस्था होती ही रहती है। और थोड़े पढने से अधिक लाभ है क्यों कि बदमाश और चोर न्यून होजाते हैं। काबेलियत से चोरी कर के भी न पकडा जाऊं यह एक प्रकारका बुद्धिबल का ही परिणाम है। सर्वोच्च सिद्धान्त तो उसका यह था कि कुछ भी मत करो क्योंकि अप्रवृत्त रहने से सब अपने आप होजावेगा। यद्यपि इस अगम्य सिद्धान्त को समझाने की इसने तकलीफ नहीं उठाई है तो भी जैसे तैसे बुद्धिपूर्वक सब को समझ लेना चाहिए। परन्तु अचरज की बात यह है कि स्वसिद्धान्त से उलटे भी कतिपय इस के उपदेश हैं, जैसे (अपकार करने वाले पर उपकार करना जो अपने आपको जीतता है वही सब से बलवान् है। इस दूसरे सूत्र का दृष्टान्त एक टीकाकारने इस प्रकार का दिया है। प्र. तू कैसे मोटा होगया है ! (उ) हां मैं अभी युद्ध में विजयी हुवा हूं प्र. आप कहना क्या चाहते है! क्यों आप समझे नहीं, जबतक घर पर रह कर पुराने राजों के दास्तान पढता तबतक मैं सदाचार की चकित होकर तारीफ करता, फिर मैं जब घरसे बाहर निकला तब लक्ष्मी और सत्ता का मोह देखकर खुश होगया, एवं इन दो भावनाओं के लिए मेरे मन में युद्ध शुरू हुवा , तब मेरा

शरीर उतरने लगा, लेकिन अब सद् वर्तन की ओर मेरा प्रेम बढा है। मैंने वृत्तियों को जीता है इस लिये मोटा होरहा हूं।

(६१) इस प्राचीन महात्मा का उपदेश एकही शब्द में आजाता है। वह शब्द ताओ अर्थात् मार्ग होता है ताओ धर्म का तात्पर्य यह है कि नीतिमान जीवन बनाना इस से मनुष्य अपने जीवन भर उत्तम चारित्र्य और सद् वर्तन रख सकता है। आगे चल कर जब बौद्ध धर्म की विचित्र परस्पर विरुद्ध बातें लोगों के सामने आती गईं जैसे कीमिया और अमृत के तलाश करने की, तब ताओ धर्म के लोग विरुद्ध होगए। तब इन्होंने भी बौद्ध धर्म के साधुओं की तरह मठ बांधने शुरु कर दिए, और मूंडकर चेले चांटे बनाने लगे। और प्रत्येक बात में बौद्ध धर्म की नकल करने लगे जिस से यह समझ में नहीं आता कि दोनों में भेद क्या है।

(६२) मध्य एशिया के ग्रीस के आधीन बॅक्ट्रिया प्रान्त से ईसा की दूसरी शताब्दी में कीमिया की बात चीन में दाखिल हुई। पर अब उसपर से उनकी श्रद्धा उतर गई है। वे समझने लगे हैं कि तांबा और सीसे को चमत्कार से सुवर्ण बनाने की अपेक्षा खुद परिश्रम कर के जल्दी तैयार होता है। एवं कुछ ओषधिओं क मिश्रण से रस निकालकर अमर होने का विचार कुछ ही मूर्खों को आता होगा तथापि ताओ धर्म जीवन को अमर तो नहीं पर बहुत दिन तक उसे टिका सकने का ढोंग सिखा सकता है यह कला ऐसी है कि

अमृत पिए बिना ही आयु की थोडी बहुत वृद्धि अवश्य होती उस में ऐसा सिखाया जाता है। श्वासोच्छ्वास नियमित प्रातःकाल की शुद्ध हवा में करना। इसी तरह मुख में जो थूक होता है वह दो घन्टे में तीन समय निगलना। शरीर एवं उस के अवयवों को अमुक स्थिति में रखना। और कुछ घंटे शरीर से एकान्त में आसन लगाकर शान्त बैठे रहना। आंखें बंद रखनी। संसार के प्रवाह से मन को खींच लेना जिस से शरीर का शुद्ध भाग खिलेगा। मतलब यह है कि हिंदु धर्म के सन्ध्या आदिसे चीन के इस ताओ धर्म की क्रिया कितनी मिलती है। ईसाके दूसरी तीसरी शताब्दी के एक महात्मा कहते हैं कि पवित्र मनुष्य वही है जो फल अथवा परिणाम का विचार न कर निष्काम कर्म करता रहे। वे पहिलेसे किसी प्रकारकी योजना घडते न थे, यदि प्रयत्न निष्फल जाता तो उस का शोक नहीं करते थे। अगर प्रयत्न सफल होता तो उस का हर्ष न करते थ। इस तरह निर्भय होकर उच्च शिखर पर चढ सकते थे! भींगे बिना पानी में प्रवेश कर सकते थे, और जले बिना अग्नि के साथ क्रीडा कर सकते थे। प्राचीन पवित्र पुरुषों को स्वप्न न आतेथे, जागते समय किसी बातकी चिन्ता नहीं होती थी, वे खान पान में कोई विशेष विवेक नहीं करते थे। प्रत्युत वे प्राणायाम अवश्य करते थे। और पवित्र पुरुष दीर्घ श्वास लेतेथ पामर कंठ श्वासी होते थे।

(६३) ताओ धर्म स्थूल स्वरूप से चीन के लोगों को मुग्ध करता है परन्तु इस के सूक्ष्म स्वरूप के साथ हिंदुओं के तत्त्वज्ञान के अनुकूल

एक विचित्र सिद्धान्त जुडा हुआ है । मानव-बुद्धि की उस तरफ जो अनन्तता व्यापरही है उस के मध्य भाग में आंख को भी झंखाने वाला एक मध्य विन्दु है एवं उस असाधारण प्रकाश मान विन्दु से पृथिवी में जीव उतरता है यह मध्यविन्दु शाश्वत तत्त्वों का स्थान है वही जगत् का आदि कारण है वहां निष्कलंक और पवित्र आत्माएं अमृत का पान करती हैं और अपनी स्वयम्भू शक्ति से जीते हैं। वहां के आत्मा सब समान हैं लेकिन आकार से रहित हैं। प्रत्येक मनुष्य जगत् में जन्म लेने के पश्चात् मध्यविंदु में विचरते हुवे जीवन को प्राप्त करना चाहिए। एवं जीवन की भिन्न भिन्न स्थितियों में रहकर शारीरिक और मानसिक निर्मलता प्राप्त कर उसे स्थिति को पहुंचना चाहिए । फिर शरीर और जीव के भिन्न होने की जो स्थिति है उसी को लोग मरण कहते हैं उस समय पवित्र आत्मा नेत्र बंद कर देता है और जगत् में जिसको जीवन कहते हैं, पर वस्तुतः जो निद्रा है उस में से वह आत्मा अपनी प्राचीन प्रकाशित स्थिति में आजाता है।

(६४) शताब्दियों तक चीन में बौद्ध और ताओ धर्म का प्रबल विरोध रहा । दरबार में किसी समय बौद्ध धर्म तो किसी समय ताओ धर्म का पालन किया जाता। एक वार बौद्ध धर्म दबा दिया गया, तो दुबारा ताओ धर्म की भी यही स्थिति हुई थी। ५७४ इस्वी में कान्फ्युशियस को मान देने के लिये दोनों धर्मों का विकास किया गया था। किसी भी सम्राट ने कान्फ्यु-

शियस के धर्म में गम्भीर रीति से बीच बिचाव करने का प्रयत्न नहीं किया। इस समय तो ये तीनों धर्म एक साथ ही अच्छी तरह चलते हैं।

(६५) हिन्दुओं के समान चीनी भी भूतयोनि मानते हैं। भूत बुरे और अच्छे, दो तरह के होते हैं। बुरे भूतों से वे बड़े घबराते हैं। डरावने भूत हमेशा अन्धेरे कोने में ही रहते हैं, और भाग्यहीन मुसाफिरों को विना कारण कष्ट का अवसर ढूंढा करते हैं। जिन मनुष्यों को संसार में न्याय नहीं मिला है उन के भूतों का डर अन्यायियों को हमेशा बना रहता है। जिसने धोखा दे कर दूसरे के पैसे हजम किये हैं, उसी के घर के आगे वह धोखेबाज़ पकडा जाता है कदाचित वहां से छूट गया तो, धोखे दिये हुवे आदमी के भूत के साथ अपना हिसाब चुकाना पडता है। उसी तरह घर के लडके की बहू सास के जुर्म में से छूटने के लिये, किंवा उन का अर्थात् उसकी निर्दयता उन का वैर का बदला चुकाने के लिये, जल में डूब कर कितने ही आत्महत्या कर लेते हैं। ऐसा करने से कुटुंब में खूब कलह पैदा होती है और किसी किसी समय तो लोहूलुहान भी हो जाते हैं। कितने ही बार बदले में पैसे दे कर बदला चुकाते हैं। इस तरह जुल्म के लिये बदला चुकाने की जिम्मेदारी हमेशा सिर पर चढी रहने के कारण निर्बल मनुष्यों पर बलवान् जुल्म न कर सकें ऐसी अच्छी व्यवस्था रह सकती है।

(६६) चीनी ज्योतिषियों की भविष्य वानी पर बहुत श्रद्धा रखते हैं। ये ज्योतिषी चौराहों तथा रस्तों पर अपनी अपनी दुकान लगा कर बैठते हैं। साहसी लोग छोटी छोटी सी बातों में भी इन की सलाह लेते हैं। ये भी कुछ फीस ले कर अपनी सलाह देने को तैयार हो जाते हैं। इस प्रकार शुकन या भविष्य देखने का कार्य अनेक प्रकार से होता रहता है। पुस्तक में लिखी हुई गणनाओं को गिन कर फल कहने लगते हैं। ऐसे पुस्तक भी चीन में ढेरों मिलते हैं। एवं अगम्य चिन्हों को खींच उस पर चिट्ठियां डाल कर यह भविष्यवेत्ता फल कहते हैं। बौद्ध धर्म के ढेरों में भी ये लोग होते हैं। उन के पास दो फांसे (पाश) होते हैं। एक तरफ गोल और दूसरी तरफ चपटे—फिर वे देव के आगे उछाल के डाले जाते हैं। दोनों चपटे (चित) पड़ें तो खराब दोनों गोल पड़ें तो मध्यम, और एक चित दूसरा पट होय तो उत्तम समझा जाता है।

(६७) पृथिवी पर रेखा निकाल भविष्य कथन करना इस को 'वायु जल की पद्धति' कहते हैं। इस शास्त्र के मूल तत्त्व के अनेक पुस्तक चीन में मिलते हैं। इस का मनुष्य के आसपास की प्राकृतिक रचना तथा जीवन की भिन्न भिन्न अवस्थाओं से उन सब के भविष्य अच्छे या बुरे कहे जा सकते हैं। पर्वत के या टीलों के आकार जल का पास या दूर होना, वृक्ष की स्थिति, मकानों की उंचाई नीचाई आदि इस विद्या के आचार्यों

को अत्यन्त महत्त्व की होती है। एवं वे वहमी ग्राहकों के अज्ञान पर अपने जीवन का निर्वाह करते हैं। इन आचार्यों को घर वा कबर के लिये लाभकारक जगह पूंछने को बुलवाया जाता है। एवं घर व कबरस्तान बनाने के निर्णय में किंवा घर चिनवाने में सलाह दे कर परिवर्तन करवाते हैं। चीन की किसी गली में सब घर ऊंचे नहीं हो सकते। एक घर दूसरे से नीचा या ऊंचा रखना ही पडता है, अन्यथा दुःख आपडे यह माना माना जाता है। एवं सामान्य वर्ग के लोगों के घरों में सीधे तो घुस ही नहीं सकते। घर में घुसने वाले को दायें या बाएं तो होनाही पडता है घर में घुसते ही एक पडदा मिलता है जिस से दाएं व बाएं जाना ही पडता है। इस का कारण यह है कि भूत घर में घुस न सकें क्योंकि भूत सीधे ही चलते हैं।

(६८) हजारों वर्ष से चीन में सब जगह पूर्वजों की पूजा का धार्मिक रिवाज जारी है। पुरुष या स्त्री मरे तो उन का जीव उस कुटुम्ब के ऐहिक स्वार्थ पर नजर रखता है ऐसा मानते हैं। घर के पूर्वजों की सन्दूक या किसी ऐसी ही चीज में यह जीव रहता है। उस को समय २ पर मांस या शराब के बलिदान देकर उस के जीव को शान्ति मिलती है तथा इस जीवन में स्वयं का सुख सम्पत्ति प्राप्त होती है। हिन्दु धर्म के पितृ पूजा की रीति चीनियों की पूर्वज पूजा की बडी बहिन है। इसीतरह पाश्चात्य देशों में मरे हुवे की कबर पर इष्टमित्र फूल की माला आदि चढाते हैं परन्तु उसमें और इस में बहुत भेद है।

(६९) हिन्दू लोगों के समान चीनी भी जीव दो प्रकार का मानते हैं। सर्व साधारण तो उसे तीन प्रकार का मानते हैं। एक जीव शरीर दृष्टिगोचर व्यक्ति को बतलाता है। वह देह के साथ सदैव युद्ध करता रहता है। दूसरे जीव को शरीर छोडकर बाहर जाने की शक्ति है वह अपने साथ सूक्ष्म शरीर को ले जाता है, मनुष्य को जब मूर्छा आती है तब लोग ऐसा मानते हैं कि इसके शरीर में से दूसरा जीव बाहर गया है। यह दूसरा जीव घबराहट अथवा हृदय को जोर का धक्का लगनेसे बाहर चला जाता है। इस विषय में एक बात है। एक मनुष्य का सिर काटना था। इस बात का स्मरण आते ही उसका दूसरा जीव शरीर से भगा, इस से उसको ऐसा लगा कि मैं छप्पर के ऊपर मानो बैठा हूं। वहां बैठ कर वह शिरच्छेद करनेवाले तलवार की बाट देखता रहा, इतने में इस को मुक्त करने का हुकुम आया, तत्काल ही वह जीव छप्पर से उतर कर अपने असली घर में चला आया। एडमन्ड गॉस नामक एक अंग्रेजने 'पिता और पुत्र' इस नामका एक पुस्तक लिखा है। चीनीओं का दृष्टिबिन्दु गॉस समझाहो ऐसा नहीं लगता। उसमें वह लिखता है कि शाम सवेरे बहुत देर तक प्रार्थना चलती जिस से मुझे बहुत कष्ट होता, तब मुझे ऐसा मालूम पडता मानो मेरा एक जीव बाहर निकलकर छप्पर के किनारे पर बैठा है। और मेरा दूसरा मेरे सगे संबन्धी क्या करते हैं यह देखा करता है।

(७०) चीन के कितने ही भागों में फलक (प्लॅन्चेट) बहुत काम में आते हैं। भविष्य जानने के वास्ते एवं तदनुसार जीवन के कार्य निश्चित करने को इस फलक का उपयोग होता है। इस का भी एक रोजगार ही हो पडा है। क्योंकि किसी (डेरेमें) मन्दिर में मूर्तियों के समक्ष साफ तौर: पर फलक से प्रश्न करते हैं, और उत्तर के लिये पैसे लिये जाते हैं। प्रष्टव्य प्रश्न कागज पर लिखा जाता है। उसमें क्या लिखा है यह जानने के पूर्व कागज को मूर्ति के सामने जला डालते हैं। तत्काल ईश्वर की तरफ का उत्तर रेतकी थाली पर लिखा जाता है। और दूसरे शब्द को लिखने के वास्ते पहले शब्द को मिटा देते हैं। यह कार्य दो आदमी करते हैं। और वह प्रश्न नहीं जानते यह समझ लिया जाता है। वे अपने हाथ में V आकार का लकडी का हथियार पकडते हैं। उस के एक किनारे सीसेकी लेखिनी बांधी हुई होती है, और उस के द्वारा उत्तर के शब्दों के चित्र पडते हैं।

(७१) चीनी अदृश्य भूतों से उत्तर प्राप्त करने का दूसरा मार्ग जानते हैं वह प्रचलित हिप्नाटिझम (योगछाया) जैसा ही है एवं १७ वीं सदीसे इस कलाका वर्णन चीनाई साहित्य में दीख पडता है। नजर बन्द करते समय मूर्ति दीपक धूप वगैरह को लक्ष्य रखना पडता है। फिर किसी मनुष्य पर उस का प्रयोग अजमाते हैं। अर्थात् वह सब अपना ज्ञान भूल जाता है एवं उसके शरीर में भूत

का संचार होता है; वह मनुष्य जो बोलता है उसका एक एक अक्षर ईश्वर की प्रेरणा से आया है ऐसा समझा जाता है इस विषय में एक मनोरंजक दृष्टान्त इस प्रकार है:—

एक मनुष्य पर इस तरह का प्रयोग किया गया था। तब उसने जवाब दिया कि फलाने आदमी मन्दिर के लिये पैसे इकठ्ठे करते हैं परन्तु वह अपने ही काम में लाते हैं और मेरे पास भी उस में के थोड़े पैसे हैं।

(७२) भयंकर रुग्णावस्था में भी इस का प्रयोग किया जाता है परन्तु वह बिलकुल छुपाकर, क्योंकि चीनी अधिकारिओं ने इस के प्रयोग की सख्त मनाई की है। वे लोग ऐसा मानते हैं कि ऐसे अगम्य साधनों से कुछ भी लाभ नहीं होता विपरीत इस के नीति का भंग होता है। चीन में इस प्रकार की बातों का और गुप्त मंडलियों का कायदे से प्रतिबंध किया गया है, बल्कि सरकार यह मानती है कि ऐसी गुप्त मंडालियां समाज की व्यवस्था में गडबड डालना चाहती हैं। इन में 'स्वर्गीय मृत्यु मंडली' बहुत प्रख्यात है उस से सब बहुत डरते हैं। वह अभी तक बिलकुल नष्ट भी नहीं हुई। यह मंडली अपने सभासदों से निमकहलाली की प्रतिज्ञा पहिले ही करवा लेती है, और उस में प्रविष्ट होने की खास विधि होती है। पाश्चात्य देशों में जिस तरह फ्रीमेसन का मंडल हम जानते हैं इसी तरह यह है। इन में यद्यपि आपस में कोई संबंध नहीं है, तथापि जो कुछ भी समता है वह अकस्मात् होगई है।

(७३) इन में भी एक विचित्र संस्था है जिस का नाम है गोल्डन आर्चिड सोसायटी। इस में संमिलित होने वाली कन्याएं सदा ब्रह्मचर्य पालन करने की शपथ लेती हैं, अगर बलात्कार से विवाह करवाना चाहें तो आत्महत्या करने का डर दिखलाती हैं और कर भी डालती है यह मंडली इतनी प्रबल हो गई थी कि इस के दबाने की अधिकारीओं को बडी आवश्यकता पड गई थी।

(७४) इसी तरह वनस्पति का आहार करने वालों की भी एक मण्डली है। ये मांस शराब तमाखू आदिका सेवन नहीं करते सन् १९०० में बाकसर के लोगोंनें तोफान मचाया था उस में यह लोग भी थे।

(७५) अढाई हजार वर्ष से नीति में कान्फ्युशियस को ही प्रमाणभूत मानते हैं। चीनिओं के मन पर अनेक धर्मों का प्रभाव पडा है परन्तु बौद्ध धर्मने जो प्रभाव डाला है वह बहुत दिनों तक नहीं जा सकता। तो भी चीनियों की नीति उन के महान् गुरु कानफ्युशियस के उपदेश अनुसार ही रही है। उस गुरु पर की इतनी श्रद्धा है कि वह उस को अनभिषिक्त सम्राट ही नहीं बल्कि देवकोटि का पुरुष समझते हैं।

(७६) कान्फ्युशियसने अपने सिद्धान्त सूत्र रूप में किंवा प्रश्नोत्तर रूप में लिखे हैं। उस के मरण पश्चात् प्रश्न और उत्तर इकट्ठे किये गये हैं और उन्होंने मनुष्य जाति को आशातीत लाभ

पहुंचाया है। पडोसियों के साथ का वर्ताव धर्म, सद्गुण के लिये सद्गुण को धारण करना चाहिये ताकि उस से कोई लाभ होगा अथवा दण्ड के भय से। आबादी के लिए राजा के प्रति भक्ति आवश्यक है। कान्फ्युशियस एक सादगी पसन्द नीतिज्ञ था। मनुष्य की निर्बलताओं को कभी न भूलता था। ताओ धर्मने अपकार के बदले में उपकार करने की शिक्षा दी थी; वह अशक्य समझ उसने निषेध कर दिया। एवं जरा सी भी आनाकानी विना कहा है कि अपकार का बदला न्याय से देना चाहिये। चीन का विश्वसनीय इतिहास लेखक ईसा से ८० वर्ष पहिले मर चुका था, उसने 'कान्फ्युशियस की' शिक्षण-स्थिति और जनसमाज पर उस का असर इस बात पर साफ साफ यह लिखा है कि जगत् में हजारों राजा और पैगम्बर हो गये हैं उन के जीवन तक ही उन का सन्मान मरने के बाद उन का कोई नाम भी नहीं लेता, परन्तु कान्फ्युशियस गरीब और सूत के बुने कपडे पहनता था। परन्तु वह अपनी स्मृति में से कभी नहीं हटा। जिन को बुद्धिमान् और विवेकी बनना है उन को चाहिये कि इस के जीवन को आदर्श मानें। साक्षात् ईश्वर के पुत्र से ले कर एक छोटे से विद्यार्थी तक ने भी इसके उपदेश की श्रेष्ठता मुक्त कण्ठ से स्वीकार की है। इसी लिये वह दिव्य पुरुषों में भी श्रेष्ठ है।

(७७) ऊपर जो हम ईश्वर का पुत्र कह गये हैं वह चीन का सम्राट् ही है। उस के आधीन प्रजा के सद्वर्तन के लिए

वही एक उत्तर दाता है। प्रत्येक वर्ष पेकिन के स्वर्ग मन्दिर में वह बडे ठाठ के साथ जाता है, वहां यज्ञ याग आदि विधि होने के पश्चात् वह अकेला ही मन्दिर के मध्यभाग में आये हुवे उच्च भाग में प्रवेश कर वहां गोलाकार सफेद नलियों के छप्पर के नीचे बैठ कर ईश्वर के साथ बातचीत करता है। गत बारहमास की सेवा जो कि नौकरी के रूप में है उसकी स्वीकारी के लिये प्रार्थना करता है। चीन के दफतर के देखने पर यह भी मालूम होता है कि ईश्वर कि तरफ से इस सम्राट के पास कागज पत्र आते थे। ईसा के छठी शताब्दी की बात है कि किसी एकान्तमें निवास करनेवाले ऋषिको पत्थर के शिला पर लिखकर अपनी बात प्रगट की थी। १००८ इस्वी. में एक लेख आकाश में से उतरा एवं शाटुंग प्रान्त के टाई पर्वत पर आकर गिरा, जिस जगह पर पत्र उतरा था वहीं एक देव मन्दिर बांधा गया, सम्राट और उसके दरबारी यह लेख देखकर दिङ्मूढ हो गये थे। उसकी तरफ भय और पूज्यभावसे देखने लगे। इस बात पर उस समय के एक विद्वान् राजपुरुष को सन्देह भी हुवा था, और गुस्सा भी आया, क्योंकि कान्फ्युशियस से शिष्य लोग प्रश्न पूंछ कर उत्तर लिखने को कहते तब वह कहता था कि क्या परमेश्वर बोलता है ऋतुऐं आती और जाती हैं, और उस से सब वस्तु उत्पन्न होती हैं लेकिन परमेश्वर एक अक्षर भी बोलता

है क्या ? जब परमेश्वर अपने साथ ही बात नहीं करता तो क्या लेख लिखकर भेजेगा ?

(७८) इस जमाने के इतिहास में ईश्वर की तरफ से आए हुए पत्र की बात लिखी है उस से यह न समझ लेना कि चीन के दफ्तर और उन का इतिहास झूंठा है । जैसे जैसे अधिक शोध होरहा है वैसे वैसे अधिक विश्वास पात्र है ऐसा मालूम पडता है। हॉपडन और राजर ऑफ वंडोपर लिखित इतिहास रविवार न पलवाने के वास्ते ईसू खिस्त ने जो नाराजगी का पत्र लिखा है, इतनी ही बात से वह पत्र विश्वास पात्र नहीं ऐसा नहीं कह सकते ;

(७९) जिस तरह किसी मकान के कमान के बीच का पत्थर बडे ही महत्त्व का मालूम पडे; ठीक इसी तरह चीनियों के राजकीय एवं सामाजिक जीवन में पितृभक्ति यह महत्त्व का विषय है । किसी समय कान्फ्युशियस से एक मनुष्य ने प्रश्न किया कि पितृभक्ति का लक्षण क्या है । उस के उत्तर में उस ने कहा कि इस धर्म का यथार्थ लक्षण करना बहुत कठिन है । एक समय किसी के प्रश्न के उत्तर में उन्हों ने कहा कि केवल पिता के भरण पोषण करने से ही पितृभक्ति समाप्त नहीं होती, खाने को तो कुत्ते और घोडों को भी देते हैं पितृभक्ति पर बालकों के लिए अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं । पितृभक्त बालकों के आदर्श २४ दृष्टांत

भी दिए हैं। एक लडका अपने शरीर पर से मच्छरों को नही उड़ाता था, क्यों कि अगर वह उड़ावे तो उस के मां बाप को काटें, अपनी माता के लिए देवार्चन के लिए एक बालक को कुशाकी जरूरतथी वे न मिले इस लिए वह रोने लगा फिर अकस्मात् वह जमीन में से फूटे उनको ले कर वह घर की तरफ गया, एक लडका पानी के डोल भर कर हर बार जान के फिसल पडता जिस से उस के मा बाप हंसते। इन कारणों से पितृभक्ति का लक्षण कान्फ्युशियस को कठिन मालूम पडे इस में क्या नवीनता है।

(८०) चीन के साहित्य में एक अद्भुत उपन्यास है। उस में एक आशक माशूक की ऐसी कथा गुंथी गई है जिस में उस का अन्त अति करुण रस पूर्ण बनाया गया है। उस कथा की नायिका एक सुंदर मनमोहक कन्या है। अन्तमें क्षयरोग से उसकी मृत्यु होती है। परिणाम देख कर चंचल नायक साधु बनकर बौद्ध मंदिर में दीक्षा लेता है। एक बडे अधिकारी की माताने यह कथा बांची तत्काल वह बीमार होगई, वैद्यों की औषधियां बेकाम हुई, उसकी बीमारी गंभीर स्वरूप धारण करने लगी। तब अपनी माताको बचाने के लिए उस अधिकारी ने उसकी पूर्ति के लिए दूसरी वार्ता लिखी। उस में उस ने उस नायिका को जिलाया, एवं दोनों आशक माशूकों की शादी कर सुखी किया, अन्ततः उस के माताकी तबीयत अच्छी हुई और वहभी संतुष्ट हुवा।

(८१) माता पिता अगर अधिक बीमार होगये हों तो उनकी सन्तान देव मंदिरों में जाकर यह प्रार्थना करती है कि हे ईश्वर तू हमारा आयुष्य कम कर लेकिन मा बाप की उमर बढा दे। हिंदु जीवन में भी इसी प्रकार की पितृभक्ति ओत प्रोत है।

(८२) कान्फ्युशियस जैसे तत्त्ववेत्ता के विचार के ४० करोड आदमियों पर कैसी असर हुई है और उस का क्या परिणाम आया है इस की गवेषणा अब हम करेंगे। चीनी मेहनती, मितव्ययी, आहार विहार में विवेकी होते हैं। चीन में यद्यपि मद्य पान अपराध नहीं है तो भी शराबी कम हैं ऐसा कहते हैं। थोडी मुदत में दुनिया की मुसाफिरी करने वाले लोगों को अवलोकन करने का बहुत सा समय नहीं मिलता। एवं हांग कांग जैसे शहर में जेब कटों ने उन को ठगा हो ऐसे मुसाफिर तथा चीन में बहुत दिन रहने पर भी अवलोकन शक्ति जिन को नहीं होती वे ऐसा कहते हैं। चीनी केवल प्रामाणिक ही नहीं सुतराम् सच्चे हैं ऐसा अभिप्राय गम्भीर शोधक ही दे सकते हैं। थोडे से दुष्टों को छोडकर चीन में जो सचाई है वह अद्भूत है। चीनी व्यापारियों का वचन दस्तावेज के समान विश्वसनीय है। और यह बात पाश्चात्य देशों में घर घर स्वीकारी जाती है। इसी तरह जीवन के अनेक व्यापारों में वे प्रामाणिक हैं। अच्छे गृहस्थों के यहां जो नौकर होते हैं उनकी तरफ से घरके लोगों को

किसी तरह का सन्देह नहीं होता, उस देश में एक कहावत है। कि ' तू जिस सेठ का नमक खाता है उसका निमकहलाल रहना ' जो परदेशी चीन में व्यापार में खूब धन कमा लेते हैं वे २५–३० वर्ष बाद जब अपने देश को लौटते हैं तब नौकरों तथा उन के कुटुंब की अच्छी व्यवस्था करदेते हैं। बेंकों में पैसे के जोखम और विश्वास की आवश्यकता होती है । वहां कार्य करने वाले गुमास्ते क्लार्क आदि किसी धनवान् या पेढी का विश्वास दिलवाते हैं। वे बडी रकमों को धरोहर के तौर पर वहां रख जाते हैं। इससे नौकर रखनेवालों को ज्यादा फिकर नहीं करनी पडती, अगर किसी भी परदेशीने गृहकार्य के लिये चीनी नौकर रक्खा होवे तो उपरोक्त गुण उस में होने से वह अपने मालिक के प्रति भक्ति रखता है—जब ऐसे नौकर छोडने पडते हैं तब उन स्वामियों को बडी अप्रसन्नता पैदा होती है । ऐसे नौकरों में बहुत से सद्‌गुण होते हैं। वे अपना काम चुपचाप किया करते हैं। और अच्छी तरह से करते हैं। वह चाहें तो रातमें देर तक भी जागते हैं और फिर सबेरे जल्दी उठ सकते हैं। वे घर के दूसरे नौकरों से भी अलाहिदा रहते हैं। वे अपना भोजन अपने आप पका लेते हैं। जब वे छुट्टी पर जाते हैं तब अपने स्थान पर विश्वास पात्र नौकर को रख जाते हैं । वे अपने मालिक की दिन चर्या का अभ्यास करते हैं। वह आगे से ही सेठ की इच्छा जानकर उसे पूरा करने का प्रयत्न करता है। इस तरह की नौकरी के बदले में वह मासिक

पूरा वेतन मिलने में ही खुश रहता है और इसके उपरांत घर में जो वस्तुएं खरीदी जावें उन पर भी दलाली उस को मिलनी चाहिए इतने पर भी उस की भूल किसीको न निकालनी चाहिए। चीन के नौकरों का यह रिवाज ही है। नौकर चाहे जितने प्रामाणिक हों परन्तु इस दलालीकी लालच से बचे हुए नहीं होते अगर उन से यथायोग्य व्यवहार करो तो वह सेठ की सरलता का दुरुपयोग नहीं करते। यह दलाली की पद्धति ऐसी विलक्षण है कि धनाढ्य और सामान्य सेठकी एक प्रकारकी ही वस्तुक्रय पर धनाढ्य सेठ का नौकर सामान्य सेठ के नौकर की अपेक्षा ज्यादा दलाली लेता है इस पुराने रिवाज को निकालने का परदेशियोंने बहुत प्रयत्न किया तनख्वा बढाई, लेकिन यह सब निष्फल गया, जिस सेठ ने इस पुरानी पद्धति के अनुसार चलने दिया उसी को अधिक फायदा हुआ।

(८३) चीन के नौकरों के चरित्र में एक बडे महत्त्व की बात है कि वह अपने सेठों की उच्च स्थिति और विशेष अधिकार साफ दिलसे स्वीकार करते हैं। उन के साथ यह भी बात है कि अगर उन्हें मनुष्यत्व से हीन समझेंगे तो वह एक क्षण भी यह बात सहन नहीं कर सकते, जिस तरह हिंदुस्थान में लात और घूंसों से खूब खबर लेते हैं और वे सहन करते हैं। इस तरह के लात घूंसे वे कभी न सहन करेंगे। चाहे कितना उनको वेतन दो गालियां या मार खाके वह कभी भी नहीं बैठ सकते। ऐसे स्थान पर वह कभी भी नौकरी न करेंगे। अपने मित्रों में

अपनी प्रतिष्ठा न रहे यह वह कभी भी सहन नहीं कर सकते। क्योंकि मित्रों में से प्रतिष्ठा गई मानो मनुष्य की पंक्ति से उन्हें किसी ने निकाल दिया। इसलिए चीन में इतना अपमान सहन कर लेने पर भी कोई नौकरी न छोडे वह निकम्मा अविश्वास पात्र किंवा भयंकर समझ कर उस को छुट्टी देनी चाहिये। कान्फ्युशियस ने कहा है कि 'तुम्हारे नौकर पर विश्वास न हो तो उसे मत रखना, और चाहे जिसे रक्खो लेकिन उस पर अविश्वास न करना' चीनी नौकरों के संबंध में दिया हुआ उपदेश आज तक भी कार्य में परिणत होता है।

चतुर्थ प्रकरण

इ. स. २२० से इ. स. १२०० तक का काल

(८४) चीन की गद्दी पर हॅन वंश के सम्राटोंने बहुत समयतक सुयश सम्पादन कर राज्य चलाया, लेकिन साधारण कारणों से उसका अन्त आ गया। राजमहेल में कुमन्त्रणा कर थोडे समय तक गद्दी अपने हाथमें करली। इसमें राजमहेल के कञ्चुकी लोगोंने भाग लिया, और इस से ऐसा गम्भीर मामला हो गया कि गद्दी के लिये तीन उम्मेदवार खडे हुए। जिस तरह रोम के बादशाह जामुनी रंग का चोगा पहनेतेथे, उसीतरह

चीन के शाहनशाह पीले रंग का चोगा पहनते थे। इन तीनों हकदारों की खटपट का अन्तिम परिणाम यह हुआ कि कई वर्ष तक युद्ध चलकर चीन तीन हिस्सों में बंट गया। एवं उन तीन प्रतिस्पर्द्धियों में से हर एक गद्दी का मालिक बन बैठा। सन् २२० इस्वीसे २६५ सन् तक का यह 'तीन राज्यों का समय' कहलाता है। इस समय के आरंभ में हृदय को पुलकित करनेवाले पराक्रम के आश्चर्य में डालनेवाले व्यूह रचना के, अनेक कार्य हुए और विजय की वरमाला क्षण क्षणमें एक दूसरे के कण्ठ को सुशोभित करती रही। इस तरह एक हजार वर्ष के पश्चात् एक ऐतिहासिक उपन्यास लिखा गया, उस में देश के अन्तरंगकलहों का सुन्दर और तादृश वर्णन किया गया। अपने देश की ऐतिहासिक सत्य घटनाओं के साथ बहुत सा भाग असत्य का भी मिलाया अतएव पाठकों को भी पढने में रस आता है। उसकी जड इतिहास है एवं वह चीन के उपन्यासों में से एक मशहूर उपन्यास है ऐसा वे लोग भी मानते हैं।

(८९) इस घटना के बाद की दो तीन शताब्दियों में बहुत सामाजिक और राजकीय क्रान्ति हुई। एवं वह समय चीनीओं के कथनानुसार कलाओंके अभ्युदय के वास्ते प्रतिकूलथा। चीन का साम्राज्य फिर एक तन्त्री हुआ, और चीनाई वंशके लोग बादशाह बनें। परन्तु उत्तर तरफ के तार्तार लोगोंने बहुत तकलीफ दी, परन्तु टोबा वंशके लोगोंने उनको हिला दिया था।

चीन के उत्तर भाग में इन टोबा वंशियों का राज्य कोई २००० वर्ष तक रहा। उस समय दक्षिण भागमें थोडे थोडे दिनों तक छोटे छोटे राज्यों का राज्य था। इस लिये इस समय की कतिपय विशेष घटनाओं का हम यहां पर उल्लेख करेंगे।

(८६) मातापिता के मरणानन्तर २७ मास तक शोक मनाया जाने लगा, जो आजतक जारी है। उसी समय जापान से दूत भी आने लगा। २४१ सन् में चीनियोंने अपना दूत जापान भेजा, फिर सन् ६०८ में भी दूत भेजा गया था। कोरिया पर विजय प्राप्त करने के प्रयत्न भी इसी समय हुए। एवं स्याम तक दूत इसी समय भेजे गये, बौद्ध धर्म इस देशमें कब दाखिल हुआ यह निश्चित तौर पर कोई नहीं कह सकता। पर जिस समय की बात हम कहते हैं उससे बहुत दिन पहिले वह दाखिल हुआ होगा, और उसकी जड़ पक्की हो गई थी, और वह चारों तरफ फैल चुकाथा। ३८९ सन् में फाचियन नामक बौद्ध साधु मध्य चीनमें से निकल बडा भारी रास्ता लेकर हिंदुकुश पर्वत पर होकर सीधा हिन्दुस्थान में आयाथा। फिर उसने पाटलिपुत्र किंवा पटना, काशी, बुद्ध गया और अन्यान्य तीर्थ भी देखे। अपने देश लौटने पर उसने अपनी मुसाफिरी का वर्णन छपवाया था, वह आज भी मिलता है। उसने इन स्थानों का सूक्ष्मतया से वर्णन किया है। हिन्दुस्तान पर्यटन करने का आशय यह था कि पवित्र बौद्ध धर्म

के ग्रन्थों की नकल कर उसके तत्त्वको समझ दूसरों को समझा सकें इस लिए पवित्र बौद्ध धर्म के ग्रन्थों की प्रति लिपि कर मूर्ति प्रतिमा तथा बुद्ध के शरीर के बचे भाग ले जाना। इन सब वस्तुओं को वह समुद्र के रास्तेसे सही सलामत ले गया। वह सिंहलद्वीप (सीलोन) हो कर पीछे वापस गया, वहां वह ३ वर्ष रहा, इस तरह सब उस ने १५ वर्ष बाहर यात्रा करते हुए सुमात्रा के रस्ते से चीन में आगया।

(८७) इस तरह ६१८ सन् में टेंग का वंश चीन की गद्दीपर आया, इन के वंशजोंने ३०० वर्ष तक यश प्राप्त कर सत्ता चलाई। समग्र संयुक्त चीन राज्य पर मजबूत पर लंपट राजा के गद्दीपर बैठनेसे राज्य के अदल इन्साफ के मार्ग में अन्दर के झगडों से तथा विग्रहों से बहुत नुकसान पहुंचता था, तो भी उस समय के टेंग वंश के राजाओं के चारित्र से ऐसा मालूम होता है कि चीन में शान्ति आबादी और प्रगति अच्छी हुई थी। हॅन वंशकी तरह टेंग वंश का नाम भी लोगों के मुंह पर आजतक चढा हुआ है। जिस तरह चीन के उत्तर भाग में रहने वाले लोग अपने को हॅन की प्रजा कहने में आनन्द मानते हैं, उसी तरह दक्षिण भाग में रहने वाले टेंग वंशकी प्रजा कहलाने में अपना गौरव समझते हैं।

(८८) इस टेंग वंश के जमाने में एक राजकीय महत्त्व का दृष्टान्त बतलाने लायक है। इस वंश का एक राजा था।

उस की पहिली रानी से एक पुत्र था। फिर उस ने दूसरी शादी की। उस की मृत्यु के पश्चात् इस नई राणीने सौत के पुत्र के नाम से पालक रूपमें गद्दी का कब्जा ले लिया। एवं उस पुत्र को हटाकर खुद मालकिन बन बैठी, राणी का नाम 'वु' था। हॅन वंश में पहले ल्यु नामक राणी हुई थी, उस ने संपूर्ण महाराजा का राजदण्ड धारण किया था। चीनीओं ने उसे नियमानुसार मालिक माना था। पर उस तरह का मान 'वु' महाराणी को उन्होंने नहीं दिया पर इस में स्वाभाविक शक्तियां बहुत थीं। जबतक उसकी बुद्धि की शक्तियां समर्थ एवं अविच्छिन्न रहीं, तबतक १२०० वर्ष तक गद्दी पर आने वाले राजाओं की तरह खूब सख्ताई से राज्य किया, पर जब वह वृद्धा हुई तब गद्दी पर से उठाकर लोगों ने उसे एकान्त में रहने पर वाधित किया और उसकी जगह पर नियमानुसार गद्दी का मालिक होने से उसकी सौत का लडका राजा हुआ।

(८९) इस राणी के राज्यकाल में कितनेही कार्य मर्यादा बाहर के हुए हैं जो अभी तक याद करते हैं। जब उसका पति जीता था, तभी वह मंत्री परिषद् या दरबार में पडदे की आड में हमेशा बैठती थी, पति के मरने के बाद सरेआम मंत्री परिषद् में बैठती और बनावटी दाढी लगाती थी। ६९४ सन् में 'दैवी महाराणी' ऐसी पदवी धारण की, ६८६ में अपने को ही ईश्वर कहलाने की धृष्टता की थी। परन्तु अपनी वृद्धावस्था में वह बहुत दुनखी

और गुस्सेबाज होगई थी। कोई ऐसा नहीं कहसकता कि राणी साहब गुलाब और कमल सी सुंदर है पर सबको यही कहना पडता कि गुलाब और कमल महाराणी साहब के समान नाजुक हैं। अपने को ईश्वर बतलाने के लिए इसने बहुत प्रयत्न किए। कृत्रिम बीज में से कुसमय वृक्ष पैदा करने का योजना की थी और अपने दरबारियों के सामने फूलफल पैदा करने की वृक्षों को इजाजत देती। उस ने एक प्रकार के वृक्ष को एकदम फूलने को कहा लेकिन वह न फूला न फला। तब उसने ऐसा हुकुम किया कि राजधाना में कोई इस को न लगावे तथा जला देवें। और उसने यह निश्चय किया कि स्त्री जाति पुरुष के माफक है। इस लिए नौकरी की परीक्षाओं के लिए स्त्रियों को परीक्षा में बैठने देती, और जो स्त्रियां उत्तीर्ण हों उन को अच्छी अच्छी जगह दी जाती, जुबानी देते समय न्यायाधीश के सामने घुटने टेकने पडते हैं पर स्त्रियों को मनाई करवादी थी। इन सुधारों से उस का हेतु उस के मरने के उपरान्त नहीं चला। स्त्रियों को ऊंचे दर्जे पर चढाने का यह पहलाही मौका था। यह बात नहीं, तीसरी शताब्दी में भी एक राजाने स्त्रियों के लिए नौकरी के दरवाजे खोल दिए। बहुत सी स्त्रियों को उंचे ओहदे मिले, लेकिन यह बहुत दिन नहीं चला।

(९०) टेंग वंश के राजाओं में 'मिंगहुआंग' ने ७१२ में पिता के उत्तराधिकार में राजगद्दी प्राप्त की थी। बापने बेटेके वास्ते

ही तख्त छोड़ दिया था, गद्दी पर चढते ही उसने मितव्ययता शुरु कर दी, रेशम के कारखाने बन्द किये, राजमेहल को रेशमी जरदोजी के कपडे, और हीरामाणिक आदि जवाहिर पहिरने की मनाई कर दी, उसके हुकुम से कसबी कपडों का एक बडा ढेर जला दिया गया था, वह साहित्य का भूषण था, उस के समय में गांव गांव में पाठशालाएं खुल गई थीं, वह संगीत का बडा शौकीन था, युवा स्त्री पुरुषों को संगीत सिखाने के लिये एक पाठशाला खोली थी, वह युद्ध का बडा शौकीन था, उस का उडाउपना उत्तरोत्तर इतना बढ गया कि जिस से कर बढ़ाने की जरुरत पडी, जिस से प्रजा में असन्तोष उत्पन्न हो कर बलवा हो गया। वह अपने सामने बडे ठाठ का दरबार भरवाता था। साहित्य और कला के विषय में निपुण मनुष्यों का वह सन्मान करता था। अन्त में इस का स्वरूप ही बदल गया। अतिशय प्रख्यात यांग कवफे नाम की नायिका को आनन्द देने के लिये जो भोजन समारंभ गान तमाश होते उस में वे विद्वान् लोग आवें इस लिये उन का सन्मान करता था, षंढों को बडे बडे ओहदे की जगह दी थी, धर्म के नाम अनीति मान धतिंगों को उत्तेजन देता था। उन के समय मुंह ढांकने का रिवाज स्त्रियोंने निकाल दिया था। ७५५ इस्वी में भयंकर बलवा पैदा हो गया। ७१ वर्ष के वृद्ध राजा यह तोफान न सहन कर कहीं भाग गया। वह बहुत दूर नहीं जाने पाया था कि इतने में लश्करने बलवा कर

नायिका के कुटुम्बियों पर वैर निर्यातन की इजाजत मांगी क्यों कि उस कुटुंब के कितने ही नालायक बडे बडे ओहदों पर थे। आखिर उस को हुकुम देना पडा। खुद जिस को देवी समझता था उस को मुख्य कंचुकीने फांसी डाल मरवा दिया। लष्कर के सिपाहियोंने और कुटुम्बियों को मार डाला। आखिर उसने अपने लडके को राजगद्दी सौंप दी, और छ वर्ष एकान्त में बिता कर मर गया।

(९१) करुण रसोत्पादक इस बात का वर्णन चीन के एक कविता में किया है। उसने अपने काव्य के आठ भाग किये हैं उस में राजा को राज्य की चिन्ता, सुन्दर स्त्री का लाभ, उस के साथ विलास, फिर उस का भाग जाना उस से उत्पन्न नृप-विडम्बना, फिर अकेलेको देशनिकाल, पीछे आते समय अपने वैभव के पास से आना, उस से पूर्व स्मृति, तज्जन्य दुःख, अन्त में प्रेतयोनि गमन इस का वर्णन उस कविने इस तरह किया है कि वह निराश राजा दूसरी दुनिया में अपनी प्रियतमा यांग केवेफे के पता लगाने के लिये एक जादुगर को भेजता है और उस से यह सन्देश कहलाता है कि उस का प्रेम अखण्डित और सतत है। वह बहुत समय तक उस स्त्री की तलाश करता है आखिर वह स्वर्ग लोक में मिलती है वह उस को सन्देशा कहता है उस के कुछ भाग हम नीचे देते हैं।

" उस का चहरा जड जैसा शान्त था, वसन्त ऋतु में वर्षा

के बिन्दुओं जैसे फूल गीले होते हैं उसी तरह उस की आंखों से अश्रु की अनेक धाराएं पडती थीं। उसने अपनी चित्तवृत्ति को संयम में रक्खा था। इसी लिये शोक भी काबू में हो गया था। वह आप को सन्देशा कहलाती है कि तुह्मारे वियोग के बाद तुह्मारा स्वरुप और शब्द बहुत याद आते हैं। पृथिवी पर का अपना प्रेम इतनी जल्दी समाप्त हो गया, तो भी स्वर्ग के दिवस और मास मुझे बहुत लंबे लगते हैं। मैं मृत्युलोक में आप के घर की तरफ एक टक देखती हूं लेकिन धूल और तेज के कारण आप का नगर मुझे नहीं दीख पडता। आप के अनन्त प्रेम की निशानी सोने की माला और बाल में लगाने की सुई अपने पास रखती हूं तथा आधी आप के पास भेजती हूं, और जादुगर से कहा कि राजा से कहना कि सुवर्ण और सुई की तरह हृदय से मजबूत रहना, और फिर हम स्वर्ग में मिलेंगे। "

(९२) टेंगवंश के कीर्तिमय राजाओं के पश्चात् पांच निर्माल्य वंश हुए। एवं सब मिल कर ५० वर्ष से अधिक सत्ता नहीं भाग सके। ९६० इसवीसे सूंगवंश का आरम्भ हुवा, उस वंश के राजा ३०० वर्ष तक गद्दी पर रहे। इन के जमाने में प्रजाकी शान्ति और आबादी पूर्ववत् रही। इस समय तक ऐहिक सुख के लिये जिस प्रगति और सुधार की आवश्यकता थी वह सब चीनने प्राप्त करली थी। एवं मानसिक शक्ति की वृद्धि यथायोग्य हो सकी, सुतराम् आजतक भी वैसी ही है। चीन में सुखी जीवन

के जो साधन उनदिनोंमें थे, उसमें कपडे के फेशन के सिवाय कोई ज्यादह परिवर्तन भी नहीं हुआ परन्तु हल, पवन-चक्की, कुवा साफ करने के औजार, कीचड के घर, गाडियां, बरतन, कुरसी मेज, लकडी और हाथीदांत के छुरी कांटे इत्यादि चीन में अब हमें जो दीख पडते हैं, वे २००० वर्ष पहिले जैसे थे वैसे ही अब भी हैं। इस्वीसन् की तीसरी शताब्दी में चीनके तत्त्ववता मेन्शियसने ऐसा कहाथा कि सम्पूर्ण राज्य में लिखने के अक्षर के आकार भी वही थे। रहट की घरी भी उतनी ही गहरीथीं, अगर आज नजर डाल कर देखोगे तो आप को मालुम होगा कि अपरिवर्तित सादृश्य वैसा का वैसा ही है।

(९३) सूंग वंश के सम्राट शान्ति के अभिलाषी थे। तो भी उन के समय में किटन तातार लोगोंने चीन के मुल्क में अपने पैर फैलाने शुरु करदिये थे। आखिर चीन के उत्तर भाग को लूट कर, आजकल जहां राजनगर पेकिन हैं वहां पर अधिष्ठित ताराज नगर का कबजा कर लिया था। इसतरह राज्य के दो टुकडे करने की शर्त पर तय हुआ था। किटन तार्तारोंने खुद जीता हुवा मुल्क अपने ही कब्जे में रक्खा था। किन्तु दो सौ वर्ष पश्चात् (गोल्डन) सुवर्ण तार्तारोने हांक दिथा था। वही सुवर्णतार्तार पहिले किटन तार्तारों के ताबे में थें।

(९४) चीन में पैदा हुए राजपुरुष सैनिक, तत्त्ववेत्ता, कवि और इतिहासकार कलाविदग्ध पुरुष इस वंश में पैदा हो चुके हैं।

उनसब का वर्णन करने लगें तो बहुत से ग्रन्थ भर जावें। कान्फ्यु-शियस का उपदेश और उस का प्रचार इस वंशसे ही प्रस्तुत हुआ है। इस वंश की मनोहारिणी वार्ताएं आगे कहेंगे।

(९५) वेंग ॲन्शह नामक प्रख्यात सुधारक १०१२ सन् में पैदा हुआ था। यौवन में वह तल स्पर्शी अभ्यासी था। उस की कलम कागज पर अनिवार्य गतिसे चलती थी। वह बडा अधिकारी बना था। वह जब ४८ वर्ष का हुआ तव सम्राट का विश्वास पात्र सलाहकार बनाया गया। फिर उसने आश्चर्य-कारक सुधार की परम्परा का आरम्भ किया, उसने कान्फ्युशियस के उपदेश के कितने ही भागों का नवीन और वास्तविक अर्थ कर इसी के आधार पर सुधार की योजना घडी। हॅन वंश के राजाओं के समय में जिसतरह कान्फ्युशियस के उपदेश के अर्थ करने का कार्य विद्वान् लोगों के ही हाथ में था। कान्फ्युशियस के उपदेश का बहाना कर लोग ('महाजनो येन गतः सपन्थाः' वडे लोग जिस रास्ते गये हों पुराने रास्ते पर ही जाना पसन्द करते हैं। इस सुधारक की एक योजना का यह मतलव था कि—कर घटाकर उपज बढाई जावे, देशमें पकनेवाली सब वस्तुओं का गतागत हो ऐसे साधन ढूंढ निकालने। एक हिस्सा सरकार के कर के लिये जुदाही निकाल रखना, फिर प्रान्त के उपयोग में जितना आये उतना अलहदा निकालना। अन्तमें शेष माल सरकार थोडी कीमत से खरीदले की कीमत बढने तक रख छोडे। अथवा जहां उस की आवश्यकता हो वहां

भेज देवे । इस तरह (कृषिकार) किसान को ग्राहक को ढूंढना न पडे, और दलाल का काम तथा बेंचने वाले का काम भी सरकार ही करे, अर्थात् उस को नफा होगा ही। इस योजना का दूसरा भाग इस प्रकार था जमीन जोतने वाले को सरकार अनिवार्य तगावी देवे, और वह माल परकीय समझना ।

(९६) लष्कर के लिये भी एक योजना करस्वरुपमें निकाली थी । जिस कुटुम्ब में दो से अधिक पुरुष हों वह सैनिक रूपेण एक आदमी देवे । घोडेस्वार पलटन के लिये अच्छे घोडे की औलाद मिले इस लिये, प्रत्येक कुटुम्ब अपने घर एक एक घोडा रक्खे । वह घोडा तथा उस का खर्च सरकार ही देगी । दूसरा काम यह किया कि सार्वजनिक बडे मकान बांधने के लिये जबरन् मजूर मंगवाते थे, वह बन्द कर पैसा दे कर काम करना निश्चित किया । एवं सम्पूर्ण राज्य में बडे बडे भंडार स्थापन करवा कर जथ्थाबन्द माल रखवाया जिस से माल लेने देने में खाली रकम पैदा हो ।

(९७) इस सुधारक की योजना में सब से अधिक महत्त्व की बात तो यह है कि जमीन को नपवा कर न्याय पुरः सर विभाग करवाए एवं घर बांधे । इस लिए जमीन के समान चौरस भाग किए गए एवं जमीन के उत्पन्न पर महेसूल डाला गया। परंतु कतिपय कारणों से यह योजना अमल में न आसकी एवं इस सुधारक के विरोधी सब बातों में इस को नीचा दिखाने को तुले हुए थे इस बात में भी वह फल हुआ । आखिर देश में से तांबा बाहर ले

जाने पर ली जानेवाली चुंगी इस ने उठादी परिणाम यह आया कि प्रचलित जो तांबे की मुद्रा थी वह सब गला दीं और उस के ऐसे वर्तन बना दिये जो बिकते या परदेश में भिजवा दिये जाएं इस से देश में घबरहाट पैदा हुई। उसने शेष प्रचलित सिक्कों की एकदम दुगुनी दर कर दी, विद्यार्थियों की परीक्षा लेने की पद्धति में भी सुधार किया, आजतक विद्यार्थियों से उत्तम शैली की आशा रक्खी जाती थी। उसने अब यह ठहराया कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक विषयों का पूरा ज्ञान देना चाहिये। एक चीनी लेखकने लिखा है कि इस सुधार से गांव की पाठशालाओं के विद्यार्थियोंने अलंकार तथा भाषाशास्त्र के ग्रन्थ फेंक दिये, और इतिहास अर्थशास्त्र, भूगोल के मूल तत्वों का अभ्यास करने लगे। वास्तव में आज जो हमें सूझता है वह उस को इतने पहले सूझा था यह आश्चर्य की बात है। वह स्वयं लिखता है कि मैंने स्वयं अनेक विषयों के ग्रन्थ पढे हैं जैसे प्राचीन वैद्यकशास्त्र, उद्भिज-विद्या, कृषिविद्या तथा कपडा सीने की कलाका भी मैंने अभ्यास किया है कान्फ्युशियस का उपदेश यथार्थ में समझने के लिये इस ज्ञान से मुझे बहुत लाभ हुआ है। परन्तु जिस तरह जो महान् पुरुष जिस जमाने में होते हैं उस से वे बहुत आगे बढे हुए होते हैं। इसी तरह का यह सुधारक भी था। इस से यह दरबार की नाराजगी का पात्र हुआ और उस का परिवर्तन दूसरे प्रान्त में कर दिया गया, यद्यपि उस को तुरत ही वापस बुलाया लेकिन उसने एकान्त ही पसन्द किया, पश्चात् उस की

मृत्यु होगई इस तरह उस की योजनाएं सब बदल दी गई थीं।

(९८) इस सुधारक का जीवन चरित्र ११३० से १२०० के समय में उत्पन्न हुए राजपुरुष तत्त्वज्ञानी चूशी के जीवन चरित्र से बिलकुल विपरीत है। परन्तु उसने साहित्य का भण्डार बढाया, अधिकारी रूप में उस का जीवन सफल हुवा, परन्तु उस की कीर्ति उसने कान्फ्युशियस के उपदेश पर जो टीका लिखी है उस पर है। हॅन वंश के नृपति गणों के समय जो उपदेश के अर्थ किये जाते थे, उन को उसने बहुत सा बदल डाला, और नवीन अर्थ किये। इस से आजतक सामाजिक और राजकीय नीति का मार्ग था उस में एक तरह की क्रान्ति उत्पन्न कर दी। ' सब अर्थों में संगति रहे ' इस सिद्धान्त के अनुसार वह अपने उद्देश्य के पूरा करने का मथन करता था। इस शब्द का एक स्थान पर एक अर्थ और दूसरे जगह पर दूसरा अर्थ है ऐसा वह न मानता था। तब से चूशि के मतानुसार ही कान्फ्यु-शियस के सूत्रों का अर्थ होता है।

(९९) सुशिक्षित चीनियों में जडवाद का जो मसला चल रहा है उस का एक मात्र कारण इस सुधारक की योजना का ही परिणाम है। जिस प्रकार के ईश्वर को कान्फ्युशियस मानता वह प्रवृत्तिमय नहीं पर निवृत्तिपरायण ईश्वर था। इस की तुलना बाइबल के ' साम्स ' गीत में वर्णित ईश्वर के साथ हो सकती है। प्राचीन युग में जिस को मनुष्य के समान किया गया है। चूशियोंने ईश्वर संबंधी इस कल्पना का खण्डन किया था। उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि चीनी भाषा में जो

ईश्वर शब्द का प्रयोग किया जाता है उस का अर्थ 'सत्य का तत्त्व' ही है। अर्थात् ईश्वर एक तत्त्व है बुद्धि अथवा शास्त्रीय तर्क की कल्पना के बदले एक मात्र वृत्ति पर से ही यह कल्पना की गई होनेसे इस के स्वीकार का सम्भव लेश मात्र भी न था। वस्तुतः सामान्य लोग जिस अर्थ में धार्मिक शब्द का व्यवहार करते हैं वैसा चूशी तो धार्मिक था ही नहीं अलौकिक एवं चमत्कार की इन्द्रियातीत बातें उसे नितान्त भी अच्छी नहीं लगती थीं। कुछ काल तो बौद्ध धर्मने उस पर छाया डाली थी, परन्तु पश्चात् उसने उस को नमस्कार कर उसने कान्फ्युशियस का प्राचीन विचार और सिद्धान्त स्वीकार किया अत एव अपनी तैयार की हुई नई योजना में उसने अलौकिकता एवं असम्भव वस्तुओं का वहिष्कार बुद्धिमत्ता के साथ कर दिया था, उसने अपनी नीति विषयक योजना कान्फ्युशियस के मतानुसार ही रची थी। ईश्वर का जो अर्थ उसने किया था, अन्ध श्रद्धा से लोग वैसा ही मानते आ रहे हैं।

(१००) चूशी की मृत्यु के पश्चात् उस के शवकी पालकी जमीन से तीन पाद ऊंची आकाश में खडी रही थी, उस का दामाद पास आ के घुंटन टेक कर बैठा था, और जो महान् सिद्धान्त उसने अपने जीवन में प्रवृत्त किये थे, वे सब चूशी के आत्मा को याद कराए फिर वह पालकी जमीन पर धीरे धीरे उतर कर उस से लग गई थी।

पांचवां प्रकरण

'बालक और स्त्रियां'

(१०१) चीनियों को जानवर और पक्षियोंका बहुत शौक है। वे प्राणियों पर साधारण तया दया रखते हैं तो भी जानवरों पर क्रूरता के अनेक दृष्टान्त बनते हैं।. लेकिन दया की भावना निज की है नकि वहां के कानून की। प्रथम तो जानवरों पर जुल्म करने का कोई कायदा नहीं कदाचित हो तो भी देख रेख कार्य कोई नहीं करता। चीन के अनेक स्थानों पर भिन्न भिन्न प्रकार के नाना पक्षी दृष्टिगोचर होते हैं। किसी तरह का कलरव अथवा संगीत करनेवाले पक्षी क्वचित् ही होते हैं। नदियों के किनारे पर अनेक तरह की मछलियां दीख पडती हैं। शेर भी मिलते हैं। चीन के नैर्ऋत्य कोने में चीता हाथी रींछ गेंडा आदि दीख पडते हैं। उसीतरह लोमडी भेडिया आदिभी दीख पडते हैं।

(१०२) चीनी अपने बालकों से बहुत प्रेम करते हैं साधारणतयः कुटुम्ब में बाप कठोर माना जाता है। कान्फ्युशियस के जमाने से यह उपदेश चला आता है कि बाप लडके को अनुचित लाड न लडावें, बल्कि समय पर यथायोग्य ताडन करे, पतली छडी का कभी कभी अवश्य उपयोग करते हैं। यद्यपि बालक पर चीनीओं का पूर्ण अधिकार है तो भी ताडन

के अवसर पर पिता सादा ही दण्ड देते हैं। कुटुम्ब में मा बहुत गरीब नरम अन्तःकरणवाली और उदार स्वभाव की मानी जाती है। यहां तक कि यूरोपियन लोग भी अपने बालक इन स्त्रियों को सौंप देते हैं। वे परदेशी के बालकों पर बहुत प्रेम करती हैं। परदेशी भी उन का बहुत उपकार मानते हैं। एक दृष्टान्त है कि पिता के न होने पर एक माता के सिर पर दण्ड देने का काम आ पडा था। उसकी मां कभी कभी उसे पीटती, इस लिए लडका न रोता परन्तु माता वृद्ध होने से सख्त मार नहीं मार सकती थी, इस लिये वह रोया करता था।

(१०३) चीनी अपनी लडकियों को बाल्यावस्था में ही मार डालते हैं ऐसा कोई२ उन पर आरोप रखते हैं वास्तवमें यह बात सरासर झूठ है। आजसे ५० वर्ष पहले यह माना जाता था कि लड़की का पैदा होना अच्छा नहीं, इसी लिये जन्मतेही वा पीछे वे उनका खात्मा ही कर डालते (असल बात यह है कि अपने वंशकी वृद्धि करनेवाले होने से तथा पूर्वजों को योग्य समय संतोष देने वाले होने से स्वभावतः लड़कों को अच्छी दृष्टिसे देखते हैं। इस के विपरीत कन्याओंको शादी के अलावा दहेज भी खूब देना पड़ता है। वह बडी रकम पिताके घर ले जाती हैं। इस लिये वहां एक कहावत है कि जिसके घरमें ५ कन्याएं हों उसको चोरकी जरूरत नहीं। हंसी में घर की लड़कीको 'अढ़ाई हजार तोला सुवर्ण' अथवा पैसा खोनेकी

पोटली कहते हैं। सचमुच प्रत्येक कुटुम्ब में लड़के की कीमत विशेष मानी जाती है, यमराज किंवा रोग वा मृत्यु के देवताओं को धोखा हो जावे, इस कारणसे छोटे लड़कों को लडकियों का लिबास पहिरा देते थे, जिससे वह समझें कि ये लडकिया हैं।

(१०४) कन्याओंके मार डालनेका रिवाज चीनमें है ऐसी अफवा कुछ दिन पहले उडा करती थी परन्तु यह बात किसी अनुभवी परदेसीसे पूंछी जाए कि भाई तुम जिस प्रान्त में रहते थे वहां ऐसा कुछ दीख पडा तो वे कहते हमारे प्रान्त में नहीं फलाने२ प्रान्तमें, इस तरह पूंछने से मालूम हुआ कि किसीने आज तक अपनी आंखों से नहीं देखा। यह बात युक्तिसेभी खण्डन की जा सकती है। जिनका चीनी लोगोंसे कुछभी परिचय है वे जानते हैं कि जब लडका १८ वर्षका होता है तब उसको स्त्री ला देते हैं एवं धनवान् चीनी विवाहिताके सिवाय एक रक्षिता को भी रखते हैं। चीनका सम्राट तो अधिकसे अधिक ७० तक रख सकता है, इस तरह विचार करें कि प्रत्येकको एक स्त्री बहुतों को दो भी हो और कन्याओंको निर्माल्य समझ मार डालते हों तो दुनियामें लडकियों की अपेक्षा लडकोंकी संख्या अधिक होती है। मांबाप का लडकियों पर यद्यपि प्रेम होता है तो भी लडकियों को चौराहे पर बेच सकते हैं। किसी किसी समय कन्याएं दूसरे कुटुम्ब में बेचदी जाती हैं वहां उन को कुलवधू रुपेण तैयार करने

की तालीम मिलती है अक्सर उन को दासी बनाने के लिये तैयार करते हैं यह एक प्रकार की गुलामी है पर उस में यह शर्त होती है कि लडकी विवाह योग्य हो तब उसकी शादी कर देनी चाहिये। चीन का कायदा भी इस के अनुकूल ही है। कायदे से विरुद्ध पैदा हुए बालकों को रक्षा करने के वास्ते जिस तरह अनाथ आश्रम आदि बना कर यूरोप हिंदुस्तान आदि में रक्षा करते हैं, इस तरह का चीन में कुछ नहीं है। शादी में तलाक देने की बाबत में भी ऐसा ही है। चीन में राजनियमानुसार पतिसे छुट्टी नहीं मिल सकती, कभी कभी वे अपने पीहर में जाकर रहती है तो भी पति कानूनन अपने घर ला सकता है। इतने परभी वे पति का घर त्याग कर अपने पीहर में ही रहती हैं। क्योंकि वे यह समझते हैं कि शायद इस के पति का कसूर हो, एवं वह समाज में अपनी मान हानि न होजावे इस का भी ध्यान रखे-गाही, और उनको एक तरह का डर भी रहता है। क्रुद्धा स्त्री के अपमानित संग वैर निर्यातन किए बिना न रहेंगे। बहुएं जब सुसराल जाती हैं तब उन से नौकरनी की तरह काम लिया जाता है तथापि उनके संबन्धियों से डर कर कोई सख्त जुर्म नहीं कर सकती, तब असन्तोषकारक किंवा संसार दंपती संबन्ध से छूट-जाना अच्छा है। एक यही रस्ता खुला हुआ है जिस से वह अपने ऊपर अपकार करने वाले का बदला चुका सकता है। असन्तुष्ट पक्ष आत्महत्या कर सकता है। उस को धर्म कायदा वा

नीतिका कोई बाध नहीं है। ऐसी मान्यता होनेपर भी मनुष्य का जीव पवित्र और श्रेष्ठ मानते हैं। इससे आत्महत्या करने वाला अपने शत्रु को नुकसान तथा दुःख पहुंचाता है तथा धन भी नाश को प्राप्त होता है। एवं आत्महत्या करने वाले के कुद्ध संबंधियों के मन अगर धनादि देकर सन्तुष्ट न कर लिए जावें तो यथा समय उन को दण्ड भी प्रदान करते हैं।

(१०५) चीन में निम्न लिखित सात कारणो में अन्यतमसे भी पुरुष अपनी स्त्री को छोड सकता है १ वन्ध्या हो। २ व्यभिचारिणी हो ३ सासू ससुरकी आज्ञा न मानती हो ४ निंदा करती हो ५ स्त्री अपने पति के घरसे वस्तुएं पीहर ले जाती हो ६ ईर्षा करती हो ७ कोढी हो। परन्तु इस के तीन अपवाद हैं। (१) सास ससुरकी मृत्यु होगई हो, और उनके लिये नियत की हुई शोक की मुदत हो गई हो (२) शादी के बाद पति धनवान् हो गया हो (३) स्त्री के पीहर में कोई न हो ऐसी स्त्री को उपरोक्त कारण होने पर भी नहीं निकाल सकते।

(१०६) राजनियमानुसार भी स्त्री को पुरुष की अपेक्षा बहुत सहुलियत दी है। राजद्रोह और व्यभिचार को छोड़ किसी अपराध होने पर भी उस को कैद में नहीं रख सकते। बांस की लकडी की सजा से वह सदैव मुक्त है। वृद्ध, बालक, रोगी, भूखा, नंगा, जिस को लडाई झगडे में कुछ लगाहो, ये सब

लकडी की सजा से मुक्त हैं । एक छोटी सी पुस्तिका चीन में लिखी गई है, उस में फौजदारी न्यायाधीशों को सलाह दी है। उस में ऐसा लिखा है कि अमुक अवस्था में गुन्हेगारको शारीरिक दण्ड देना नहीं चाहिये । उदाहरण के तौर पर मुलाजिम वा न्यायाधीश गुस्से में हो, आवेश में हों अथवा शराबी हो उस समय शारीरिक सजा मौकूफ रक्खी जाती है ।

(१०७) राजनियमानुसार शारीरिक दण्ड केवल बांस की लकडी से ही हो सकता है । कैदी को दण्ड देने किंवा बद-माश साक्षी से सच्ची बात निकालने के वास्ते इस तरह की सजा को बहुत दिनों से जुल्म समझा जाता है । वस्तुतः जिस तरह जमाना बदलता जाता है उसी तरह संजोग भी बदलते जाते हैं इसी तरह दण्ड का प्रकार भी बदलता चला जा रहा है । इस से न समझना कि पाश्चात्य देशों में जिस को जुल्म कहते हैं वह चीन में कभी हुआ नहीं इस संबंध की वास्तविक घटना इस प्रकार है कि उपर जिस प्रकार के जुल्म का वर्णन किया है उसके सिवाय दूसरी तरह का जुल्मभी कानूनसे निषिद्ध होनेसे कोईभी फौजदारी न्यायाधीश इस तरह का रास्ता पकडताही नहीं, क्योंकि कभी यह बात सिद्ध हो जावे तो वह नौकरीसे एकदम बरखास्त कर दिया जाव, इस लिये जा संभवित नामांकित गृहस्थ होते हैं और मित्रों का भी अच्छा सहारा होता है ऐसे साधारण नागरिक को ऐसे जुल्म का किसी प्रकार का डर नहीं होता, परन्तु जो राजद्रोही लुटे-

रे हैं या दूर के प्रान्तों के रहने वाले बुरे कार्यों में मशहूर होते हैं। देश के बाहरके अथवा ग्रीष्म सदन, १८६० के कैदी हों तो उन के लिए भिन्न रस्ता है। ऐसे लोगों को सख्त सजा दी जावे तो भी फौजदारी न्यायाधीश को किसी प्रकार की भी हानि उठानी नहीं पडती।

(१०८) आरोपी से अगर उस का अपराध मंजूर करवाने के लिए अगर लकडी से सजा दी जावे तो सजा करने वाले (फौजदार न्यायाधीश) को ही नालायक समझते हैं यह कुछ पढा लिखा नहीं, एवं निरंकुश रीति से उसका तिरस्कार करते हैं। उसका मजाकभी करते हैं, तब उस न्यायाधीश को मानव स्वभाव का कुछ कुछ ज्ञान आता है, एवं अनुभव भी मिलता है। तब कैसे भी धूर्त साक्षी तथा झूठे वादी प्रतिवादियों को भयंकर होजाता है। तब उस को बांसकी लकडी की बिलकुल भी जरूरत नहीं पडती, ऐसे मुत्सद्दी धूर्त न्यायाधीश बिना सजा के ही किसी तरह कबूल करवा लेते हैं। इसी तरह की एक घटना का हम यहां उल्लेख करते हैं जिस में कानून के अन्दर रह कर भी काम किया गया था। एक फौजदारी न्यायाधीश था, उस के सामने एक खून का मुकदमाथा। आरोपी बहुत से थे। बहुत दिनों तक कार्य चलने पर भी मुद्दे की बात न्यायाधीश के हाथ में न आई तब उसने उनसे कहा कि सच्ची बात जानने के वास्ते मैं भूत का सहारा लूंगा। तत्पश्चात् उसने अपराधियों को काले कपडे

पहनाये। एक गहरे गढे में गया, उसने उन को चारों तरफ इस तरह खडा रक्खा कि जिस से उन के मुख दिवाल के सामने रहें, फिर सब आरोपियों से उसने कहा कि याद रखना कि तुह्मारा अपराध ढूंडने को एक फिरिश्ता (देवदूत) आएगा, और जो सच्चा अपराधी होगा उसकी पीठपर एक चिन्ह करेगा। उस कमरे के दरवाजे बंद कर वह बाहर गया, कमरे में अंधेरा छागया, थोडी देर में दरवाजे खोले गए, सब आपराधियों को बुलवाया, तब मालूम पडा कि एक मनुष्य की पीठ पर सफेद निशान होगया है मतलब यह है कि उस न्यायाधीश ने वह भीत कलई से पुतवा दीथी पीछे की तरफ कोई देखता है कि नहीं इस ख्याल से अपना शरीर भीत की तरफ कर के वह आदमी खडा था। इस से उस के कपडे सफेद होगए थे, फिर उस को पकड लिया।

(१०९) सौ सौ बेंत मारने की सजा घृणा उत्पन्न करने वाली निर्दयताकी निशानी मानी जाती है। बडे अपराध में ही यह सजा की जाती है, शांघाई के सुधार के महल में यह नौकर था उस ने इस विषय में सूक्ष्म निरीक्षण किया था, बल्कि सरकार की तरफ से यह काम उसे सौंपा गया था उसने अपने निवेदन में यह साफ तौर से लिखा है कि बांस की लकडी की सजा कोई जबरदस्त नहीं गिनी जाती सौ बेंत धीरे से ही मारे जाते हैं। पश्चात् अपराधी के पीठपर किसी प्रकार की निशानी नहीं

रहती, तो भी जिस समय दण्ड दिया जाता है उस समय वह खूब चिल्लाता है धनवान् अपराधी कैदखाने के अधिकारी के साथ अपना पहिलेसे ही बंदोबस्त कर लेते हैं इस तरह जेल के अधिकारिओं को घूस खाने की आदत पड गई है, और उन को भी कोई बडी रकम नहीं मिलती, और अपराधी खुश होते हैं। बांस के मार की सजा इतनी कठोर निर्दयता पूर्ण है इस से अनुमान निकलता है कि पाश्चात्य देशों की अपेक्षा चीनियों के अन्दर भूत दया पीछे ही है। १८११ के मे मास के टाइम्स में लिखा था कि डाक्टर मूर के कैद खाने में तीन फ्रान्सीसी कैदी थे, उन को वहां से भाग जाने दिया। तदर्थ नॉटिंग हाम के लश्करी तीन आदमियों को नौ सौ बेंत की सजा फर्माई गई, बचाव के वास्ते लश्करी टुकडी के सामने ४५० बेंत मारे भी गये। १९११ के जनवरी मास की १ तारीख में कोई कंचुकी राजपुत्र के मारने का प्रयत्न करता हुआ पकडा गया, उस को मार मार कर मार देने की सजा फर्माई गई, क्योंकि कानून की श्रेष्ठता साबित करने के लिए ऐसी घातकी शिक्षा की आवश्यकता है ऐसा चीनी मानते हैं परन्तु ८० बेत मारकर हमेशा के लिये उत्तर मंचूरिया में देश निकाल दिया गया।

(११०) चीनकी पक्की उमर की स्त्रियोंकी हिन्दुओंकी माफक कुटुम्ब पर बडी हुकूमत होती है। पुरुषों पर भी उसका रुवाब पडता है। मानो वह घरकी महाराणी है। पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियां

अधिक बुद्धिमती होती हैं। अगर छोटी उमरमें स्त्री विधवा हो जावे तो उसके भविष्य का सुख थोडा हो जाता है। विधवा दुबारा शादी करें यह बात हिन्दुस्तानकी तरह चीनमेंभी अच्छी नहीं समझी जाती। परन्तु ऐसी विधवा शादी न करे तो समुद्रमें सुकान बिना की नौका की माफक उसकी दशा हो जावे और उसकी निन्दा करते हैं, परन्तु बहुतसी निडर स्त्रियां लोगोंकी परवाह न कर फिरसे शादी करती हैं। कहावत है कि आकाशसे मेघकी वृष्टि रोकी जासके तब विवाहकी इच्छुक विधवा को रोक सकते हैं।

(१११) चीन की स्त्रियों के पैर कृत्रिम रीतिसे बहुत सुन्दर और छोटे बनाये जाते हैं, उन्हें सुवर्ण कमलकी उपमा देते हैं। छोटे पैर करने का रिवाज दशवीं शताब्दीसे प्रारम्भ हुआ है। यह रिवाज बहुत पुराना है ऐसा बहुत से लोग सिद्ध करना चाहते हैं। मांचु घरानेकी स्त्रियों के (जो कि शाही घराने की हैं) यहां यह रिवाज नहीं है। इसी लिये रानियोंके पैर छोटे नहीं हैं। पर्वतोंपर रहनेवाली स्त्रियां कन्तान बंधकर तथा उस के आसपास की मल्हाहों की स्त्रियों के पैर स्वभाविक जितने होने चाहिये उतनेही हैं। इसी तरह १३ वीं शताब्दी में उत्तर चीनसे हाका नाम की जाति निकलकर दक्षिण में आबसी है, उनके पैरभी कृत्रिम नहीं है। इस से धनवान् लोगों की स्त्रियां अपना पैर दबाकर रखती हैं ऐसा कहना सब के लिये उचित नहीं है। चीनी लोग यहां वहां के फिरनेसे बच जावें इस लिये छोटे

पैर कर के स्त्रियों को लंगडा करते हों तो भी छोटे पैर वाली स्त्रियांभी भारी बोझा ले जाती दीख पडती हैं। ये खेतों में काम करती हैं, तथा दाई के काममें भी होशियार होती हैं। छोटे पैरवाली स्त्रियोंके बालक सुन्दर और बलवान् होते हैं यह भी ठीक नहीं, उसका कारण दूसराही है। सुन्दर वस्त्र पहनकर सज्ज हुई कन्या अपने तीन तसु जितने छोटे पैरोंसे इधर उधर लचके उसकी शरीरके नाजुकपनेका व सौन्दर्यका ख्याल आवे, ऐसे मोहक साधनों से प्रत्येक चीनी लुब्ध हो जाता होगा ऐसा तो सब कहेंगेही।

(११२) दसवीं सदीमें पैर छोटे और संकुचित करनेका रिवाज दाखिल हुआ था, उस समय की स्त्रियां यह चाहती थीं कि हमारे पैर बहुत छोटे होने चाहिये। पर आजकलकी तरह पैरको बांधके रखती थीं या नहीं यह संदिग्ध है, पैर बांध कर रखने का रिवाज जोकि आजकल प्रचलित है, उससे छोटी लडकियों को बहुत दुःख होता है। इस विषयकी बात करते हुएभी वे शर्माती हैं। अपने नंगे पैर किसीको बतलानेके वास्ते वे खुश नहीं होतीं, परन्तु माञ्चु स्त्रियां अपने पैर नंगे रखकर गांवमें खूब फिरती हैं, कन्तान तथा आसपासके गावों के मल्लाहोंकी स्त्रियां मोजा या जूता तक कभी नहीं पहनतीं।

(११३) चीनी सिरपर बडीसी शिखा रखते हैं, आज आगे बढे हुए सुधारक चोटी कटवानेकी चेष्टा कर रहे हैं। १६४४ में तातां-

रोंने जब चीनपर विजय प्राप्त की तब यह रिवाज उन्होंने दाखिल किया। इससे उनका यह उद्देश न था कि पराजित जाति का चिन्ह यह है, किन्तु पराजित जाति शुद्ध चीनी तथा तार्तारों में कोई भेद भाव न रहे। जब यह फर्ज डाला गया एमोयमा, स्वेटोमें और इन के पडोसियोंने बहुत विरोध किया, परन्तु बलात्कारसे अमल कराया गया, तब उन्होंने चिढके अपने बाल माथे पर लपेट लिए, और उसपर पगडी पहरने लगे, अबभी चीनके उन प्रान्तोंमें ऐसाही रिवाज है।

(११४) बीचमें से सिर मुंडवाके सिरके पीछेके बाल लंबे रखवाये जाते हैं, यह रिवाजभी माञ्चुलोगोंनेही दाखिल किया था, शौर्य बतलानेके लिये घोडा बहुत उपयोगमें आता था, इसी लिये उसे कृतज्ञताके साथ प्रेम करते थे। इसीके उदाहरण से सिर के आगेके मुंडवाके पीछेके बाल रखते थे। आजकल के अमलदारों के पहरने के कपड़े की बांहेंभी झूलती रहती हैं इसका आकार घोडे के तोबडे जैसा होता है।

(११५) चीन के विजेता माञ्चुओंने बहुत से शुद्ध चीनीओं के रीतिरिवाज उन को पालन करने दिये हैं। मांचु स्त्री और चीन की स्त्री के लिबास में भेद होने पर भी वह उन को पहनने दिया है, हां पुरुषों के लिबास में अवश्य साम्य है। परन्तु बारीकी से देखने पर ही नजर में आता है! चीन के विजय सम्पादन करने बाद भी पैर बांध के छोटे करने के रिवाज

बदलने का प्रयत्न नहीं किया, लेकिन १६४४ में ऐसा आज्ञा दी गई थी कि कोई भी स्त्री पैर बांध छोटा न करे, पर चार वर्ष के बाद यह आज्ञा रद्द कर दी गई। उस समय की अवस्था का इस से अनुमान हो सकता है। परन्तु अब चीन में जागृति हुई है। नवीन युग का प्रारम्भ हुआ है। चहुं ओर से आशा की जा रही है कि यह निगोडी चाल अब शीघ्रता से बन्द हो जावे। पर यह डर है कि सब सुधार प्रारम्भ में थोडे वर्ष चलते हैं फिर स्वयमेव बन्द पड जाते हैं। पर पैर बांधने का रिवाज सदा के लिये बन्द पडे इस के लिये कुछ समय अवश्य लगेगा। हां सरकारने यह फरमान किया है कि जिस कन्या के पैर बंधे हों उस को पाठशाला में न दाखिल करना।

(११६) चीनीओं का चोटी रखना यह असली रिवाज नहीं है। हां जापानियों के माफक परदेशी पोशाक स्वीकार करते अचकाते हों तो असली शुद्ध चीनीओं का ही लिबास पहने और चोटी निकाल डालें। यूरोपीय पोशाक पाहरने के पहिले जापानी चीन के असली पेहरवेश का अनुकरण करते थे, इ. स. ६०० से ९०० तक यही चीन का पोषाक था। हां चोटी निकाल दी जावे, तो छोटी सी आपत्ति जाती रहे। बोझा उठाने के समय बडी तकलीफ देती है। वे ऐसे समय चोटी को लपेट कर गांठ बांध लेते हैं आजकल चीन में मिल आदि यंत्रों से काम होने के कारण यह रिवाज स्वाभाविक जैसा हो गया है। लेकिन उस समय उस

मालिक आवे तो चोटी छोड कर लटकती रखनी पडती है परदेशी शेठको हमेशा यह मान नहीं देते। इसी लिये चीनमें चोटी कटवाने का बडा प्रयत्न हो रहा है उसके अनेक कारण हैं। बुद्धिमान् चीनी समझ चुके हैं कि चोटी से केवल सिर पर एक बोझही उठाना पडता है, एवं यह नये जमाने के अनुकूल भी नहीं है। चोटी पर ही परदेशी उन का मज़ाक करते हैं। राजनीतिज्ञ चीनी यह अन्तःकरण से चाहते हैं कि यह परदेशी मान्चु तार्तार का राज्य जाता रहे और देश में शुद्ध चीनी सम्राट का राज्य होवे तो अच्छा। मान्चु लोगों के पैर निकालने का सबसे पहला उपाय चोटी निकालनाही है।

(११७) ध्यान से देखने पर मालूम होता है कि राजकर्ता मांचु लोगोंने चीन की प्रजा को किसी तरह का दुःख न पहुंचे इस के लिए बहुत प्रयत्न किए हैं। परदेशी राज्यकर्ताओंने चीन की स्त्रियों को उनका पोशाक पहिनने दिया है। उसी तरह स्त्रियां पुरुष के मरने के बाद चीन के असली सम्राट की पोशाक पहन कर गाडने का हुकुम दिया है। इस के साथ यह प्रतिज्ञा भी उनसे ली है कि चीनी किसी स्त्री को भी नायिका के रूप में राजमहल में न रक्खेंगे। यह अन्तिम चीनीओं पर मेहरबानी कर के शर्त मानी गई है। तोभी धूर्त मांचु अन्दर से डरते रहते हैं, कि अगर चीन की स्त्री रणवास में आवेगी तो अवश्य राज खटपट में भी भाग लेगी, इस लिए उसको बाहर ही रखते हैं।

छठा प्रकरण

साहित्य और विद्या

(११८) अनेक अन्य विषयों की अपेक्षा चीनीओं को साहित्य और विद्या इन दो विषयों पर अधिक पूज्य भाव है। युद्ध उन को नितान्त अप्रिय है। उनका तत्त्वज्ञानी मॅन्शियस ऐसा कह गया है कि 'पवित्र न्याय युद्ध की जैसी और कोई वस्तु नहीं है। हम इतना ही कह सकते हैं कि कई अन्य युद्धों से यह युद्ध ठीक है' चीनीओं को व्यापार और कलाओं का बहुत शौख है। चीन में प्राचीन एवं अर्वाचीन समय में भी उत्तम सैनिक पैदा हुए हैं और होते भी हैं। वास्तव में लष्करी अस्त्रशस्त्रों का उपयोग वहां थोडे ही समय से शुरु हुआ है। वहां एक कहावत है कि 'अच्छा लोहा कील के लिए नहीं, और अच्छे आदमी सैनिक बनने के लिये नहीं होते एक दूसरी कहावत है कि कलम की नोंक से लष्करी अमलदार झट काबूमें हो जाता है इस के साथ यह बात भी मानी जाती है कि 'युद्ध से विमुख लोग देश को शान्ति देते हैं एवं युद्धोपजीवी देशकी रक्षा करते हैं।

(११९) चीनीयों ने अपने बालकों को आजतक लश्करी तालीम नहीं दी है, परन्तु अब देने लगे हैं। वे सदैव यही चाहते रहे कि परम्परासे चला आया साहित्य का ही अभ्यास करें। स्पर्द्धा से बडी परीक्षामें पास करना और बडे ओहदे की नोकरियां

प्राप्त करनी । चीन में जो स्पर्द्धा की परीक्षायें होती है उनको हास्यस्पद बनाने का बडा प्रयत्न आरंभ हुआ है । उन परीक्षाओं में कान्फ्युशियस के उपदेश से ही विषय पसन्द किये गये हैं । इस के सिवाय परीक्षा के विषयों मे इतिहास नीति की संपूर्ण योजना, (जिसका आरंभ कान्फ्युशियस ने किया, तथा जिसको मॅन्शियस ने फलपुष्प समन्वित किया) ३००० वर्ष से भी पहिले के गीत, और धार्मिक क्रिया, निबंध लिखने का तथा काव्य बनाने की शक्ति इतने विषयों का समावेश होता है । इंग्लेण्ड में विलियम पिट्ट तथा और पुरुषों के लायक समझा जाता, जिस में ग्रीक पुस्तकों के रचने की शक्ति तथा पेलोपोनेशियन के विग्रह का परिचय अवश्य समझा जाता, जिस से कि राज पुरुष यथायोग्य आगे भी बढ सकते, उसी तरह का यह चीन का भी शिक्षण था वस्तुतः समय पर नामांकित राजपुरुष इसी शिक्षणने पैदा किये हैं । कदाचित् विग्रह मे पीछे हों, लेकिन सूक्ष्म राजनीति के तज्ञ युरोपियनों से कम नहीं थे ।

(१२०) चीन में परीक्षा स्पर्द्धा की जो पद्धति है वह राज्यकारबार में एक भूषण रूप है । राज्यकारबार के दूसरे महकमें मे संदेह को स्थान भी हो लेकिन परीक्षा तो प्रामाणिक तया ही ली जाती हैं तो भी समय पर उत्तीर्ण उमेदवारों में नाम घुसेडने का प्रयत्न यथा समय किया है । इस में जोखम बडा भारी है क्यों कि पकडे जाने पर मौत की सजा दी जाती है ।

(१२१) परीक्षाएंभी बडी सख्त ली जाती हैं, परीक्षक और परीक्ष्य दोनों को ही सख्त पडती हैं। प्रत्येक प्रान्त में तीसरे वर्ष ही परीक्षा ली जाती हैं। परीक्षा लेने के लिये खुद पेकिन से बादशाही फरमान से अध्यक्ष भेजा जाता है। वह जहां जाकर उतरता है वह स्थान ताले से बन्द कर दिया जाता है क्योंकि परीक्षा में बैठनेवालों के मित्र उस बडे अध्यक्ष से न मिल सकें, परीक्षा में आयुका निश्चय न होने से १८-१९ वर्ष के लडकों के साथ बडी उमर के भी लोग बैठते हैं। एक ७२ वर्ष की उमर का आदमी भी इस परीक्षा में पास हुवा था, कितने ही हरसाल उमेदवारी किया करते हैं, अन्त में दुःखित होकर बुरी समझ छोड देते हैं।

(१२२) परीक्षार्थी परीक्षा के दिन नियत समय से भी पहले इकट्ठे होने लगते हैं। फिर परीक्षा मंडप के दरवाजे खोल दिये जाते हैं, और जिनको प्रवेश करने का हक होता है उनके जोर से नाम लेकर पुकारते हैं, जिस का नाम लिया जाता है वह उत्तर देता है। वहां के नौकर उस के हाथ में कागज का पुलिन्दा रख देते हैं उस पर उस परीक्षार्थी का अनुक्रमांक लिखा हुआ होता है। परीक्षा के मंडप के विभाग किये रहते हैं, और उस विभाग में भिन्न भिन्न श्रेणियां होती हैं। उन श्रेणियों में अनुक्रमांक लगे रहते हैं। अपना अनुक्रमाङ्क तलाश कर के उमेदवर वहीं बैठता है। लिखने के साधन खाने के लिए साथ लाए हुए भोजन के पात्र, कभी कभी विद्यार्थी इस पात्र में पुराने

कागज छिपा लाते हैं, तथा कांख में भी छिपा लाते हैं, सो सबजांच करलेते हैं, फिर वह बडा अध्यक्ष धूप करता है, सब दरवाजे बन्द कर दिये जाते हैं। जीवित या मृत किसी को अन्दर से बाहर अथवा बाहर से अन्दर जाने नहीं देते इस तरह तीन दिन तक परीक्षा देने वाले को मण्डप के अन्दर ही रखते हैं, तीसरे दिन के अन्त में परीक्षा का पहिला भाग समाप्त हुआ समझा जाता है। उस दिन शाम को विद्यार्थियों को छोड देते हैं। कहने का मतलब यह है कि इसतरह से चारों तरफ से बन्द थोडी सी जगह में १०–१२ हजार परीक्षार्थिओं को तीन दिन और दो रात तक ठूस दिया जाता है, इस से किसी किसी परीक्षार्थी की मृत्यु भी हो जाती है। उस के शव को दीवारपर चढा देते हैं। बाहर का सब संबन्ध बन्दकर दिया जाता है। परीक्षक अथवा अध्यक्ष मरजावे तो उसका शव भी भींतपर टांग देते हैं, उस समय उस का सहायक उस का काम करता है। उस की मंजूरी भी खुद सम्राटद्वारा मिली होती है, एवं वह मुख्य परीक्षक के साथ पेकिन से हो आता है।

(१२३) इसतरह तीन तीन दिन तक एक मकान के अन्दर बंद होकर तीन बार एक समयावच्छेदेन परीक्षा देने से मस्तिष्क को बहुत खराबी पहुंचती है। एवं घबराकर परीक्षार्थी लिख नहीं सकते बल्कि कई एक के प्रश्नपत्र बिलकुल सफाचट्ट ही रहते हैं, एक परीक्षार्थीने प्रश्नपत्र के उत्तर में अपने मृत्युपत्र

की नकल कर दी थी। एक समय तो ऐसा हुआथा कि मुख्य परीक्षक का ही दिमाग बिगड गया था, उसने बहुतसे उत्तर पत्र ही फाड डाले, और उस के पास जो आता उस को कचकचाकर काटने और मारने लगा। तब बलात्कार उस को आधीन कर उस की कुरसी से उस को बांध दिया था। एक समय एक उमेदवार स्त्री के कपडे पहन मुंह पर पावडर लगाकर आया था, पता लगने पर उस को निकाल दिया तब वह अपने घर चला गया था।

(१२४) अन्य देशों की अपेक्षा चीन में पागलों की संख्या बहुत कम है, परन्तु जिनको चित्तभ्रम हुवा है ऐसे सरकारी नौकरी में प्रवेश करने के लिये पागलों की बहुत संख्या है। इन को रखने के लिये पागलखाने नहीं हैं। इस लिये संख्या में ये कितने हैं यह नहीं कह सकते। परन्तु इतनी बात तो अवश्य है कि चीन में लूले लंगडे क्वचित् ही गलियों में घूमते दीख पडते हैं उसीतरह पागल भी समझने चाहियें।

(१२५) परीक्षा में किसीतरह की अप्रामाणिकता न हो जावे इस लिये, पेपरों की नकल लालशाही से करलेते हैं, और परीक्षकों को वही नकल भेजी जाती है जिस से कोई वसीला या रिश्वत नहीं चल सकती। राजतन्त्र में भी वे लोग रिश्वत नहीं खाते। हां यह बात तो निर्विवाद है कि परीक्षा लेने की पद्धति में कोई भी धोखा नहीं होता।

(१२६) परन्तु अब चीन की परीक्षा की पद्धति में परिवर्तन कौशलसे किया जावे तो चीनीओं का चारित्र्य अभी और विशुद्ध

हो सकता है। कान्फ्युशियस का उपदेश भी श्रेष्ठ दर्जे की नीतिमत्ता सिखलाने वाला होने से उन में इतनी बडी एकता, संगठन, तथा स्थिरता आई है, जो कि सम्पूर्ण जगत की प्रजा को अनुकरणीय हैं। युरोप के लोगों में विज्ञान के शोधके साथ उस की तालीम से आकाश और कलाओं को अपने वशमें ला सके हैं। जड प्रकृति के भिन्न भिन्न स्वरूपों को उपयोग में लाके अनेक तरह के दुःख दूर करने में एवं अपने पर आया हुवा भार उतारने का जोर शोर से काम चल रहा है। परन्तु जो नीति मनुष्य को अपने पडोसीके प्रति कर्तव्यका निरूपण करा रही है इस की न्यूनता इस में दीख पडती है। भौतिक विज्ञान की उन्नति की दृष्टि से देखें तो चीनी बहुत पीछे हैं लेकिन यह तो निर्विवाद है कि पाश्चात्य लोग पौर्वात्यों को १५० वर्ष पीछे छोड गये हैं। अगर पंद्रहवीं सदी का इतिहास देखें तो मालूम होगा कि युरोप की अपेक्षा सुधार में उस समय बढा चढा था, उस समय का प्रख्यात वेनिस वासी मुसाफिर मार्को पोलो जो २४ वर्ष तक चीन के दर्बार में रहाथा, उस समय के कुब्लेइन खान के दरबार में अमलदार होकर रहता था। वह लिख गया है उस तरह तेरहवीं सदी में चीन के सम्राट के दरबार का ठाठ जिन्होंने देखा है उस से भी ज्यादा था।

(१२७) अगर इस से भी पुराना इतिहास देखेंगे तो मालूम पडेगा कि चीन के लोग विद्या और विद्वत्ता की बडी

कदर करते थे । उस समय युरोप के लोग शरीर पर रंग चुपड नग्नावस्था में जंगल में घूमते थे। फलफूल तथा कच्चा मांस खाते थे, यांत्रिक कला तथा यांत्रिक शक्तियों में चीनी बढे चढे थे। मुद्रणकला, पानी निकालने के कोस, उनकी दीवार तथा पुल, उनकी गाडियां, (जिस में पथमापक यंत्र लगे थे ईसा की ४ शताब्दीमें वहां थीं) अंगुलिमुद्रा, हांथीदांत के पच्चीकारी किए गोले,उनके रथ (इस में ऐसी आकृति रखनेमें आई है जो हमेशा दक्षिण दिशा बतलावे) चीन में ऐसा माना जाता है कि ११०० इस्वी पहिले यह गाडी चीन में ही बनाई गईथी। बारूद का सातवीं सदी में आविष्कार किया था, तोप, १३ वीं सदी में मंगोल लोगों के साथ इस का वर्णन आता है, पंद्रहवीं सदी से बारूद भरकर उडाने का वर्णन मिलता है। जसत की पुतलियों के बनाने का वर्णन रेशम बनाने की विधि, वृद्धावस्था में रेशम अति उपयोगी है ऐसा मॅन्शियस कहता है। चाह की खेती चीन में बहुत पुराने जमाने से होती है एवं १६०० तक उस देशमें चीनाई रकाबी प्याले आदि बनाये जाते थे। फिर ता चीनाई मट्टी के बरतनों को वे इस प्रकारका तैयार करते थे कि उस का मुकाबला कोई न कर सके।

(२८) बहुत सी बातों में चीनी पाश्चात्य देशों के बहुत नजदीक और बहुत दूर भी हैं। चीन में उड़न खटोले तथा विमान थे ऐसी एक दन्त कथा है विमानों के चित्र चीन

में निकाले जाते हैं। यात्री जिस में बैठ सकें ऐसी गाडी उन चित्रों में खींची हुई होती है। आकाश में बादल को चीरके आगे जाती है मानो अपने दोनों पैरोंसे चलती हो ऐसा मालूम पडता है। जिस तरफ मुसाफिर को उडना होता है, उसी तरफ चक्र लगाया जाता है। परन्तु ये चक्र किस यांत्रिक बलसे चलते थे इस का कुछ भी नाम निशान नहीं, दसवीं शताब्दी में लोहे की गाडियां थी ऐसा उस के साहित्य में लिखा है। परन्तु यह मजाक के तौरपर समझा जाता है। शरीर में रक्ताभिसरण के विषय में भी लिखा है, एवं शरीर में शस्त्र क्रिया करने के लिये कुछ नशैले पदार्थ भी दे कर मूर्छित करने का वर्णन भी उस में हैं। १६०० वर्ष तक चीनी इस कला में सफल नहीं हुए फिर पाश्चात्य लोगोंने इस की विज्ञान द्वारा खूब उन्नति की। शरीर के किसी भाग का काटने में चीनीओं को बडी घृणा उत्पन्न होती थी। शायद इसी लिये वे आगे न बढ सके।

(१२९) चीनियोंने चित्रकला में बहुत दिनों से अपनी उन्नति कर उच्च पदवी प्राप्त की है। यूरोपियन लोगोंने अभी ब्रुश लेकर कपडे पर अपनी शक्ति अजमाने का काम भी नहीं शुरू किया था उस से पहिले ही हिन्दुओं की न्यांई ये इस विषय के उस्ताद थे। इस के लिये पांचवीं सदी के ब्रिटिश संग्रहस्थान के चित्र के सिवाय हम दसवीं तथा ग्यारहवीं सदी में जो चित्रकार चीन में हुवे हैं, उनकी आलोचना करने वाले एक विवेचक का

अभिप्राय हम नीचे उद्धृत करते हैं। 'सूंग वंश के अभ्युदय के समय जो कवि एवं चित्रकार हो गये हैं उनको प्रख्यात आंगल कवि वर्डसवर्थ के माफक पर्वतों का वर्णन बहुत प्रिय था। इस तरह प्राकृतिक चित्रकला का आरम्भ हुवा, और पंद्रहवीं शताब्दी में जापानियोंने उसे खूब विकसित किया, ऐसी कला की उन्नति जगत् में और कहीं नहीं दीखती, सृष्टि के तत्व एवं प्रकृति के गहन स्वरूपों का मानो मानसिक दशा चीनी चित्रित करते हैं ऐसा मालूम पडता है, जलप्रपात, वृक्ष कुंज और वे ऐसे ऐसे दृश्य त्रित्रित करते हैं जिनको देखकर कुदरती तोफान और शान्ति के विचार अपने आप पैदा होते दीख पडते हैं इनमें विचित्रता का दोष होता है परन्तु पाश्चात्य चित्रकारों की कला में जो ऋजुता एवं असल वस्तु के समान ही चित्र में लाने का प्रयत्न करते हैं उनकी चीनियों के चित्रों में कमी है।

(१३०) यह जरूरत नहीं कि असल वस्तु के समान ही रूपरेखा होनी चाहिये, यह सब चीनी चित्रकार मानते हैं, वे उस वस्तु के अन्तर स्वरूप को प्राधान्य देते हैं। जैसे वृक्ष का चित्र बताना होतो केवल आकार एवं रंग से चित्र पूरा हुवा ऐसा चीनी नहीं मानते परन्तु वृक्ष का आत्मा चित्रित हो तभी वह प्रयत्न सफल समझते हैं। आजसे दौसौ तीनसौ वर्ष पहिले कुदरत ही चित्रकारों को चित्र बताना सिखाती थी, पश्चात् कुदरत के साथ ही साथ चित्रकला के उस्ताद आये, उन्होंने

रुचि में भेद कर दिया, तभी से चीन की चित्रकला का ह्रास होने लगा, फिर चौदहवीं सदी में जापानने शिष्य हो कर चीन की चित्रकला सीखली, वे जापान के चित्रकार आगे आकर अपनी अनिर्वचनीय चतुराई से पाश्चात्य भावनाओं को अपनी भावनाओं से संभिश्रण कर रहे हैं।

(१३१) पांचवीं सदी के एक चीनी चित्रकारने ऐसा कहा है कि वसन्त ऋतु में बादलों की तरफ एक टक देखते रहना, मानो आत्मा ऊंचे चढ रहा हो, आनन्दवर्धक एवं परिपोषक वसन्त वायुका अनुभव करना, अहा इस आनन्द के सुवर्ण व हीरा माणेक से उत्पन्न सुख तुच्छ हैं इतनी प्राकृतिक शोभा देख घर जाकर चित्र के कागज को खोलकर पर्वत, नदी, जलप्रपात अतिवृष्टि, हरेहरे बन, सूसू करता हुवा पवन, जलप्रवाह और श्वेत तुषार राशि इन प्रकृति की विभूतिओंको दिव्य शक्ति से चित्रपटमें चित्रित कर लेना।

(१२२) कविताके समान चित्रमेंभी कुछ न्यूनता जानबूझ-कर रखते हैं। वह कि अपनी शक्ति का उपयोग करके उसे पूरी कर ले इन दोनों कलाओं में 'सूचना' यह चीनीयों का मुख्य उद्देश्य है। काव्य या चित्रमें दृश्यकी अपेक्षा सूचना अधिक होती है। पाश्चात्य लोगों के बहुत पहिलेसे चीनी इस कलामें अपनी चरमोन्नति कर चुके थे।

(१३३) चीन में साहित्य और कलाका संबन्ध अति घनिष्ठ है, प्रत्येक लिखे पढेको चित्रकला कुच्छ तो

आती ही होगी, नितान्त अनभिज्ञभी होगा तोभी इन कलाओं का समालोचक अथवा प्रशंसकतो अवश्य ही होगा, चीनके तमाम बालक स्त्रियां और पुरुष फूलों को बहुत चाहते हैं। यह शौक इतना बढ़ा हुआ है कि आलू और बदामके फूलों पर बेहद कविता लिखी गई हैं। यूरोपकी माफक फूलकी कलगी किसीने बनाई हो तो वे उसे अक्षन्तव्यही समझते हैं पुष्प का सुख भोगने के लिये एक समयमें एकही फूल काफी है। एक क्षुद्रसे क्षुद्र (कलार्क) एक फूल तो अपने साथ जरूर लेता जायगा, और उसे छोटे बरतनमें लटकाकर मेजपर अपने सामने रखता है। किसी धनवान् या शौकीन आदमीके यहां अनेक प्रकारके फूल होंगें तो वह अपने को चाह पीनेका आमन्त्रण देगा, फिर अपने पुष्प भंडार देखनेके लिये विनति करेगा। पर उस दिन वह हमको एकही प्रकारके फूल दिखायगा। नाना प्रकारके फूल देखनेकी इच्छापर वह हंसेगा। देखनेकी वस्तु बडी होगी तो क्रमशः दूसरा भाग भी दिखलावेगा, एवं सम्पूर्ण वस्तुका थोडासाही भाग निरीक्षण वा टीकाके लिये दिखाया जावेगा, यदि वह चित्र धार्मिक या ऐतिहासिक होगा, किंवा पक्षियों या पुष्पोंका होगा। विना सब देखे उसका रहस्य समझमें न आवे तोभी थोड़ा थोड़ा ही बतलाया जावेगा, उसके विविध प्रसंग भिन्न भिन्न समयपर देखनेको मिलेंगे। बीचबीचमें बातें चलेंगी, चाह पी जावेगी तथा भिन्न भिन्न विभाग दिखाये जावेंगे। चित्रकारके आशय और प्रयत्नकी सच्ची कदर करनेके वास्ते प्रत्येक भाग पर सम्पूर्ण ध्यान देनेकी जरूरत है ऐसा चीनके चित्रकलाके विवेचक मानते हैं।

(१३४) पुरातन कालमें ग्रीसमें झ्युकसीने दाख ऐसी सुन्दर चित्रितकीथी, कि उसको देखकर पक्षी खानेको आये थे, एवं ऐविल्सने घोडेका ऐसा उत्तम चित्र निकाला था कि जिसको देखकर सच्चा घोडा हिनहिनाने लगा था। एक घोंसला ऐसा बनाया था जल-बिलाव नामक चीं चीं करते हुवे बैठनेके लिये दौड आये थे। एक चित्रकारने एक बिल्ली ऐसी बनाई थी कि जिसको देखकर चूहे भागते थे। सबसे उत्तम तो एक चित्रकारने ऐसा चित्र निकाला था कि उसने उत्तर और दक्षिणमें से आते हुए पवन के ऐसे चित्र निकाले थे, कि जिसको देखकर लोगोंको शीत और उष्णताकी भ्रान्ति होती थी, चीनियोंने चित्रकलामें अपूर्व नैपुण्य प्राप्त किया था। ब्रिटिश संग्रहस्थानमें रक्खे हुए चीनाई चित्रोंसे इसका भली भांति ज्ञान हो सकता है।

(१३५) चीनीओंके साहित्य की प्रवृत्ति, उससे प्रसिद्धि प्राप्त उसका साहित्य बहुत जबरदस्त है, उनके हजारों ग्रन्थ यद्यपि लडाई के भयंकर परिणामसे, अग्नि के भेंट हुए हैं तोभी इतना बडा संग्रह है, इसका एक मात्र कारण सबसे पहिल मुद्रण कला का चीनमें आविष्कारही है।

(१३६) छापनेकी कलाके आविष्कारकी अपेक्षा उन्होंनेही इसकी इतनी उन्नतिकी है यही कहना ठीक है। चीनके इतिहास से मालूम होता है कि मोहर के सिक्कों के चीनियोंने अक्षर खोदे थे एवं पत्थरपरभी अक्षर खोदते थे, उससे फिर नकलें की जाती

थीं, ऐसे पत्थरोंमेंसे सबसे महत्वके ५ पत्थर हैं। उनमें महात्मा कान्फ्युशियस के पांच पवित्र ग्रन्थोंमेंसे १७० इस्वीमें पांच बातें लिखी गई हैं। उसकी निशानी अबभी मिलती है। लकडियोंके टुकडोंपर अक्षर खोदकर छापनेका काम ईसाकी छठी शताब्दीमें चीनमें हुआ था, यह धार्मिक चित्र और सूत्र छपवानेके लिये किया गया था। ९३२ इस्वी तक इसका उपयोग विस्तृत ढंगपर पुस्तकोंके छापनेके लिये तब तक नहीं किया गया था। उसी वर्ष कान्फ्युशियसकी आज्ञाएं बहुतसी सबसे पहिले कागजपर छापी गईं। उस समयसेही दिन दिन इस कलाकी उन्नति होती चली जा रही है।

(१३७) चीनी प्राचीन वस्तु पर सन्तोष मान लेते हैं नवीन वस्तु पर उनको आदर नहीं होता, बल्कि कोई सुधार करने को भी वे तैयार नहीं होते। परन्तु यह बात अवश्य है कि नवीन वस्तु की उपयुक्तता के विषयमें उनको निश्चय होजावे तो वे लाभ उठाने में अपना थोडासा समय भी नहीं खोते। प्रारंभ में तार और उसके खम्भे गाडने के वे बडे विरुद्ध थे, क्यों कि पृथ्वीपर रेखा निकालकर भविष्य के जानने के काम में वे विघ्नरूप होवेंगे। उनको तो इतनाभी न मालूम था कि इनसे सन्देशा पहुंचाया जाता है। पर उन्होंने देखा कि राजधानी पेकिन में त्रिवार्षिक परीक्षा में जो अनुक्रम से प्रथम, द्वितीय, और तृतीय पास हुए थे उनकी कन्तान वासियों को कई सप्ताह पहले खबर मिल गई

थी। एवं उन्होनें ' लाटरी ' की चिठ्ठी निकालकर उसने पहिले ही खूब पैसे कमालिये थे। चीनमें परीक्षा के परिणाम पर ऐसी चिठ्ठी से पैसा पैदा करने का रिवाज है। पीछे कितने एक पढे लिखे यहभी कहने लगे थे कि तारकी शोध भी चीनियों ने ही क्यों न की हो।

(१३८) भट्टी में पकाई हुई मट्टी के बर्तन बनाने की शोध ई. सन १०४३ में हुईथी, उस के पश्चात् लकडी तांबे सीसे के बर्तन बनाये गये थे। लकडी पर अक्षर खोदकर पुस्तक छापनेका काम बहुत हुवाथा, उससे साहित्यके बडे बडे ग्रन्थ छापे गये थे, उतनी लोक प्रियता आजकलके सीसे के अक्षर नहीं प्राप्त कर सके, आजकलके वर्तमानपत्र घिस जाने वाले सीसे के अक्षरोंसे छापे जाते हैं। पाश्चात्य विज्ञान की बढती हुई मांग से परदेशी भाषा के ग्रन्थों का जो अनुवाद करना पडता है, वे सब पुरानी पद्धतिसेही छापे जाते हैं, चीनी पहिले सेही अच्छे ग्रन्थोंके चाहनेवाले हैं। उनका सुव्यवास्थित शिक्षण ईसाके दूसरी सदीकी स्पर्धाकी परीक्षाओंमें परिणत होता जा रहा है। प्रख्यात ' पेकिन गॅजेट ' दुनियामें सबसे पहला अखबार है परन्तु समाचार पत्रका जो हम अर्थ करते हैं वह उसका अर्थ नहीं है क्योंकि उसमें शाहनशाहकी मुसाफिरीका वर्णन, पसन्द की हुई कितनीही आज्ञायें, तथा मानपत्र सम्मिलित किये जाते हैं। पंद्रहवीं सदी तक वह छपता न था, पर अब प्रति दिवस प्रसिद्ध होता है।

(१३९) चीनमें प्रत्येक बालकको अपने भावीके निर्माण करनेका प्रसंग मिलता है। पुस्तक पढकर ज्ञान प्राप्त करनेकी शक्ति उसमें है कि नहीं यह देखा जाता है। इसका लाभ गरीब कोभी मिल सकता है पाठशालामें फीस बिलकुल नहीं है, अगर बालक चालाक हो तो आश्रयदाता मिल जाता है। बहुत बार ऐसाभी होता है कि ऐसा विद्यार्थी अपना अभ्यास पूरा करके बडी स्पर्धाकी परीक्षा देना चाहता हो तो लोग चन्दा वसूल करके उसको सहायता देते हैं। अगर वह पास हो जावे तो अपने विजयसे उस परगनेपर, हमेशके वास्ते अहसान चढाता है एवं कोई नौजवान पदवीधर अपने अभ्याससे भविष्यमें अच्छी आशा रखता हो, तथा सम्मान के साथ पहली पदवी प्राप्त की हो तो वह धनवान् लोगों के मनमें अतिशय महत्त्वका हो जाता है। क्योंकि ये लोग उसको अपना दामाद बनाना चाहते हैं। अभ्यास करके सरकारी नौकरी प्राप्त करने तक के परिश्रममें जो पैसे उन नवजवानोंको चाहिये वे ये धनवान् पूरा करते हैं। साधारण विद्यार्थी तो साधारण नौकरियोंमें दाखिल हो जाते हैं। इसमें कितनेही विद्यार्थी अमुक मर्यादा तक बढने पर व्यापार में लगा दिये जाते हैं, और बहुतसे विद्यार्थी जो उंचे स्थानोंपर नहीं पहुंच सकते वे कुटुंबोंमें शिक्षक बन जाते हैं, अथवा पाठशालामें अध्यापकी का काम करते हैं। कोई वैद्य बनते हैं ज्योतिषी बनते हैं पृथ्वीपर रेखा निकाल कर भविष्य कथन करते हैं, अन्तमें पुस्तक विक्रेताओंके

कथनसे कुछ लेकर पुस्तक लिखनेका व्यवसायकरते हैं।

(१४०) चीन का श्रेष्ठ साहित्य किस प्रकार का है उस का साधारण वर्णन भी यहां नहीं दे सकते। थोडे में यही कहेंगे कि इस साहित्य में तमाम विषय अर्थात् जीवनचरित्र इतिहास तत्त्वज्ञान, काव्य, अनेक विषयों पर निबन्ध प्राप्त होते हैं। चाहे कितना बडा स्वाध्यायंशील हो तो भी उस के लिये इस साहित्य में विशाल क्षेत्र हैं।

(१४१) कान्फ्युशियस के सम्पूर्ण कायदे कानून में जिस पर कि सम्पूर्ण नीति तथा धर्म के सूत्र रचे गए हैं, उनमें किसी की भावनाओं को दुखाने वाला एक शब्द भी नहीं है। चीन के तमाम साहित्य में अविवेक तथा बीभत्स रस का पता नहीं मिलेगा इसीतरह इस में लंपटता के इशारे तथा मलिन विचारों का लवलेश भी न मिलेगा, भाषा भी विशुद्ध एवं पवित्र संस्कारयुक्त लिखी जाती है। थोडे दिनोंसे स्त्रियों की शिक्षण व्यवस्था भी शुरू हुई है। स्त्रियोंने भी साहित्य के क्षेत्र में अनेक ग्रन्थ लिखकर कीर्ति सम्पादन की है इसके भी अनेक उदाहरण मिलते हैं। परन्तु साधारण उपन्यासादि तो अनेक दोषों से परिप्लुत नहीं मिलेंगे।

(१४२) चीन के साहित्य में अनेक कहानी और उपन्यास हैं मुख्यतया यह ऐतिहासिक और धार्मिक होते हैं। लेखकों के आशय उच्च होने से बीभत्सरस तथा लंपटता के चित्र खींचे नहीं जाते। परन्तु चीन का अधम पंक्तिका साहित्य बहुत खराब

है, उसमें लंपटता के चित्र भरे पडे हैं तेरहवीं सदी में जब मंगोलियन लोक चीन में आये तब यह कथायें लिखी गई थीं। कितने ही उपन्यास नीतिमत्ता शिथिल होनेपर भी रोचक लिखे हुए होते हैं श्रेष्ठ पंक्ति के उपन्यासकारोंने अपना नाम ही नहीं लिखा यह आश्चर्य की बात है।

(१४३) निकृष्ट पंक्तिके उपन्यासों की भाषा यद्यपि सरल लिखी गई है, तोभी अज्ञवाचक लोगोंको बहुतसी जगह कठिनाई झेलनीही पडती हैं। परन्तु श्रेष्ठ लेखकोंके ग्रन्थों में व्यवहृत भाषा की पद्धति वा भाषा जो २५०० वर्ष विचारक तत्त्व ज्ञानियोंने शब्द नये निकाले हैं, वे इतिहास तथा पुराणोंके स्वाध्यायशील वाचक ही जान सकते हैं। आकाशकी छत्री, पतली कमर, जितफल, टोपीके शब्द, शराब, सुवर्णकी थाली दो नालका आदमी, सहस्र भग चन्द्रके अवेजमें, एक वनस्पाति, भौंरा, भिलायती बैंगन, प्रस्तावना, चन्द्रमा, दाढियल, शहदका घर, लालटेन यह क्रमसे अर्थ होते हैं।

(१४४) आयुर्वेदका साहित्य चीनियोंके पास बहुत बडा है लेकिन शस्त्रक्रिया कोई नहीं जानता, कारण यह है कि वे अपने शरीर में विकृति करना पसन्द नहीं करते, क्योंकि उनके मांबापोंने जैसा शरीर उनको दिया है, वही शरीर दूसरी दुनियामें अपने पूर्वजों के पास उनको ले जाना है। आज चीनी जिन औषधिओंको देते हैं वह यूरोपमें आजसे दोसौ वर्ष पहिले दिया करते थे, वहां यह कहावत

है कि साधारण वैद्यकी औषधिकी अपेक्षा औषधि न लेनाही अच्छा है। काबिल वैद्य के बहुतसे लडके रोगसे मर जाते हैं।

(१४५) चीनमें एक दंतकथा प्रचलित है कि इस्वी सन से पूर्व पांचवीं शताब्दी में असाधारण शक्तिवाला कोई एक वैद्य होगया था। रोगी की आंतों में क्या है वह शरीर खोले बिना जानने की शक्ति उसमें थी (मानो कि उसे आधुनिक X-Rays एक्सरेझ का ज्ञान न हो?) नाडी परीक्षा में वह दक्ष होनेके कारण आश्चर्य कारक रीतिसे इलाज करता था। पुनः इस्वीसन की दूसरी तीसरी शताब्दी में एक मशहूर वैद्य होगया है ऐसा कहा जाता है उसे शस्त्र किया का भी ज्ञान था। शरीर में सुई से छिद्र कर या दान देकर रोगी मिटाने में वह प्रवीण था। इस रीति से यदि रोगी को आराम न होता तो 'हेशिश' नामक नशीला पदार्थ वह देता और उसे बेशुद्ध करता और फिर उसपर शस्त्र क्रिया करता एक मनुष्य के मस्तक को चीरकर शिर पीडा दूर करने को भी तयार था इस पर से यह सिद्ध होता है कि शस्त्र क्रिया के लिए यह शरीर को बेहोश करते और ऐसी दवा को ढूंढने का यश चीनीओं को है क्योंकि जिस पुस्तक में इसका वर्णन है वह इ. स. की १२ वीं सदीसे पीछे की नहीं है। *

---

* हिन्दुओं की शस्त्रक्रिया इस्वीसन से पूर्व की थी यह निर्विवाद हैं।

सप्तम प्रकरण

तत्वज्ञान और मृगया

(१४६) चीनके तत्त्वज्ञान का क्षेत्र विस्तृत होने से हम केवल उसका दिग्दर्शन करा सकते हैं। उस के मुख्य सिद्धान्त जाने जाएं इतनाही लिखते हैं।

(१४७) मनुष्य जन्म से ही पवित्र है हां आसपास के संयोगसेही बिगडता है। यह एक कान्फ्युशियस का साधारण सूत्र है। इसके सौ वर्ष बाद इस का शिष्य मॅन्शियस हुआ। इस के भाग्य में खण्डनकारोंके विरुद्ध मण्डन का बोझा आ पडा। काउ नामक असाधारण शक्ति शाली विद्वान् प्रतिपक्षी हुआ है, उस का यह कथन है कि जिस प्रकार लकडी को छीलकर, उस पर रन्दा फेर, घड के अच्छी वस्तु बनाते हैं, तद्वत् मनुष्य के स्वभाव को घड के अच्छा बना सकते हैं, इस में कारीगर की न्यूनता न हो। तात्पर्य यह है कि जन्मते समय मनुष्य अच्छा या बुरा नहीं होता; आगे स्वभाव पर असर करने वाली (देश कालानुसार) घटनाओं पर ही मुख्य आधार है। सूक्ष्मबुद्धि का मॅन्शियस यह दोष निकालता था कि लकडी से नई चीज तैयार करने पर पहिली लकडी का नाश हो जाता है एवं मनुष्य को चारित्रवान् बनाने में उस का पहिला स्वभाव नष्ट हो जाना चाहिये।

(१४८) तत्त्ववेत्ता काउ यह कहता था कि जिस तरह पानी को पूर्व या पश्चिम की जरूरत नहीं रहती, अनुकूल संयोग मिलने पर किसी भी दिशामें वहने लगता है। इसी तरह मनुष्य स्वभाव को प्रारम्भ में अच्छे या बुरेसे कोई मतलब नहीं है। इस के उत्तर में मॅन्शियस ऐसा कहता था कि पानी चाहे पूर्व या पश्चिम में जावे लेकिन पानी क्या अपने आपही ऊपर या नीचे जाता है ? एवं पानी का स्वभाव जैसे नीचे जाने का है वैसे ही मनुष्य का स्वभाव अच्छा करने का है, हां यांत्रिक शक्ति आदि पानी को पर्वत के ऊपर भी चढा सके लेकिन यह पानी के स्वभाव के विरुद्ध है। मनुष्य स्वभाव निकृष्ट कार्य करने को जब प्रेरित होता है वह बलात्कार है।

(१४९) एवं काउ यह कहता है कि मनुष्य को जन्मतः जो वस्तु प्राप्त होती है वही उस का स्वभाव है। इस का यह अर्थ निकालते थे, कि सफेद परों की सफेदी और श्वेत बर्फ का श्वेतत्त्व समान ही है अतएव सब स्वभाव समान ही हैं। इस पर मॅन्शियस का यह प्रत्युत्तर था कि फिर कुत्ते का स्वभाव बैल जैसा, और बैल का स्वभाव मनुष्य के समान होना चाहिये, मॅन्शियस आखिर यह भी कहता था कि मनुष्य चाहे जैसे खराब कार्य करे, इस लिये उसके स्वभाव को बुरा बतलाने की जरूरत नहीं है, आबादी के समय मनुष्य सुस्वभाव के होते हैं वही तंगी के समय दुःस्वभाव के हो जाते हैं। अत एव इन

दो अवस्थाओं का मूल जो स्वभाव परमेश्वरने दिया है उनकी तरफ न देख कर परिस्थिति की तरफ ध्यान देना है कि इस लिये संयोग का ही दोष मानना चाहिये।

(१५०) मॅन्शियस इसतरह का वादविवाद अवश्य करता था लेकिन उसने भी मनुष्य स्वभाव के अन्तिम स्वरूप का निर्णय नहीं किया, मॅन्शियस के कुछ दिन बाद श्युन्डझा नामक दूसरा तत्त्ववेत्ता पैदा हुआ था। उसने यह सिद्धान्त लोगों के सामने रक्खा कि जन्म से ही अच्छा है यह कान्फ्युशियस का कथन यथार्थ नहीं, एवं काउ यह कहता है कि मनुष्य स्वभाव बुरा और अच्छा भी नहीं यह बात भी सत्य नहीं क्यों कि मनुष्य का स्वभाव जन्म से ही खराब होता है। बहुत से सुखी और कितनेही दुःखी क्यों हैं। इस का उत्तर यह है कि जो खराब है वे अपने कुदरती स्वभाव के पीछे चलने वाले हैं, और जो अच्छे हैं उन्होंने अपने उपदेशकों के द्वारा बतलाए हुए संयम और तदनुसार ही आचरण करते हैं। जैसे सब वीर नहीं होते एवं ऐसी कोई पद्धति भी नहीं कि जिस से सब के सब वीर बनजावें। मनुष्य में सुधरने की शक्ति है उस को अच्छे उपदेशकों के हाथ नीचे रक्खा जावे तथा उस के ही साथ आत्मभोग दया और ऐसे ही अनेक गुण धारण करने वाले मित्रों की संगति प्राप्त हो तो वह स्वभावतः नये तत्त्व सीख लेगा, एवं उच्च आशय की तरफ जावेगा यदि वह असाधु लोगों

के फन्दे में आजाएगा तो उस के आसपास असद्वर्तन बुराई के दृश्य दीख पडेंगे। परिणाम में वह मनुष्य नीच हो जावेगा। कहावत भी है कि अगर तुम अपने पुत्र को न पहचानते हो तो उस के मित्रों से समझो कि वह कैसा है।

(१५१) इ. सन पूर्व ५३ से इ. स. १८ तक प्रख्यात यांगशि युंग नामक तत्त्ववेत्ताने एक पैर इस के आगे रक्खा, परस्पर विरुद्ध दो सिद्धान्तों की जो ऊपर चर्चा की है, उन के बीच का सिद्धान्त उस ने निकाला, मनुष्यका स्वभाव जन्मतः न अच्छा न बुरा होता है सुतरां अच्छे बुरे का मिश्रण होता है, उसकी भावी बुद्धि भी अच्छे बुरे संयोगों के अनुसार होती है। अंध श्रद्धा से माने हुए इस विषय में तोडजोड कर मध्यम मार्ग निकालना यद्यपि अच्छा नहीं है, अतः इस तरफ बहुत थोडे आदमियों का ध्यान गया है। तोभी सम्मान के साथ इसका भी नाम लिया जाता है इसी तरह का प्रयत्न हानयु नामक तत्त्ववेत्ताने (७६८ से ८२४) किया है। यह कान्फ्युशियस के अनुयायियों का अग्रणी समझा जाता था। सत्य के अन्वेषण में इसने इतना परिश्रम किया है कि कान्फ्युशियस के मन्दिर में इस की कबर बनाई गई है। इस सिद्धान्त के पुष्टयर्थ वह यह दलील पेश करता है कि मनुष्य बचपन से ही अपने सुख के लिये लोभी होता है, उसके बर्ताव में दूसरे के साथ विरोध करने की वृत्ति एवं स्वार्थ स्पष्टतया नजर आता है। अन्तमें

ईर्ष्या एवं तिरस्कार आदि वृत्तियों का गुलाम बनजाता है। इस लिये अगर राज्यशासन सुन्दर चलाना हो एवं सामाजिक व्यवस्था अच्छी रखनी हो, तो कानून का बंधन तथा उपदेशकों के आचरण का प्रभाव आवश्यक है। लकडी को सीधी करने के लिये उस पर भार रखने की आवश्यकता पडती है जिस तरह कोडे के हथियार को नुकीला बनाने के लिये सान पर चढाने की आवश्यकता पडती है, इसी तरह मानव जाति में न्याय और आत्मबलिदान के जो गुण हैं उन के लाने के लिये मानव स्वभाव को शिक्षित करने की आवश्यकता है। मनुष्य आंखों से देख और कानसे सुन सकता है यह सच बात है इसी तरह मानव स्वभाव जन्म से अच्छा है यह प्रतिपादन करना भी अशक्य है क्योंकि आंख कान को देखे सुने बिना चल नहीं सकता, जो देखती नहीं उस को आंख नहीं कह सकते, इस से वह सिद्ध होता है कि देखना और सुनना स्वाभाविक है, उसी तरह अच्छा होना यह स्वाभाविक नहीं है। अच्छा स्वभाव कृत्रिम है और वह शिक्षण से ही प्राप्त होता है मट्टी से कुंभार जैसे घडा बनाता है और वढई लकडी से कुर्सी बनाता है, उसी तरह मानव जातिमें पैदा हुए ऋषि मुनि और उपदेशक मनुष्य के स्वभाव पर अपना प्रभाव डालते हैं और उस को सद्गुणी बनाते हैं। परमेश्वर पक्षपात कर के अमुक मनुष्यों से प्रेम करता है यह बात स्वीकार करने लायक नहीं हैं एवं वह दूसरों पर

निर्दयता करता है यह भी नहीं कह सकते। तब यह सवाल पैदा होता है यद्यपि उसने कान्फ्युशियस के महत्त्व के सिद्धांतों में थोडासा फेरफार किया है तथापि वह कहा करता था कि मैं मान्शियस पर टीका करताहूं कान्फ्युशियस की नहीं। उस ने अपने विचार इस प्रकार दर्शाये हैं। मनुष्य का स्वभाव पृथक पृथक है उत्तम मध्यम और निकृष्ट। हां मध्यम, निकृष्ट की संगति से निकृष्ट तथा उत्तम संगतिसे उत्तम हो जाते हैं।

(१५२) मॉन्शियस के समय में दो बडे तत्वज्ञानी होगए, उन के नाम मांटी और यांगचु थे। उन के सिद्धांत एक दूसरे से विरुद्ध थे। मॉटिनो का यह सिद्धांत था कि खराब राज्य व्यवस्था तथा सामाजिक अव्यवस्थाओं के अनिष्ट परिणामों को मिटाने का एक ही मार्ग यह है कि सब मनुष्य परस्पर भ्रातृभाव और प्रेम रखें तो जगत प्रेममय दीख पडेगा, तथा छोटे छोटे राजा आपस में न लडें। कुटुम्ब के क्लेश बंद होजावें चोर चोरी न करें, प्रजा राजा को पितृवत् समझे और राजा भी प्रजाका पुत्रवत् पालन करें, पिता पुत्र में भी वात्सल्य, और पितृ भक्ति हो सचमुच तभी राज्यकी सर्वोत्कृष्ट व्यवस्था हो सकती है। पर ऐसे उच्च आशयको परिपूर्ण करने के लिए तिरस्कार के निषेध प्रेमके उत्तेजन एवं उपदेशकों के सदुपदेश के सिवाय यह तत्वज्ञानी हम को कुछ नहीं बतला सकता।

(१५३) यांगचूका सिद्धांत तो संक्षेप में ही कह सकते हैं कि 'अपनी आप संभालो' जो कि मोंटिनो के सिद्धांत के बिलकुल विरुद्ध हैं। एक समय यांगचू से एक मनुष्य ने पूंछा कि संपूर्ण दुनिया का कल्याण अगर आप के एक बालसे होता हो तो आप देंगे, तब उसने कहा कि यह बात कभी संभव नहीं, तब फिर कहा गया कि मान लो कि होगा तब वह चुप रहा। इस बात पर आधार रखकर मॉन्शियस कहता है कि 'यांगचूका सिद्धांत ऐसा था कि सब अपना स्वार्थ साध लेवें, सारी दुनिया पर उपकार ही न हो तो भी अपने शरीर से एक बालभी जो उखडवाने को तैयार नहीं है। मॉटिनो का सिद्धांत 'वसुधैव कुटुंबकम्' जैसा था, यह तो ऐसा था कि इस के शरीर का एक बाल तो क्या सब बाल भी दुनिया के लाभ के लिए उखडवा देवें। हां वे दोनों विचारों की अपेक्षा बीच का ही मार्ग श्रेयान है।

(१५४) इस दृश्य जगत की उत्पत्ति के विषय में स्वभावतः चीनी तत्ववेत्ताओंने अपनी कल्पना परही आधार रक्खा है। एक पौराणिक कथा भी है कि पानकू नामकी एक अगम्य विभूति पहले उत्पन्न हुई वह संपूर्ण ज्ञानवाली थी, वह विकास को प्राप्त होनेवाले इस विश्वको नियम पूर्वक चलाना ही आद्य कर्तव्य था। उसकी तस्वीर में [illegible] कद एक बहुत बडा

हथियार उस के हाथ में दिया गया है उस के पास पडी हुई तथा व्यक्त आकार में परिणत होनेवाली प्रकृति को मानो वह घटा रही है इस विभूति के नाश होने पर यह छोटासा अखिल ब्रह्माण्ड निर्मित होकर दीख पडता है। उसी के श्वासोच्छवास से पवन बना है, वर्षा का गडगडाट उसी का मानो शब्द है। उस की दहिनी बांई आंखें मानो सूर्य और चंद्र हैं। उस के रक्त से नदियां बनी हैं; उस के शरीरके मांस से मानो पृथिवी बनी है, उस के बाल वृक्षवनस्पति हुए हैं। पसीने की ही मानो वृष्टि पडरही है, और छोटे छोटे जन्तु इस के शरीर के ऊपर थे उन से मनुष्य से भी पहले पैदा हुवे प्राणी निर्मित हुए हैं, ऐसी गप्पें तो मूर्ख लोगही स्वीकार कर सकते हैं, एवं सूक्ष्म इस से भी ज्यादह सूक्ष्म विचार की जरूरत थी, इस का परिणाम यह आया कि, कान्फ्युशियस के विकारवर्णन नामक पुस्तक पर आधार रख नवीन सिद्धांत रचे गए, ११ वें १२ वें शतक में उसका स्वीकार भी हुआ। इस नवीन व्यवस्थासे यह सिद्ध हुवा कि मनुष्य से अगम्य असंख्यों वर्ष पहिले एक ऐसा समय था जब कि कुछ भी नहीं था, फिर अपने आप एक तत्त्व अस्तित्व में आया, और कालक्रम से एक तत्त्व के दो तत्त्व हुए फिर उन में परस्पर विरुद्ध गुण आये, इन में से एक तत्त्व में प्रकाश गरमी, नर इस तरह की प्रेरक वस्तुओं का अंतर्भाव हुवा और दूसरे तत्त्व में अंधकार ठंडी मादा ऐसी वस्तुओं का अर्थात्

पहिलीसे विरुद्ध स्वभाववाली वस्तुओं का समावेश हुवा। विशिष्ट प्रमाण में इन वस्तुओं का मेल होजाने से पांच तत्त्व उत्पन्न हुए। पृथ्वी, अग्नि, जल, लकडी और धातु, इन के मददसे ही यह संपूर्ण जगत जिसको कि हम देखते हैं बना है, यह मत कान्फ्युशियस का था ऐसा माना जाता है, परंतु वह ऐसाही मानता था इस विषय में कोई प्रमाण नहीं एवं विकारवर्णन ग्रंथ उसी का बनाया हुआ है इस में भी कोई प्रमाण नहीं मिलता।

(१५५) ईसासे ३-४ सौ वर्ष पहिले च्वांगझा नाम का तत्त्ववेत्ता चीन में होगया है। वह अगम्यवाणी बोलनेवाला एवं नीति के तत्त्वों पर ऊहापोह करनेवाला व समाज सुधारक था। वह कहता है कि अब भाव (अस्तित्त्व) है तो कभी नहीं भी होना चाहिए। अभाव का समय माना जावे तो अभाव के अभाव का भी समय मानना चाहिये। जिस से अभाव का प्रादुर्भाव हुआ, इस लिए यह कोई नहीं कह सकता कि वास्तव में भाव था कि अभाव।

(१५६) च्वांगझा 'अभाव' शब्द को अपनी बुद्धि के चमत्कार दिखलाने के लिये अनेक तरह से वर्णन करता। प्रकाशने अभाव से पूंछा कि तुम हो कि नहीं। पर अपने प्रश्न का उत्तर न मिलने से प्रकाश, अभाव के प्रादुर्भाव की राह देखता हुआ अपना कार्य करने लगा, उस छिपे हुवे अभाव के देखने को प्रकाश ने दिन भर परिश्रम किया लेकिन वह दीखा नहीं, सुनने

के दिये कान लिये पर वह श्रवण गोचरभी न हुवा, एवं पकडा भी न गया तब प्रकाश कहने लगा, धन्य है, तेरी बराबरी कौन कर सकता है? मैं अभाव (प्रकाश का अभाव) हो सकता हूं लेकिन अभाव का अभाव नहीं हो सकता।

(१५७) मरण एवं मरण के पश्चात स्थिति के बाबत कान्फ्युशियस कुछभी नहीं विचार करता। उस का विषय तो इस जीवन और उस के अंगभूत कर्तव्यों के लिये ही है। अज्ञान और अगम्य विषयों पर विचार कर वृथा कालक्षेप करना ही है। एक समय तीन मित्रों में से एक मित्र मर गया। तब दूसरे दो मित्रों को आश्वासन देनेके लिये। कान्फ्युशियसने अपने शिष्यों को भेजा। उस समय वे दोनों मित्र शव के पास बैठकर बीना बजाकर मौज कर रहेथे। वे कहते थे कि हमने तो नवीन ही पन्थ का स्वीकार किया है। उनका यह सिद्धान्त कि जीना स्वप्न और मरना ही सच्चा जीवन है। मरते समय पवित्र मनुष्य स्वर्ग पर चढता है, आकाश के मर्यादा के उस तरफ जाता है अर्थात् अपनी जीव दशा को मूल अनन्तकाल में वह आगे को धसा चला जाता है। यह सुनकर वह शिष्य चौंक गया, उसने जाकर कान्फ्युशियस से कहा, तब उसने इस का उत्तर दिया, ये जीवन के नियम की बाहर मुसाफिरी करते हैं और मैं जीवन के अन्दर की मुसाफिरी करता हूं, अतः हमारे मार्ग नहीं मिलते, तुम को उन के पास भेज कर मैंने

मूल की, उन का ऐसा मत है कि जीवन एक प्रकार की व्याधि है। मरण आने से छुटकारा मिलता है। लेकिन जन्म से पाहिले वे कहां थे और मरने के बाद कहां जाना होगा यह उन को मालूम नहीं। वे अपनी वृत्ति की तरफ ध्यान नहीं देते। उन को अपने कान और आंख का कोई हिसाब नहीं अनंतताके सम्पूर्ण प्रवाह में वे जहां तहां घूमते हैं। वे आदि और अन्त भी नहीं मानते एवं मृत्युरूपी कीचड के उस पार खडे हुए हैं। पर उस प्रदेशमें निष्क्रिय होने के सिवाय और कुछ भी नहीं है। ऐसे लोग व्यवहार और रूढि से बेदरकार रहते हैं, एवं अपनी भी उन को ज्यादः परवाह नहीं रहती।

(१५८) च्वांगझा कहता है कि शरीर में जीव आता है उस को ना नहीं कह सकते, और जाते समय उस को रोक भी नहीं सकते पर दुनिया यह समझती है जीवन की मूर्ति के लिये शरीर का भरणपोषण करना काफी है। इस तरफ बेपर्वाही न करनी चाहिये। अगर शरीर पर बेदर्कारी बतानी होतो जगत् को ही छोड देना चाहिये। संसारी होने पर जगत् की चिन्ता से मुक्त हो जाता है, तो भी शरीर में ऐसा चेतन है जो शरीर को समय समय पर खबर देता रहता है, उस की भी हमेशा चिन्ता करनी चाहिये। इस तरह जिसका शरीर आरोग्यवान् हो, और जिसमें चेतनता अपनी असल की पवित्र स्थिति में होवे, उसकी ईश्वर के साथ एकता होती है। जैसे दीवार के

छेदों से सूर्य प्रकाश एक घडीभर पडता है तो दूसरी घडी नष्ट हो जाता है, जन्म मरण रहित एक भी प्राणी नहीं है एक परिवर्तन से जड चेतन रूप बन जाता है, दूसरे परिवर्तन से मरण होता है, जीवित प्राणी रोते हैं। मनुष्य शोक को प्राप्त होता है मानो तर्कश तीरोंसे खाली हो गया हो। कपडों की गठडी गिरपडी हो ऐसे कोलाहल में आत्मा उड जाता है तत्पश्चात् शरीर भी अपने निजदेशको प्रयाण कर जाता है।

(१५९) शरीर पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। च्वांगझा ने इस विषय में एक उदाहरण दिया है। एक मनुष्य के नाक पर एक मसा था मक्खी के पंख से ज्यादह मोटा न होगा, उस के काटने के लिये एक पत्थर घड़ने वाले को बुलवाया इस ने अपना हथियार इस होशियारी से चलाया कि वह मसा कट गया, वह रोगी निष्कंप बैठा रहा, इसकी चतुराई की बात गांव भर में फैलगई। एक छोटे राजा के नाक पर भी एक मसा था उसने भी पत्थर घडने वाले को बुलवाया, तब उसने ना कह दी क्यों कि मसा काटने की चतुराई की अपेक्षा रोगी को अपना मन काबू में रखने की बडी आवश्यकता है, क्योंकि निष्पन्द निश्चेष्ट हुए विना यह काम नहीं होसकता।

(१६०) हुइद्झा नाम का एक और तत्त्ववेत्ता चीन में हुवा था, वह च्वांगझा का समकालीन था। प्राचीन समय में ग्रीसमें जिस प्रकार शब्दों के सच्चे झूठे अर्थ कर के फसाते थे, उसी तरह की

आदत इस को भी पडगई थी। च्वांगझा भी इस बात को स्वीकार करता है कि हुइट्झा बडा विचारक पुरुष था। पांचगाडों में भर सकें इतने तो इस ने ग्रंथ लिखे हैं। लकडी की पतली पट्टियों पर उस समय ग्रंथ लिखे जाते थे। प्रत्येक पट्टी में एक छेद किया जाताथा, उस में रस्सी डालकर पिरोदिया करते थे। च्वांगझा हुइट्झा के सिद्धांतों को (परस्पर विरूद्ध) वदतो व्याघात दोष से युक्त करता है उस के पारिभाषिक शब्द भी अस्पष्ट हैं। जैसे कठोरता, श्वेतत्व इत्यादि भावों का अस्तित्व झूटा हैं एवं बुद्धि गम्य हैं।

"(१) ताज़े अंडों में पर कहां से आते है? (२) आग गरम नहीं परन्तु मनुष्य को गरम लगती है (३) आंख देखती नहीं परन्तु मनुष्य देखता है (४) प्रकार से गोला नहीं बनता परन्तु मनुष्य ही उसे बनाता है (५) काला घोडा और भूरी गाय मिलकर तीन पदार्थ होते हैं क्यों कि उनको भिन्न भिन्न गिने तो कए हो इस लिए दो और एक मिल के तीन होते हैं (६) घोडे विना के बछडेकी मां कभी नहीं थी क्योंकि जब मांथी तब वह मां बिना का कहलाता नहीं (७) तुम १ पाद की लकडी लेकर उस को बीच में से काटो और प्रति दिन इस प्रकार एक एक टुकड का आधा आधा करो तो तुम उस लकडी को पूरी नहीं काट सकोगे"

(१६१) च्वांगझा हमेशा यह कहता 'हुइटझा का दुनिया को क्या काम' मच्छर अपने गुन गुनाने को दबाने के लिए

ज्यादह गुनगुनाता है। वही हाल हुइटझा का है। अपनी छाया के साथ दौडने वाले आदमी की तरह के हुइटझाके विचार हैं।

(१६२) च्वांगझा मरने लगा तब उस के शिष्योंने ऐसी इच्छा प्रगट की कि हम आपके शव का ठाट के साथ भूमिदाह करना चाहते हैं। च्वांगझाने उत्तर दिया आकाश मेरे शव के लिए (छप्पर है) ढक्कन हैं पृथ्वी सन्दूक है। सूर्य चंद्र और नक्षत्र मुझे भेजने को आने वाले हैं ये ठाठ क्या कम है तब शिष्योंने कहा कि हमें डर है कि आपके शरीर को कौवे चील खाने को आवेंगे, तब च्वांगझाने कहा कि पृथ्वी के ऊपर रहेगा तो गीध वगैरह खावेंगे, पृथ्वी के अंदर डालेंगे चीटी आदि खावेंगे तो एक के मुंह से छीन कर दूसरे को देने में कौनसी बडाई है।

(१६३) जिंदगी भर चीन में पुस्तक बांचनें तथा व्यापार करने काही कार्य होता है ऐसा मत समझना, चीन के पुराने दफ्तरों को देखते हुए यह मालूम होता है बडे बडे अमीरों के साथ शिकार में लोग जाया करते थे शिकार का उपयोग करने के अलावा शौक के लिये बहुत से लोग जाया करते। वहां के शाह-नशाह अपने शिकार की सवारी जंगी ठाठसे सजवाया करते थे।

(१६४) ईसा से सौ वर्ष पूर्व बाज पक्षीसे शिकार करते थे, उस समय के एक आदमी पर भेजी हुई चिट्ठी हमें मिली है, उस में ऐसा बतलाया है कि वह मनुष्य घोडे और कुत्तों के एक साथ जंगली पशुओं के पीछे दौडा करताथा, खरगोश व पक्षिओं को

पकडने के लिए बाज़ों को छोडता था। उत्तर के चीन में बाज़ पक्षीसे शिकार करवाने के रिवाज अब भी हैं। किसी खरगोश के पीछे ही देशी जंगली कुत्तों को छोडते हैं, लेकिन वे पीछे ही रह जाते हैं। कुत्ते से बचने के लिये जिस समय खरगोश झपटता है उस समय बाज पक्षी अपने पंजे मारकर बेहोश कर देता है। फिर कुत्ते भी आपहुंचते हैं।

(१६५) जो शिकारी अपनी पेट की खातर शिकार करते हैं, वे किसी समय बडी भारी युक्ति करते हैं, बन्दूक की शिकार की अपेक्षा भी उन को अधिक पैसे मिलते हैं। पर उस को हम शिकार नहीं कह सकते, जंगली बतक पकडनी होतो, तलाव के पानी में सिरको टोकरीं से ढांक पानी में उतर धीरे धीरे पैर रखकर पक्षियों की तरफ जाता है। उस समय ऐसा मालूम पडता है कि वह टोकरी अपने आप मानो तैरती है। फिर पानी में हाथ लंबा कर एकाद् बतक को पकड पानीमें डुबोकर मार डालते हैं। अपनी संख्या में से कुछ कम हुवा ऐसा उनको ज्ञान ही नहीं होता। इस तरह वह सब वतकों को क्रमशः पकड लेता है। अपने पास तीरकमठे के होते हुवे, शान्त पक्षियों को कान्फ्युशियस कभी नहीं मारता था, इस का अपूर्व मनोनिग्रहथा।

(१६६) जाल डालकर मछलियोंके पकडनेका वर्णन चीनके कवियोंने बहुत खुशीके साथ किया है। नदियों में जालसे मछली पकडना अधिक पसन्द करते हैं। शोभाके लिये जो मछलियां

पकडते हैं वे लोहेके छडोंका उपयोग करते हैं। खाउधरा नामक खास मछली पकडनेवाले एक तरहके पक्षी होते हैं, छोटी छोटी लकडीकी खपच्चियोंपर ये पक्षी बैठाये जाते हैं ऐसा चीनके दक्षिण भागमें करते हैं। वह पक्षी अपनी चोंचसे तैरती हुई मछलीको पकडता है, और वह आदमी चोंचसे मछली ले लेता है। यह पक्षी मछली न खा जावे इस लिये इसके गलेमें एक लोहेकी कडी बिठा देते हैं। ज्यादह मछली जैसे जैसे वह पकडता है उसी तरह मछलीका टुकडाभी उसको खिलाये जाते हैं। जिन्होंने अच्छी तालीम ली है वे पक्षी प्रामाणिकपनेसे मछली पकडनेका कार्य करते हैं उनके गलेमें वह कडी नहीं डाली जाती कान्फ्युशियसभी मछली पकडने का बडा शौकीन था लेकिन जालका कभी नहीं उपयोग करता, चीनमें एक और विद्वान् हो गया है वह मछली पकडते समय कांटेकाभी उपयोग नहीं करता था, लोहेकी छडीसेही पकडता, वह यह कहता था कि मनुष्यकी चतुरताके सामने बिचारी मछ-लियोंका क्या चल सकता है।

(१६७) उस समय चीनमें बहुत से खेल खेले जाते थे, पर वे अब राष्ट्रीय जीवनमें नही रहे। प्राचीन ग्रन्थोंसे उनके प्रमाण मिलते हैं। सिर मारने के खेल का वर्णन ईसासे पहिले दोसौ वर्ष के इतिहास में मिलता है। दो मनुष्य अपने शरीरपर सांडकी खाल ओढकर सिर पर उसके सींग आदि लगाकर युद्ध करते थे। एक हजार वर्षके बादका इतिहास बतलाता है कि इसका परिणाम

लडनेवालोंके सिर चकनाचूर होनेमें, हाथ पैर टूटने एवं लोहु-लुहान होनेमें आता था। राजमहेलके चौकमें यह खेल होता था।

(१६८) सिर लडानेकी क्रीडासे पहिले मुक्काबाजी और मल्ह कुस्ती सैंकडों वर्षोंसे चली आती है, इस विषयके पक्के उस्ताद बौद्धधर्मके एक मठके साधुओंमें से मिल गये थे। यह मठ ५०० इस्वीमें बांधा गया था। उनके शिष्य प्रशिष्योंसेही जापानी लोगोंने जुजुत्सु नामकी शारीरिक व्यायाम कला सीखी है। इस शब्दका अर्थही नाजुक कला होता है, चीनी लोग मुक्काबाजीमें कैसे होशि-यार थे उसका ज्ञान करानेवाले सोलहवीं शताब्दीके लश्करी ग्रन्थ में से अधोलिखित प्रसंग है।

(१६९) जहांतहां सारे शरीर में घूम सके, ऐसा दो हाथ चपल होने चाहिये कि सामने खडे मनुष्यकी कमजोरीका लाभ उठा सके, पैर धीरे मजबूतीके साथ रखने चाहियें। आगे पीछे हटना पडे तो नुकसान नहो इस तरह, इस कलाकी खूबी तो पैरोंको उछाल छलांग मारनेहीमें है। सामनेके मनुष्यको जमीन पर चित सुलानेमें इस कलाकी जंगली स्थिति दृश्यमान होती है। उसी तरह सामनेका आदमी सीधा थप्पड या घूंसा मारनेमें इस कलाकी त्वरा दीख पडती है। सामनेके आदमीको गलेसे इस तरहसे पकडना कि वह आकाशकी तरफ देखा करे इसमें बारीकी है।

(१७०) हिन्दुस्थानकी तरह चीनमें फुटबॉलकी क्रीडाभी बहुत दिनोंसे चली आती है। पहिले तो वे गेंदमें बाल भरते थे, लेकिन

पांचवीं सदीसे हवा भरके खेलते हैं। इस खेलमें जय पराजयका निश्चय करनेके वास्ते जो हद निश्चित की जाती है उसका चित्र हमने देखा है। वह विजयसूचक कमान जैसी है। खेलनेवाले किस तरह खडे रहें यहभी उसीसे मालुम पडता है। फुटबालको लात मारनेके ७० प्रकार उसमें बतलाये हैं। इतनेपरभी पूरे नियम अभी तक नहीं बन सके। एक लेखकने ऐसा लिखा है कि, 'विजय प्राप्त करनेवाले पक्षको पुष्प फल शराब प्याला रकाबी इनाममें दिये जाते थे, एवं हारनेवालोंको वेंत लगाते तथा औरभी अपमान सहन करने पडते थे, यह खेल कई सौ वर्षोंसे चीनमें नहीं रहा था। वह यूरोपीय अमलदारोंकी देखरेखमें पाठशालाओंमें अब फिरसे दाखिल हुआ है, और नौजवानोंको पसन्दभी आया है।

(१७१) ७१० इस्वीमें पोलोका खेळ चीनके साहित्यमें दीख पडता है। शाहनशाह और उसके दरबारियोंके संबन्धमें इसका उल्लेख है। यह खेल चीनमें बहुत दिनों तक खेला गया है ऐसा मालूम पडता है। स्त्रियोंकोभी गधोंपर बैठाकर यह खेल सिखाया जाता था। किटन और तार्तार इस खेलके आचार्य थे। यह खेल उन्होंनेही निकाला था, अथवा ईरानके साथ चीनका संबन्ध होने से ईरानसे ले आये थे। दशवें शतकमें ऐसा हुआ कि शाहनशाह को इस खेलका शौक पैदा हुवा यह एक राजपुरुषने देख लिया, और उसको इससे घृणा ऐसी उत्पन्न हुई कि उसने उसको बन्द करानेके लिये एक अर्जी शाहनशाहके हुजूरमें भेजी, इसको बन्द करनेमें उसने तीन कारण बतलाये।

(१) राजा और प्रजा एक साथ खेलें तो आपस में कलह उत्पन्न हो, राजा के जीतने पर प्रजा शर्मिन्दा हो, और राजा हारे तो प्रजा को अयोग्य आनंद उत्पन्न हो।

(२) हांथ में डंडा लेकर घोडे पर बैठ के अपनी स्थिति का ज्ञान न रह दौड के पहिले आने में राजा और प्रजा के संबन्ध में भी ओछापन पैदा होता है।

(३) महाराजा की उत्तरदायिता का महत्व न समझ कर एकदम मिलने को तैयार होजाना, अर्थात् राजा का राज्य के प्रति उत्तरदायित्व भूल जाना है और महाराणी की पूज्यभावना नष्ट हो जावे।

(१७२) चीन में सदासे यह समझ चली आ रही है कि प्रत्येक राज पुरुषको राजासे न डर के एवं उस की कृपाओं की परवाह न कर योग्य सलाह देनी चाहिये राजा अगर राज्य को हानि पहुंचानेवाला रास्ता पकडे किंवा दरबार की प्रतिष्ठा की हानि होती हो तब वह खुले दिलसे विरोध करे, इस के साथ यह भी समझते हैं कि इस विरोध करने के फल चखने को भी उसे तैयार रहना चाहिये, एवं वह फल भयंकर होता है, स्वदेशा-भिमान से कदाचित् विरुद्ध ठहराने में आवें तो देहान्त दण्ड तक को तैयार रहना चाहिये।

(१७३) ८१४ इस्वी में बौद्धधर्म के अनुयायी एक शाहनशाहने हिंदुस्थान से भेजी हुई सदा के लिये सुरक्षा में रक्खे जानेवाली बुद्ध भगवान् के शरीरकी एक हड्डी को आदरसत्कार करने के लिये जंगी तैयारी की गई थी, उस समय प्रजा का

हानयु नामक एक राजपुरुष था, वह अपनी प्रतिभासे ही ऊंचे चढा था, दुर्भाग्य से कर उगाहने के बाबत में एक अप्रसन्न करने वाली अर्जी भेजने से ११ वर्ष पहले उसे देशनिकाला दिया था, क्षमा देकर उसे बुलाया था, उसने अब के भी अर्जी एक लिख भेजी जिसमें कडवी भाषा में बुद्ध तथा उस के ग्रन्थों की खूब निन्दा की थी, उसने यह लिखा था कि बुद्ध की हड्डियों को लाने के वास्ते ठाठ के साथ उत्सव करने का जो विचार किया है वह हलका करनेवाला होनेसे उस को बन्द कर देना चाहिये, एवं कान्फ्युशियस के सिद्धान्तों की पवित्रता को कलंक मत लगावें। उस के मित्रोंने अगर बीच विचाव न किया होता तो उसका समय पूरा ही हो गया था, आखिर उस को रचेऐ गांव में देशनिकाल की सजा देकर रख दिया। उस समय वह प्रदेश जंगली जानवरों तथा आदमियों से भरपूर था एवं उस को चीन के राज्य में अभी गिना भी न था, वहां जाकर जंगली लोगों के सुधारने का काम हाथ में लिया, लेकिन उस को फिर वापिस बुला लिया, और असली नौकरी दी गई, उस के नाम से एक मंन्दिर बांधा गया है उस में यह लिख दिया है 'यह जहां जहां गया वहां वहां पवित्रता फैलाई'।

(१७४) दोसौ वर्ष बाद चीन में एक और राजपुरुष पैदा हुवा, उस को भी बहुत वार देशनिकाल की सजा भोगनी पडी उसने अपने से प्रथम उत्पन्न हुवे राजपुरुष के लिये उस की कबर पर यह बहुमान के शब्द लिखे थे, 'दिनप्रतिदिन सत्य छुपाया

जाने लगा, वाङ्मय का विकास भी बन्द होने लगा, चहुंओर शंकाओंका प्रादुर्भाव होने लगा, उस वहेमके सामने बहुतसे पढे लिखे लोगभी न ठहर सके, उस समय ह्वान यु नामका वीर पैदा हुआ, वह सादे सूतके कपडे पहनता था, उसने उस पाखण्डको हास्य उत्पन्न करनेवाले कटाक्षसे उडा दिया।'

(१७५) परन्तु चौदहवें शतकसे चीनमें गुप्तचर विभाग नियमपूर्वक स्थापन किया गया था। हिन्दु राजनीतिके अनुसार चीनमें भी गुप्तचर राजाके आंख कानके समान माने जाते हैं। उनका यह काम है कि कोई राजपुरुष अथवा मंत्रिमण्डल बादशाहके नामसे कोई ऐसा कार्य करे कि वह अयोग्य हो तब वह खबर शाहनशाहको पहुंचानी जिससे विरुद्ध हकीकत मालूम पडे। ऐसा रोजगार करनेवाला गुप्तचर सबमें दोष देख सकता है, उसको किसी तरहका दण्ड नहीं मिलता ऐसा ऊपर ऊपर से ठहराया है, तोभी वह यह अच्छी तरह समझता है कि न्यायबुद्धिपर वा कृपापर बडी बडी आशाएं बांधना निरर्थक है। उसको ऐसा जब मालूम होता है कि मेरे शब्द क्षमा नहीं किये जावेंगे, तब शीघ्रतासे प्रार्थनापत्र भेजकर अपनी हत्या कर लेता है जिससे लोगोंका ध्यान इस तरफ जावे।

(१७६) आत्महत्या कर लेनी, और भर समाजमें शूली पर न चढना यह चीनमें एक विशेष अधिकार समझा जाता है, वैसा हक किसी किसी समय कानूनन जिसकी जिन्दगी लेना निश्चित किया गया है ऐसे [illegible] अमल [illegible] यह हक दिया जाता है। क्योंकि

इससे ज्यादह अपमान करनेका कोई कारण नहीं है। ऐसे अमलदारको खुद सम्राटकी तरफसे रेशमकी रस्सी भेज दी जाती है। तत्काल वह अमलदार आत्महत्या कर लेता है। तोभी वह फांसा लटकाकर मरता है यह नहीं। हां जहर पीकर मर जाता है। चीनमें जहर पीनेको सुवर्ण निगलनेका प्रयोग कहते हैं। सचमुच बहुत दिन तक यही माना जाता था कि चीनी अमलदार सुवर्णकोही निगलते होंगे। पर सुवर्णमें जीव लेनेकी शक्ति न होनेसे ऐसा अनुमान किया जाने लगा कि सुवर्णके वर्कको नाकमें डालकर आत्माको घोट आत्महत्या करते होंगे। कितनेही मूर्ख चीनी तथा यूरोपियन यह बात अबतक मानते हैं। तोभी देशी प्रमाणसे यह सिद्ध हो चुका है कि सुवर्णकी खानोंमें चुरानेकी दानतसे बहुतसे लोग सोनेको निगल जाते हैं तोभी नहीं मरते, इसका दूसरा भी निराकरण है। अपनी नाराजगी बतलानेके वास्ते चीनियोंने आत्महत्याका पर्याय वाचक शब्द 'सोना निगलना' माना होगा। क्योंकि उपभोग किया जाता है। राजाके मरनेपर यह नहीं कहा जाता कि राजा मर गया बाल्कियह कहते हैं कि सम्राट ईश्वरके अतिथि बने हैं। माबापके मरनेपरभी 'मेरे माबाप नहीं है' ऐसा कहेंगे। अमलदारके मरनेपर यह कहेंगे कि फलाने साहब अब वेतन नहीं लेते। सामान्य आदमीके मरनेपर यह कहेंगे कि वह प्राचीन पुरुष बना। अंग्रेजीमेंभी यही कहा जाता है वह बडे मण्डलमें मिल गया, इत्यादि वाक्य बोले जाते हैं। उसे ठठरीमें मुर्दा रखनेपर वह अपने चिरगृहमें गया ऐसा कहते हैं। उसे गाडते हैं तब कहते हैं कि वह प्राचीन युगके शहरमें है अथवा निवासस्थानमें है। जहर खाके मरनेपर यह कहते हैं कि यह सोना निगल गया।

अष्टम प्रकरण

खेल कूद

(१७७) ऊपर ही कह दिया है कि अब मरदाने खेलों का जमाना जा चुका है। अर्वाचीन समय के परिवर्तन में पुनः मर्दानी खेल दाखिल किये जावें ऐसी आशा है। मल्हों की कुस्ती का बचा हुवा रिवाज अभी तक है। तीर मारने की कला दैवी समझी जाती थी। इस में तातीर लोगोंने अच्छी उन्नति की थी। पतंग (कनकौवा) उडाने में भी चीनी बहुत कुशल थ, पतंग धागे में कागज के टुकडे लटकाये जाते थे। वे आकाश में जाके फटाके की तरह फूटा करते थे। चीन में एक खेल ' डाएवालो ' नामक है, यूरोप में भी वह आजकल दाखिल की गई है सर्दियों में कुछ मांचू बर्फ पर सरकने का खेल खेलते हैं, परन्तु आजकल के जमाने के लोग घर पर खेलने का खेल बहुत पसन्द करते हैं, और सम्पूर्ण जगत् की तरह पैसा गुमाने वाली या पैदा करनेवाले खेल घर पर ही खेलते हैं।

(१७८) चीनियों मे जुवा खेलने का रिवाज आम तौर पर है। चौक में रोटी खरीदने जानेवाला छोटा बच्चा भी दुकानदार के साथ एकाध दाव खेलके ही आता है। वहां पर वह प्याले में फांसा डालता है एक रोटी के बदले यातो दो रोटी लावेगा

अथवा एक भी खो आवेगा, मजदूर भी दो समय की खाने की छुट्टी में पत्तों द्वारा जुवा खेलते हैं। चीनके पत्ते युरोप के पत्तों की अपेक्षा छोटे कद के होते हैं और पिछले भाग में रंग बिरंगे होते हैं। दशवीं शताब्दीमें राजमहल की किसी कुलीन स्त्रीने यह खेल निकाला था, पहले तो वृक्षों के पत्तों से शुरू हुई थी, फिर इस स्त्रीने सुवर्ण के ढालवाले कागज के पत्ते दाखिल किये। एवं शतरंज की तरह के कई खेल वहां खेले जाते हैं। उस में से कितने तो बहुत प्राचीन हैं। शतरंज में चीनी यूरोपियनों स कम नहीं है। इस से यह सिद्ध होता है शतरंज खेल किसी एक स्थान से ही पैदा हुई है। परन्तु ये सब खेल पैसे के बिना नहीं होते, इस जुए की आदत देशभर में फैल गई है। इस राष्ट्रीय दुर्गुण से चीनमें बहुत घर खराब होते हैं।

(१७९) जुएके पश्चात् तमाशामें नाटक शालाका अधिक महत्त्व है, जिस तरह द्यूत राष्ट्रीय दुर्गुण हो गया है उसी तरह नाटक उस देशमें निर्दोष आनन्द लूटनेके साधन हैं, रंगभूमिमें समय समयपर नाटक न खेले जावे तो चीनीओंको अपना जीवन भी असह्य हो जावे, चीनकी प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओंका परिचय इन नाटकशालाओंमें तमाकू चाह पीते पीते मिल सकता है। खुल्ली तौरपर प्रहसनभी किया जाता है। जिससे एक तरहकी खुशी हासिल होती है।

(१८०) चीनियोंको हसानेकी शक्ति अगर किसीमें हो तो वह एक योग्यता समझी जाती है। अगर किसी परदेशीमें यह शक्ति हो तो समयपर बन्दूकसेभी ज्यादह काममें आती है। बहुत दिन पहले एक जलयान फार्मोसा नामक टापूके किनारेपर टकरा कर टूट गया, तत्काल मल्लाह और यात्रिओंको पकडकर कैद कर लिया गया, फिर वे एक मकानमें बन्दकरके रक्खे गये, उन्होंने वहां बैठे बैठे जो कुछ लिखा होगा उसके चिन्ह आजभी दीख पड़ते हैं। फिर उनको मारनेके लिये बाहर निकाला गया। उस भयंकर आज्ञाके पालनेके पहिलेही एक आदमीने बकरेके माफक नृत्य किया, सिर नीचे व पैर ऊंचे कर कूदने लगा, इससे लोग खुश होकर बेतहाशा हंसने लगे फिर मुख्य अमलदारने उसे खिलाड़ी आदमी कहकर छोड दिया।

(१८१) प्रश्नोत्तर रूपसे कुछ संवाद बनाये जाते हैं, हास्यरस में कुशलता प्राप्त करने के लिए कठिन तालीम लेनी पडती है एवं यह शिक्षण बालकपनसे शुरु करते हैं। केवल नाटक के कुछ भाग याद कर लेने से ही काम नहीं चलता बल्कि शारीरिक सख्त तालीम लेने की जरूरत पडती है प्रति एक घण्टे तक मुख पोला रखना पडता है सबेरे वायु सेवन करना भी आवश्यक है फिर गाना, नाचना आदि सीखना पडता है। सिर जमीन पर रख पग आकाश की तरफ रखने की तथा गुलांट मारने की कसरत करनी पडती है। फिर इस को स्त्री या पुरुष का

वेष देना निश्चित होता है । हिन्दुस्तान की तरह पुरुष स्त्रियों का वेष चीन के नाटकों में लेते हैं। १७३६ से १७९६ तक शाहनशाह सियनलुंग की माता नटी थी, तब से नटी का काम स्त्रियों को नहीं देते। इंग्लेण्ड में भी शेक्सपियर के समय स्त्रियों का भेषयुवा लडके ही लेते थे, अब यह अपनी खुशी की बात है कि किसीको हास्यरस का वेष, किसी को करुणरस या सामान्य ग्रहस्थ अथवा गृहिणी का वेष देना।

(१८२) चीन में नाटकशालाओं की रंगभूमिपर स्त्रियें भाग नहीं लेतीं इससे लोगों को कुछ भी न्यूनता नहीं मालूम पडती, हावभाव की नकल आबेहूब करते हैं स्त्रियों की नकल करने में पैसे को छोटा बनाने में भी कसर नहीं करते, अमुक स्त्री नहीं पुरुष है ऐसा कोई प्रेक्षक वर्ग में से पकड देना एक आश्चर्यही है।

(१८३) नटोंको यूरोपियन देशों की कठिनता की अपेक्षा चीन में अधिक कठिनाइया हैं। आनंद उदासीनता शोक वगैरह के भिन्न भिन्न भाव चीनी नट को दिखाने पडते हैं। यह भी याद रखना पडता है कि मैं पुरुष होते हुए स्त्री का वेष धारण किये हुए हूं। हां चीन की नाटक शालाओं में पडदा दृश्य बताने वाले चित्र और लकडी आदिका सामान कुछ भी नहीं होता, जो कुछ होता भी है वह बहुत थोडा, इस लिये नट को अपने हावभाव से एकतरह की भावना खडी करनी पडती है कि जिससे किसी

तरह की न्यूनता न मालूम पडे, बिना घोडे के घोडे सवार के माफक सब काम दिखाने पडते हैं। इसी तरह एक छोटीसी मेज पर से बोलने वाला नट ऐसा मालूम होता है कि मानो यह किले से बोलरहा हो।

(१८४) यह बगर सामान के फर्जी खुशी का मान लेना मूर्ख सरल सादे चीनियों में ही होसकता है इस बातपर किसी यूरोपियन को हसने की सूझे लेकिन इंग्लण्ड में भी इलिझाबेथ के जमाने में वहां भी यही दशा थी। सरफिलिप सिडनी लिखता है कि एक समय बागीचा और कल्पित फूलों का दृश्य कल्पित जहाज के नाश का दृश्य बतलाता था, दूसरे समय वही दृश्य कल्पित रंगभूमि मान लेने की फर्ज होती थी, रंगभूमि की दोनों तरफ दो सिपाही ढाल तलवार ले कर खड़े होजाते थे, इतनेसेही दर्शक लोग संतोष मान लेते थे। खुद शेक्सपियर पांचवे हेन्री के नाटक के आरंभ में बतलाता है कि एकही सिपाही को रंगभूमि पर हजार आदमी की टुकड़ी समझलो। यही बात चीन में भी समझलो, केवल चेष्टा के बलसे प्रेक्षक के मन में भाव उत्पन्न करना यह कोई छोटीसी बात नहीं है। इस में उत्तम प्रकार की कुशलता एवं हावभाव की बड़ी जरूरत पडती है। दृष्टिगोचर जगत केवल भाव मय है ऐसे माननेवाले हिंदुको विशेष जानने की जरूरत नहीं है।

(१८५) हरसाल चीनी ओमि पर्वत के शिखर पर कठिन श्रम सहन कर के यात्रा करने को जाते हैं। वह पर्वत शुशॉन परग-

ने में आया है। उसपर चढ नीचे ढलाव की ओर देखते हैं तो प्रकाश का एक बडा गोला नजर आता है उस को बुद्ध भगवान की तेज माला कहते हैं। बहुत से देखते हैं पर अनेकों को यह नजर भी नहीं आता, दीखना यह श्रद्धा की बात है। नट की हाथ सफाई से जैसे अनुपस्थित बहुत सी चीजों को देखते हैं। इन में से फिनिस्टाइन लोगों की गणना खास कर कथन योग्य है कुछ वस्तु हम नीचे गिनाते हैं।

(१८६) चीन में नाटक शालाकी रंगभूमि पर पडदे नहीं होते। बाजे बजाने,वाले नट के पीछे रंगभूमि पर बैठते हैं। कोई भूल जावे अथवा कोई गलतीसे उसको बतलाने वाला कोई नहीं रखा जाता। रंगभूमि के नौकर दोनों तरफ खडे रहते हैं वे छोटे पर्दे छोटी नलियां, छोटी मेजें और एकाद छोटी कुर्सियां ले आते हैं। इसपर बैठते नहीं हैं पर किला या घर मान लेते हैं, ये नौकर बीच बीच में पात्रों को चाह पिलाते हैं, क्योंकि उनके आवाज चिल्लानेसे बैठ जाते हैं। गाने के समय चीनी चिल्लाकर गाते हैं। नौकरों का कार्य प्रेक्षकों के सामने ही होता है। नाटक में जो मर गये वे भी प्रेक्षकों के सामने घूमते फिरते रहते हैं। कदाचित मरणतुल्य होकर पडे हों तो जुदी तरहका मृग आदि बनाते हैं, और फिर जहां तहां फिरने लगते हैं। एक नाटक के खतम होने पर फौरन दूसरा नाटक शुरू हो जाता है। बीचमें समय निरर्थक नहीं जाता, इससे लोगोंका यह खास ख्याल हो

गया है की चीन के नाटक बहुत बडे होते हैं। चीन के फौजी कानूनसे पिछले राजा और रानियों के नाटक नहीं हो सकते परन्तु इस नियम का अब वह अर्थ किया गया है कि जो सम्राट गद्दीपर हो उसके पूर्वजों का नहीं।

(१८७) चीन के गरीब वर्ग के लोगों को तथा उनके लडकों को आनन्द देने के लिये वर वधु के खेल अथवा अपने देव की रामलीलाकी माफक बहुत से खेल देखे जाते हैं। वह देखने को बहुतसे लोग एकत्र होते हैं। वे खेल बुद्धिमें और आकर्षण करने में बहुत अच्छे होते हैं। ईसासे ८०० वर्ष पहिले से २०० वर्ष तक अथवा ७०० वर्ष वाद ये खल दाखिल हुए हैं। इग्लेण्ड आदि में पुतलियों के नचाने के बहुतसे वर्ष पहले ये खेल चीनमें होते होंगे, ऐसा मालूम पडता हैं। ईसा से दोसौ वर्ष पहिले की यह बात है कि उस समय के शाहनशाह को हूण लोगोंने घेर लियाथा। उनका नेता अपनी स्त्रीको भी साथ लाया था। इस समय शाहन-शाह के एक नौकर को एक युक्ति सूझी और सुन्दर लडकियों के पुतलों को शत्रु के नजर के सामने इस ढंग से रख दिये कि उनको देखकर हूण नेताकी स्त्रीने अपने पतिसे कहा की लश्कर बिखेर दो इतनेमें शाहनशाहको भागने का मौका मिल गया।

(१८८) चीन में पुतलियों के खलसे छोटे लडकोंका बडा मनोरंजन होता है। हिन्दुस्तानकी माफक मल्ह रस्सेपर नाचने वाले मदारी आदि तमाशा करते हैं तब लोगोंकी बडी भारी

भीड इकट्ठी होजाती है। रास्ते पर रामलीला जैसे तमाशों के लिए मंडप बांधकर वहां के भीड भडके से रस्ते रुक जाते हैं। पैदल लोगों को जहां तहां गली कूचेमेंसे निकल जाना पडता है। चीन में बात कहने वाले लोग भी मिलते हैं। किसी एक व्यापारिक केन्द्र के पास चौराहे पर एक स्थान खरीद लेते हैं, वे पुस्तक में लिखी भाषा नहीं बोलते परंतु बोल चालकी सीधी सादी भाषा में युद्ध, पराक्रम, पथिक सिपाहियों के मुंह में लकडी की लगाम लगाने की बातें रात को छापे मारनेवाले सिपाहियों की बातें, निमक हलाल लोगों को जय मिलने की बातें, जवान आशावादी कुमारों को फंसाने वाली सुंदर कुमारिकाओं की बातें करते हैं। परन्तु प्रत्येक बात में परिणाम स्वरूप में धर्म की जय और पाप की क्षय तो कहते हैं।

(१८९) चीन की सामान्य जनतातो यही मानती है कि देश में भूत प्रेत भरे पडे हैं। पापी जिन की अन्त्येष्टि अच्छी तरह नहीं हुई या भूमिदाह की क्रिया विहित पद्धति से न हुई हो ऐसे सब जीव अधोगति को प्राप्त होते हैं। भूत के शरीर की छाया नहीं होती वे अंधेरे कोने में रहते हैं, कोई बेहोष आदमी जाता हो तो उस पर टूट पडता है। यथा शक्य उसका कलेजा खा जाते हैं, कान्फ्युशियस का यह सिद्धांत है, कि ‘ जो लोग भूतयोनि मानते हैं उन के लिये हैं ’ इस मत के मानने वालों का खण्डहर आदि में अन्धकार के समय जाने को कहा जावे तो नहीं जासकते। जुवान और कल्पना शक्तिवाले लडकों को तो वह जल्दी असर करता है।

एक उदाहरण देते हैं। एक आदमी को शराब पीने का बहुत शौक था सोते समय बिस्तर के पास शराबकी बोतल को रखकर सोता था, रात को पीना हो तो तत्काल पी सके। परंतु पीने के लिए रातको उसने हाथ आगे किया तब किसी भूतने वह हाथ पकड लिया, और उस को खैंचकर जमीन के अन्दर लेगया, तब वह आदमी चिल्लाने लगा, तब संबन्धी सगे और पडोसी दौड आये, उन्होंने देखा कि उस के सिर पर जमीन थी, मानो पानी के अन्दर जिस तरह पडा हो।

(१९०) इस से यह अनुमान होता है कि ज्यादा तर चीनी जमीन पर ही सोते हैं। राजधानी पेकिन में एक खण्ड से अधिक नहीं बना सकते, उस का कारण है कि प्रत्येक घर बागीचे के अन्दर होता है। वहां वृक्ष उगे हुए होते हैं एवं उनमें स्त्रियें बैठी बैठी सिया करती हैं, हवा खोरी करती हैं एवं इच्छित व्यायाम भी करती हैं।

(१९१) एक दिन चार मुसाफिर रात के समय किसी बजारु भोजन सराय भोजन शाला में आये। वहां उन को एकही कमरा रहने को दिया, उस कमरे में भोजन शाला के मालिक की पुत्र वधू का शव पडा हुआ था। चार मुसाफिरों मे से तीन तो सो गए लेकिन चौथा जागता रहा, इतने में मृत व्यक्ति उठी और उन तीनों आदमियों पर चढ के श्वासोच्छ्वास लेने लगी, यह देख कर वह चौथा आदमी घबडा गया, वह मुर्दा उसके पास आए इससे

पहिले उसने अपना सिर गोद में लिया, थोडे देर बाद ही अपने एक मित्र को उसने लातमारी पर वह हिला नहीं, तब वह कपडे से लिपटा हुवा बाहर भागने लगा। तत्काल उस के पीछे वह शव भी खडे होकर उस के पीछे होलिया, वह गलियों में जाकर लगा चिल्लाने, लेकिन उस की मदद को कोई भी नहीं आया, वह शव उस पर वार करता इतने में ही वह वृक्ष के पीछे छिप के गया, तब वह मुर्दा भी गुस्से में आकर पकडने का भयंकर प्रयत्न करने लगा। आखिर उसने वृक्ष को दोनों हाथों के बीचमें लेकर प्रयत्न करने लगा लेकिन वह पीछे हटगया। तब वह भूत तो वृक्ष को लिपट कर ही रह गया। यह आदमी सबेरे मूर्छित मिला, तीनों मुसाफिर तो मरही गए थे।

(१९२) युरोपियन लोगोंकी तरह उन्होंने आराम का दिन कोई भी नहीं ठहराया है, हां निमंत्रण आदि छुट्टी के एक साधन हैं। युरोपियन व्यापारियों के संबंध में आनेसे चीनियों में भी रवि-वार मनाना स्वीकार किया है। वर्ष में कितनेही दिन त्योहार के माने जाते हैं लेकिन वे पालन करना अपनी खुशी पर है। बैठते वर्षका पहिला दिन तहेवार के रूप में आम लोगों को भी पालना पडता है। इस तहेवार के २० दिन पहिले से तथा २० दिन बाद तक सब कचहरी बन्द रहती हैं और कोई कार्य भी नहीं किया जाता उस समय सब कचेरियोंकी कूंचियां तथा मुहर सिक्का वगैरह अमलदारों की स्त्रियोंके सिपुर्द कर दिया जाता था। चीनमें स्त्रियां

गुलामीमे हैं ऐसी बातको सुनकर कौन मान सकता है? लेन देनका सब हिसाब वर्षके आखिरके दिनके मध्यरात तक साफ आइना जैसा कर लेते हैं। इस त्योहारके प्रारम्भके पाहिले गृह देवताओंको सुमधुर मिठाइयोंका बलिदान देते हैं। क्योंकि गृह देवता ईश्वरके पास जा के वर्षभरका पापका चिट्ठा पेश कर आते हैं। नवीन वर्ष बैठनेके पहिले ये गृह देवता ईश्वरके पास जानेकी तैयारीमें होते हैं। कोई ऐसी बात न कह देवे जिससे कि घर वाले आदमियोंको अनिष्ट न भोगना पडे, इस लिए मिठाई खिलाके उसका मुंह चिकनाहटसे भर देते हैं। जिससे चिकनी जीभसे वह कुछ नहीं, कर सकता एवं वह गृह देवता असावधान होनेसे चिकनी मिठाई खा जाता है। ईश्वरके दरबारमें जाता है जीभके चिपक जानेसे वह कुछभी नहीं कह सकता, इसी समय खूब आतिशबाजी छोडी जाती है जिससे भूत प्रेत आदि सब भाग जाते हैं, एवं नवीन वर्ष अच्छी तरह शुरू होता है। नये वर्ष के दिन अच्छे कपडे पहनकर सगे संबन्धियोंसे मित्रोंसे मिलना अर्थात् फल रोटी आदि पहुंचाना। अमलदारोंसे मिलते समय कुछ भेट ले जानी पडती है। प्रायः अमलदारोंसे नहींभी मिलते। सगे संबंधी मित्र आदिको भेटमें कभी सोने चांदीके सिक्के, अथवा रुपये पैसेकी भेट रख देते हैं। रास्तेमें एक दूसरेसे मिलते समय नया वर्ष! नया वर्ष! द्रव्यवान् हो! द्रव्यवान् होवो कहते हैं। परन्तु मुडदेके सामान बेचनेवालेको कोई नहीं कहता कि पैसेवाले बनो।

(१९३) चीनके एक अमलदारने एक समय यह कहाथा कि चीनका बादशाह जिस दिन कहे कि वह नया वर्षका पहला दिन है उसी दिनसे पहिला दिन माना जाता है पर यह बात सच्ची नहीं। क्योंकि खगोलवेत्ताओंकी मण्डली निश्चित करती है वही पाला जाता है। यीसूके यूरोपके त्योहारके माफकही यह समझना चाहिये। २०वीं फर्वरीके पहिले और २१वीं जनवरीके पश्चात् यह दिन आनाही चाहिये। राजमहेलसे चाहे जैसे हुकम आवें तोभी २१ जनवरीसे पहिले और २० फर्वरीसे पीछे यह त्योहार आताही नहीं। राजा जो चाहे सो करे और चीनी चुपचाप बिना कारण उसे सहन कर लें यह इस बातसे आप यदि समझे हों तो इस पुस्तक का लिखना और पढना निष्प्रयोजन होगा।

(१९४) चीनी अपने जीवनमें हमेशा मिताहारी और बहुत चाह पीनेवाले हैं। धनवान लोगभी हमेशा सादा खुराकही खाते हैं मछली मुर्गी और सुवरका मांस होता है। भात तो सब चीनी राजे खातेही हैं, जिसप्रकार फ्रान्सीसी मेंडक का मांस खाते हैं उसी तरह चीनी कुत्तों का मांस खाते हैं और उनका पालणपोषण अच्छी तरह करतेही चले आ रहे हैं। अब कुत्तेका मांस ज्याद:तर चीनी लोग नहीं खाते। बल्कि अपने जीवन में कुत्तेका मास एक वखतभी खाया हो ऐसा आदमीभी अब मुश्किलसे मिलेगा, खुराक के विषयमें अब यह सिद्ध हो चुका है कि जो वनस्पति शाक फल आदि खाते हैं वे बहादुर होते हैं और जो हवा खाकर जीते हैं उसमें दिव्यता आती है।

(१९५) बडी जेवनारों में भिन्न दृश्यही दीख पडता है। अनेक चीजें परोसी जाती हैं विचित्र मिश्रणवाले पदार्थोंका खूब उपयोग होता है। ये चीजें चीनके रसोइयेही तैयार कर सकते हैं। शराब भी खूब पी जाती हैं। पीनेके बाद प्याले उलटे रख दिये जाते हैं अंगुली ढूंढ निकालनेकी तथा पैसोंसे जुवाभी खेला जाता है हारके बदले में एक प्याला शराब मिलती है।

(१९६) चीनी लोग चावलकी शराब निकालकर पीते हैं, दाखकी शराबके माफक उसकी तेजी कम कर देते हैं। वे हमेशा चावलकी शराब जरा गरमसी पीते हैं। गरम पानीसे भरे बरतनों में मधु पात्र रखे रहते हैं जिससे गरम रहे। शराब पीनेके प्याले छोटे होते हैं इस लिए उनके दुष्परिणाम हुए बिना बहुतसे प्याले भरके पिये जा सकते हैं। आज कल तो बहुत कम पीनेवाले हो गये हैं। और वे कहते हैं कि शराब पीनेसे एक किसमकी लाली मुखपर आ जाती है। इसमें कदाचित् उनको लोग शराबी कहकर बद-नाम करेंगे यह डर रहता है। इतिहाससे यह मालूम होता कि चीनी लोग एक समय खूब शराब पीते थे। अब तो इससे विपरीत दशा है। (इ. स. ६३९) में एक अमलदार मरा उसने अपनी कबर पर यह लिखवायाथा कि मुझे पर्वतों के हरियाले ऊंचे शिखर तथा सफेद मेघ बहुत सुहावने लगते हैं। चीनमें शराब पीकर बेहोश हुए नालियों में पडे लोग कभी भी नजर न आवेंगे।

(१९७) बडी जेवनारोंमें बहुत खर्च किया जाता है तथा नाना प्रकार के पकान्न व्यंजन बनाये जाते हैं पत्तों पर फल कतरके शोभाके लिये रक्खे जाते हैं उन्हें कोई नहीं खाते।

फलका खर्च फिजूल न हो इस लिये नकली फल मेजपर चुन कर रख दिये जाते हैं। हां भोजन आदिका मजा उडाने के लिये पर्वतों की यात्रा करते हैं तथा मित्र मण्डली सहित नाव में बैठ कर अथवा पालकियों में बैठकर पर्वत आदि पर जाते हैं तथा अनेक तरह की गोष्टी सुख तथा मिष्टान्न सुख अनुभव कर लौट आते हैं। कभी घर पर कागजका कृत्रिम पर्वत आदि बना कृत्रिम बागीचा सजा वहां मित्र मण्डली के सहित भोजनादि का सुख लूटते हैं।

(१९८) कोई चीनी रास्तेसे जाता हो तथा उसका मित्र रस्ते में मिल जावे एवं खडे रहने का मौका न हो अथवा बात करने की इच्छा न हो तब वह अपना पंखा मुंहके आगे करके चलाही जाता है। इसका मतलब यह है कि वह सामने के आदमी को देखता ही नहीं फिर भी सामनेवाला आदमी उस की तरफ आवे तो असभ्यता समझी जाती है।

(१९९) जापानने सब संस्कृति तथा सुधार चीनसे ही लिये हैं। चीन का साहित्य, चीन की सामाजिक नीति व्यवस्था, चीन की कला, चीनका विज्ञान, चीन के रीति रिवाज चीन की धार्मिक क्रिया, और चीन के पेहराव जापानने अपनाया है मोडदार (बन्द करने और खोलनेका) पंखा शोध निकाला, जो पंदरवें शतक में कोरियासे पेकिन भेंट के रूपमें भेजा, और उस के बाद भी चीनी उस को नई चीज समझते थे। पुराने समय पर परों के पंखे बनाये जाते थे, और आजकल भी बनते हैं। पर आजकल का स्वदेशी पंखा तो नई ढब का है। यह बांस के बारीक चंवरियों का बना हुवा है, हाथीदांत का हत्था उस में लगा देते हैं। उस पर रेशम सफाई के साथ लगा-

ते हैं फिर उसपर कविता चित्र आदि लिखते हैं। एवं मित्रों में लेने देने को अच्छा रहता है।

(२००) दो अधिकारी बराबरी के पालखी में बैठकर आमने सामने जाते हैं, तब यह नियम है कि पालखी से नीचे उतर कर सलाम करें, कोई बडा अमलदार आताहो और दूसरी तरफ छोटा अमलदार होवे तब घंट की आवाज से वह अपनी पालखी पास की गली में मोडले फिर उतरने की भी आवश्यकता नहीं रहती, अथवा पालखी से छोटा अमलदार उतर पडे और बडे अमलदार की पालखी को जाने देवे।

(२०१) इस्वी सन की तीसरी शताब्दी में साउसाउ नाम का एक फौजी अधिकारी था, कायदा भंग के अपराध में उस ने अपने ही लिये मौतकी सजा फरमाई। छठी शताब्दी में एक शाहनशाह था जिस को जीव की हिंसा जरा भी अच्छी नहीं लगती उसने यज्ञीय पशु सब गेहूं के आटे के बनवाये थ वह बौद्ध था।

(२०२) चीन के संबंध में अफीम का प्रश्न महत्त्व का है। चीनी बडे अफीमी हैं, यह बात ठीक नहीं है। थोडे दिनों से ही अफीम के बहिष्कार के अनुकूल हुए हैं। इस कार्य में बहुत सी कठिनाइयों के होते हुए भी सच्चे अन्तः करण और स्वदेशाभिमान से प्रेरित होकर उन्होंने अफीम के बहिष्कार के लिए जोर शोर से आन्दोलन उठाया है। इससे सिद्धि भी अवश्य होगी १९०६ में वहां की सरकारने यह फरमान निकाला है कि अफीम पीना बिलकुल बंद किया जाता है। ६० वर्ष की राजमाता भी थोडासा अफीम खाती थी उसने यह कहा कि ६० वर्ष से ज्यादः उमर वाले के लिए यह नियम नहीं है।

नवम प्रक ण

मंगोल राजे इ. स. १२६० से १३६८ इ. स. तक

(२०३) प्राय: परदेशी चीनियों पर यह आक्षेप किया करते हैं कि चीनियों में स्वदेशाभिमान का लवलेश भी नहीं, जिस तरह हिंदुस्थान की वा यूरोप की किसी प्रजापर यह आक्षेप टिक नहीं सकता, वैसाही चीनियों के विषय में भी यह बेसिर पैर का है। अपने सर्वस्व प्राणतक दे देने की इच्छा को स्वदेशाभिमान कहते हैं एवं ऐतिहासिक घटनायें सच मानी जावें तो सच्चे देशाभिमानी जिन्होंने अपनी तथा सब देश की अपकीर्ति लेने के बदले मरण ही ज्याद: पसन्द किया है उन के अनेक दृष्टान्त चीन के इतिहास में दृष्टिगोचर होते हैं।

(२०४) तेरहवीं सदी का आखिर है, उस समय कुब्लेई खान के नेतृत्त्व में मांगोल धीरे धीरे आगे बढते हैं और सूंग वंश के सुविख्यात कीर्तिशाली सत्ताधारी राजाओं का मुल्क एक साथ छीन लेते हैं, और अपना राज्यचिन्ह स्थापन करने का प्रयत्न करते हैं। सूंग वंश पर आफतों पर आफतें आती हैं। अन्त में उसकी सब फौज कट जाती है, और उस लष्कर का प्रख्यात सेनापति और राज पुरुष वन्-टिअन-शियंग मांगोलों के हाथ कैद होजाता है। उस को ऐसा हुकुम किया गया कि वह शरणागत का लेख लिख देवे। नवीन विजेताओं के आधीन

होने के लिए अनेक प्रयत्न किये गए, उस को तीन वर्ष तक कैदखाने में रक्खा गया, वह लिखता है कि 'मेरे कैदखाने में जुगनू का उजियाला होता है, मैं जिस भयंकर एकान्त में सडता हूं, उस में पवन का संचार बिलकुल नहीं है, इस से घबडाकर मुझे ठंडी बहुत लगती है मेरे पर ओस बहुत गिरता है इस लिए, कई वार मरने का निश्चय किया। दो दो वर्षों में तमाम ऋतुओं के बुखार मुझे हुआ करते हैं। तो भी मैंने किसी बात की पर्वाह नहीं की यह अंधकार मय स्थान मुझे स्वर्ग समान होगया है। मेरा अन्तःकरण कुछ ऐसा है कि जिस को आफत से घबडा नहीं सकते। इसी लिए दृढ रहा हूं मेरे सिर पर जो सफेद बादल फिरते हैं उनको खूब ध्यान से देखा करता हूं। मेरे अन्तःकरण में शोक का इतना भार आ गया है कि ऐसी स्थिति में आकाश की बराबरी कर सकूं। "

(२०५) अन्त में उस को कुब्लेईखान के समक्ष ले गये। उसने उस सेनापतिसे पूंछा क्यों, तुम को क्या चाहिये? तब उसने उत्तर दिया कि 'सूंग महाराज के प्रताप से मैं उन का वजीर बना था। मुझसे दो मालिकों की नौकरी न होगी, मुझे अब मृत्यु ही चाहिये' तत्पश्चात् वह मार डाला गया, मरते समय उसने बडी गम्भीरता धारण की थी, उसने राजधानी की तरफ देखकर दोनों हाथ जोडके यह कहा था कि 'मेरा कार्य पूरा हुआ है'। १२ वीं सदी के एक दूसरे राजपुरुष के मरण के साथ अगर इस की तुलना करें तो उसने अपने राजा को

यह सलाह दी थीं कि 'हमें तार्तार लोगों को यह बडा प्रदेश दे देना ही चाहिये ' किसी भी तरह यह शत्रु के हाथ जाने वाला मुल्क बचजावे ' इस प्रयत्न में लगे हुए स्वदेशाभिमानी पुरुष को इसने मरवा डाला था, इस राजपुरुष को बहुत आदर दिया गया था, और जिस दिन यह मरा था उस समय उस को राजपुत्रकी पदवी दी गई थी। उस के चरित्र को न समझने से उस के मरने के बाद वह बडा वफादार था ऐसा उस का यश फैलाया गया था। ५० वर्ष बाद उस के कृष्ण कारस्थानोंका पता लगा था, तब उस का इल्काब वापस ले लिया था, और उस का वह अपकीर्ति कलंकित नाम ले कर लोग उस पर थूंकते थे।

(२०६) अभी थोडाही समय हुआ कि चीन में दो स्वदेशाभिमानी पुरुष पैदा हुए थे, उन्होंने अपने देश की जो अपूर्व सेवा की है जो सच्चा स्वार्थ त्याग किया है उन के पराक्रमों का जो गम्भीर परिणाम परोक्ष रीतिसे उत्पन्न हुवा है। एवं चीन के भिन्न भिन्न स्थान पर रहते हुऐ परदेशियों की जान व मालमत्ता कायम रही है। राजधानी पेकिन में जब बाक्सर लोगों का तोफान मचा था एवं परदेशी एलचियों के घरों पर घेरा डाला गया था, उस समय युआनचंग और शुचिंग नामक दो बडे अमलदार थे, उन्होंनें राजमाता को अरजी कर के यह निवेदन किया कि ' आपने जिसराजनीति का अनुकरण

किया है वह विनाशकारक पापवाली होने से छोड देनी चाहिये’ उस के बाद एक बडी परिषद् भरी गई थी, उस में भी उन्होंने राजमाता से यह विनन्तिकी कि सब परदेशियों को मार डालने का जो विचार किया है उसका फिर से विचार करना चाहिए, इन सब युक्तियों को एक तरफ कर असल हुक्म जारी किया गया, संपूर्ण राज्य में जहां जह परदेशी थे वहां अमल होने के लिये उस को भेज दिया, परंतु जिस उद्देश से वह हुकम भेजा गया था वह सिद्ध नहीं हुआ उस फरमान में ‘काट डालना’ इस के बजाय ‘परदेशिओं को बचा लेना’ ऐसा परिवर्तन इन दो वीर पुरुषोंने अपनी जिंदगी की पर्वाह न कर के कर दिया, छ सप्ताह के पश्चात् उस घेरे का अन्त आता था, तब इस परिवर्तन की खबर हुई, दूसरे दिन इन दो आदमियों की तत्काल गर्दन मारी गई। जिस तरह सच्चे देशाभिमानसे प्रेरित वीर पुरुष मरे उसी तरह वे दो पुरुष दृढता और धैर्य से मरे।

(२०७) सूंग वंश पर प्रेम रखने वाले बहुत आदमी होने से, उस वंशसे राज्य छीन लेने का कार्य मांगोल लोगों को बहुत कठिन हुआ, १२०६ में जंघीसखानने चीन पर व्यवस्था पूर्वक हमला करने की तैयारी की १२१४ में वह पेकिन को छोड पीली नदी के उत्तर तरफ के तमाम देशों का मालिक बन

बैठा। लेकिन उत्तर चीन के शाहनशाह सुवर्णी तातार के साथ उसने संधि की, परन्तु उस को संशय उत्पन्न हुवा, और शत्रुता उत्पन्न हुई। १२२७ में जंघीसखान मध्य एशिया में किसी जगह युद्ध करता हुवा मर गया, फिर उस के निपुण पौत्र कुब्लेईखानने ५० वर्ष के अन्दर सम्पूर्ण चीन में अपनी सत्ता जमाई। १२६० में कुब्लेईखानने झेनेडु में अर्थात् राजधानी में अपने को सम्राट प्रगट किया, वह शहर पेकिन से उत्तर ९० कोस के फासले पर था, १२६८ में वह पेकिन में दाखल हुवा, परन्तु वह सब राज्य काबू करने के लिये उस को २० वर्ष लगे। सूंग वंश की फौजों को धीरे धीरे दक्षिण की तरफ निकाल भगाया, स्वदेशाभिमान से जो चैतन्य आता है वह बतलाते हुए एक एक इंच जमीन छोडते हुवे भी वीरता बतलाकर पीछे हटा था, १२७८ में कन्तान बंदर भी ले लिया और सुविख्यात सेनापति वन-टियंग शियंग कपट से पकडलिया गया। १२७९—में सूंगलष्कर का आखिर का स्थान जो किलेके माफिक समझा जाताथा, उस को जमीन और समुद्र के रास्ते से भी घेरलिया, ये लोग अपने ही जहाजों में जा बैठे। उन्होंने अपनी सब नौकायें एक स्थान पर एकत्र कर अनेक प्रकार की व्यूह रचनायें कीं, ये वीर पुत्र पीने के जल की तकलीफ सहन कर, दिन में अपने ऊपर होने वाले हुमलों को सहनकर रात में अपने ऊपर जहाजों से फेंका हुआ अग्नि सहन कर एक मास तक निर्बल और साधनहीन होने

पर भी समर्थ शत्रु के साथ लडे। फिर एक समय दिनभर सख्त लडाई करने के बाद सूंग लश्कर के सेनापति के पास केवल १६ जहाज रह गए थे। तब वह समुद्र में एक चट्टान पर चढ गया, तब उसने अपनी स्त्री और बालबच्चों से समुद्र में गिर के मर जाने को कहा, वह खुद भी सूंग वंश के बालराजा को अपने कंधे पर बैठा कर कूदपडा, इस तरह सूंग वंश का अन्त आया।

(२०८) कुब्लेईखान शाहनशाह के राज्य की उज्ज्वलकीर्ति का सच्चा वर्णन मार्कोपोलोने किया है। मांगोल लोगों को विजय प्राप्त करने में बेयन नाम का सेनापति बडा लायक था। उस के बाबत मार्कोपोलो की पुस्तक में बडी तारीफ लिखी है। कोरिया ब्रह्मदेश और आनाम चीन के महाराजा के अधिकार के संस्थान होगए, वे आजतक चीन को कर दिया करते थे। कुब्लेईखान ने समुद्र की मार्फत जापान पर भी चढाई की थी, परन्तु वहां फतेह नहीं मिली,जहाज और खलासियों की संख्या देखते हुए एवं शत्रु जपानका निवास द्वीप में होने के कारण जो अडचणें आतीथीं और तूफान से जहाजों का नाश देख, और जापानियों के हठ और आग्रह से जो विरोध बताया था यह देख स्पेनिश आर्मेडा जिस उद्देश से निकला था उसका परिणाम और उद्देशके साथ कुब्लेई-खान की नौकासैन्य से तुलना की जासकती है।

(२०९) इस युग में मांगोल लोगों की उन्नति चीन में

थी उस समय शान्ति और सुधार के जो काम चीन में हुए उस में मांगोल भाषा की लिपि चीन में दाखिल हुई यह बात याद रखने लायक है। बाशपा नामक तिब्बत का धर्मगुरु था, उसने मृत्यु लिपि का अविष्कार किया था, 'उइगुरु' नामक तुर्क प्रजा थी, उस के आधार पर यह लिपि रचीगई है। तुर्क प्रजा की लिपि सीरिया की प्रजा की लिपि के ऊपर से है। यह मंगोल लिपि खडी रेखाओं में लिखी जाती थी, ऊपर तथा नीचे के अक्षर मिला लिये जाते थे। उसी तरह मांचुलिपि भी १५९९ में दाखिल हुई, वह मांगोल लिपि के आधार से खडी रेखा में लिखी जाती, पर उस को पढते समय बांई से दांई तरफ जाना पडता था।

(२१०) कुब्लेईखान के समय पंचांग में सुधार किया गया, राज्य की ओर से पाठशालाएं स्थापित की गईं, पीली नदी के मूलका पता लगाया गया, और प्रचालित रुपयों की चिठ्ठी दाखिल की गई, वह सम्राट चुस्त बौद्ध धर्म का मानने वाला था, पर कान्फ्युशियस को मान मिलता है कि नहीं इस की बराबर तलाश रखता था, दूसरी तरफ उसने यह हुकुम दिया था, कि ताओ धर्म के पुस्तकों का नाश कर देना, इस सुधार के बहाने के पीछे वेश का बोझा बहुत था, वह इतना भार रूप हो गया कि चीनी उसको सहन नहीं कर सके, उससे चीन में असन्तोष उत्पन्न होकर चीन में अराजकता पैदा हो गई, कुब्लेईखान

का पौत्र थोडे समय तक प्रामाणिक शाहनशाह रहा, और लोगों के असन्तोष के प्रवाह को उसने रोका, पर इस्वीसन १३६८ में मांगोल राजाओं की सत्ता निर्बल हो गई वे परदेशी ही थे, उस को हांक देने को चीनी एक दम से तैयार थे ही।

(२११) चीनियों की निन्दा की जाती है कि उन के सिपाही कायर हैं, और उन का सब से पहिला विचार अपने आप का रक्षण करना है। इस से वे जरा सी लडाई होने पर ही पलायन कर जाते हैं।मानलिया कि कभी ऐसा भी होता है तो भी दूसरे समय मरते समय तक भी वे पींछे नहीं हटते। यह बात अनेक बार सिद्ध हो चुकी है। पर परदेशी लोग उन को गिराने के लिये ऐसा कहा करते हैं। एक और भी कारण है चीन के सिपाहीं वेतन समय पर न मिलने के सबब वे अधमरे मैलेकुचैले हो जाते हैं उन के हथियार भीं खराब होते हैं, ऐसे सिपाही देश के लिये कितना क्या कर सकते हैं यह आप भी जान सकते हैं, यदि अच्छे संयोग में ये रहें तो दूसरों को अच्छी तरह मालूम पड जावे कि चीनियों से लडने में क्या मजा है।

(२१२) चीनी बाहर से बेवकूफ जैसे मालूम होते हैं लेकिन अन्दरसे चिढे हुए रहते हैं, ऐसा स्वभाव प्रत्येक प्रजा का है। रास्ते में दो आदमी लडते हों किंवा सामान्य स्त्रियां लडती हों तब चीनियों का चिढनेवाला स्वभाव मालूम हो जाता है। चीन के रस्तों पर चीनियों का समुदाय जब इकट्ठा होता है तब वह सरल

सादा और शान्त स्वभाव का व्यवस्थासर झुंड होता है। स्त्रियां इस झुण्ड में नहीं रहतीं। शान्त रहनेका यह कारण है। पितृपर्व (ऑल सोल्सडे) के त्योहार के दिन नदी में तैरते दीवे दीख पडते हैं। वे दीपक नदी में तैरते हुए देखने के लिए लोग आते हैं। शराबी बेहोश लोग बिलकुल नहीं दीख पडते; लेकिन कोई ऐसी गप उडे तो लोग एकदम उबल उठते हैं और नेताओं के कहने को भी नहीं करते। एक बार यह गप्प उडी थी कि परदेशी चीनियों के लडकों को फुसलाकर ले जाते हैं तथा उनकी आंखे निकाल लेते हैं और उस की दवाई बनाते हैं। एवं बहुत से आदमियों की चोटी गुप्त रीतिसे काट डाली गई है। ऐसे समय में लोग बहुत उत्तेजित होते हैं।

(२१३) चीनीयों के चिढने के स्वभाव के सबब एक गंभीर और करुण घटना थोडे वर्ष पूर्व बनी थी। एक इलाके के कलक्टर ने अपने प्रदेशमें परदेशी अमलदार की तालीम से फौज तैयार कराई युद्ध कला में कुशल और योग्य परदेशी इस के नायक थे। थोडे दिन बाद उस सूबा के मन में यह विचार उत्पन्न हुवा कि इस फौज ने अच्छी तालीम पाई है। अगर वह कृत्रिम युद्ध दो पार्टी बनाकर करे तो बहुत खूब सुरत मालूम होगा। फिर दोनों सेनापतियोंने आधी आधी फौज बांट ली, एक भाग ने एक गांव को घेर कर उसपर हुमला करना था, और दूसरे लश्करने उसका रक्षण करना था। फिर प्रारंभ करनेवाला भाग

इतनी पासतक पहुंच गया कि संगीन के बलसे गांवको शरण लेने की तैयारी की। इतनी दूरतक स्थिति पहुंचने पर दोनों भाग के लोगों के मस्तक फिर गये। वे भूल गये कि यह उसकी परीक्षा है न कि लडाई। मानो सच्ची लडाई है यह समझ दोनों दलमें खुब घमासान हुई। जितने में उनको शान्त रखते हैं तब तक ४ आदमियों के प्राण चले गये और १६ आदमी गहरे घायल हुए।

(२१४) चीनियों के रहने के घर बडे गन्दे होते हैं। फिर चीनियों को घरसे इतना प्रेम क्यों है। हमारी भाषामें गृह शब्द का जितना विशाल अर्थ है। इतना विशाल अर्थ बतलाने के लिये एक छप्पर उसके नीचे तीन आदमी बैठे हुवे का चित्र निकालते हैं। इसका और भी संक्षेप में यह है कि एक छप्पर के नीचे तीन आदमियों की जगहपर एक सुअर का चित्र देते हैं उस का भी यही अर्थ है। तीन के होनेसे एक समूह यह अर्थ होता है।

(२१५) 'गृह' शब्द का अर्थ साहित्य वाले चाहे जो करें तो भी इतनी बात तो सच है कि चीनियों को घर के समान कोई चीज प्यारी नहीं है। अपने यहां 'घर यह घर' यह कहावत है उसके मुकाबले में यह है 'घर से एक कोस दूर भी घर जैसा नहीं' है 'घर के अन्दर का प्रत्येक दिन मंगल है और घरके बाहर का प्रत्येक दिन जंगल है' जब चीनी घर पर इतने फिदा हैं, तो उनके घर में क्या होता है सो देखें।

(२१६) चीनीयों में सबसे बुड्ढा घरका मुखिया माना जाता

है। हिन्दुओं के माफक चीनियों के यहां भी कुटुम्ब में सब से श्रेष्ट मा बाप माने जाते हैं। बाप के मरण के पश्चात् उस के जीवकी पूर्वज के रूप में पूजा होती है। एवं जीते जी खूब सन्मान भी मिलता है। इसी तरह मा को भी समझो। बालकों को घरमें ही पालने आदि की व्यवस्था करते हैं। लडकों के लिये बहुओं तथा लडकियों के लडकों की भी तलाश करते है। १९ वर्षकी आयु में लडके की तथा १६ वर्षकी उमर में लडकी की शादी करते हैं। लडकी को उसका पति ही लेने आता है। चीनियों के कौटुम्बिक जविन में बडे उमर के पुरुषों का तथा बडी उमरकी कुमारियों की शादीका कोई ठिकाना नहीं है। वर वधु लग्न होने तक नहीं देखते शादीके बाद जब बहु ससुराल में आती है तब बुर्खा निकाल देते हैं। तभी मुखदर्शन कर सकते हैं। परन्तु रुढि ऐसी हो गई है कि ये दोनों मातापिताकी अनजान में एक दूसरे को देख लेते हैं। जो चीनी अपनी पांच पीढी अपनी आंखों से देखे वह भाग्यशाली माना जाता है। जल्दी शादी करनेका रिवाज चीन में साधारण तया पर नहीं हैं। एक बूढे की बाबत कहा जाता है उसके जन्मके दिवस अभि नन्दन देने को उसके पुत्र पौत्र प्रपौत्र और दौहित्र आदि इतने आते की जिनका की उसको नाम याद भी नहीं आता था।

(११७) हिन्दुओं के माफक सब कमाने वाले आदमियों की कमाई मिलाकर सब कुटुम्बका खर्च चलता है प्रत्येक

मनुष्यको भोजन करने तथा घरमें रहनेका हक है । कोई निकलता हो तो भी सब पर ही उसका बोझा पडता है। घरके मुख्य मनुष्य के अर्थात् पिताके मरने पर घर के कारभार की अधिष्ठात्री माता बनती है तो भी सामान्य नियम यह है कि बड़े पुत्र के हाथमेंही लगाम आती है। प्रायः माताके मरने के बाद लडकों में आपसमें नहीं बनती तब मिलकत के विभाग हो जाते हैं। प्रत्येक भाई अपना अपना घर जुदा बनाते हैं। चीन के फौजदारी कायदे से मावाप के होते अलाहिदा होने की मनाई है। हां उनके जीते कुटुम्ब में कोई कुलांगार जुवारी अथवा घर के कारबार के लायक न हो अथवा अत्यधिक अफीम खावे तो नियमानुसार घरसे निकाल देते हैं, याने घर के मेंबरों की नामावलिसे उसका नाम खारिज कर देते हैं। ऐसे लोग दिन प्रति दिन अधोगति को पहुंचते हैं तथा भीख मंगों की संख्या की वृद्धि होती है, पर सौभाग्य से ऐसे प्रसंग क्वचित ही आते हैं।

(२१८) शान्त कुटुम्ब में कान्फ्युशियस के उपदेशानुसार पितृभक्ति वत्सलता राजभक्ति आदि होती है कुटुम्ब के घर के प्रेमको बहुत ऊंचे चढाया है। परीक्षामें उत्तीर्ण होने के पश्चात् दूरदेशमें नौकरी करने के लिये घरसे बाहर जाने का प्रसंग लडके को आता है तब वियोगका दुःख असह्य हो जाता है और घरमें शोक प्रवृत्त हो जाता है। चीनमें ऐसा नियम है कि वतनमें किसीको नौकरी न देना। इससे ऐसे नवयुवकको प्रायः दूरकी

भयंकर मुसाफरी राज्य के दूर के प्रान्त में जाना पडता है। इतनी बात तो सच है कि जब वह अपने गांव में आता है तब अपने घर के बाग बगीचे देखकर कुछ विचित्रता ही अनुभव करता है। जाते समय इच्छानुसार अपने बाल बच्चों को ले जा सकता है, अथवा पीछेसे बुलवा लेता है। एक रस्ता और भी है कि अपनी स्त्री को उसके माबाप के घर छोड जाता है। स्वयं अकेल रह कर नौकरी किया करता है। नौकरी की जगह पर किसी ललना को घर में रक्खे तो बुरा नही समझा जाता, उसकी परिणीता वधुको भी बुरा नहीं लगता एसी युवती ललनाओं को घर में दाखल करते हैं लेकिन प्रथम परिणीता बधू तीन आशिर्वादों में से एक आशिर्वाद न्यून देती है। प्रत्येक परिणीता बधू अपने स्वामीके पुत्र हो, धन प्राप्त हो, एवं आयुष्य दीर्घ हो, चाहती है परन्तु उस ललनाको लाने वाले अपने स्वामी को पहला आशिर्वाद नहीं मिलता। नौकरी के स्थलपर युवति ललना रखने की शिफारस उसकी शादीशुदा औरत ही करती है इस के लिये प्रमाणमें अनेक दृष्टान्त मिलते हैं। अगर ऐसा न हो उसका वंश नष्ट हो जावे। दत्तक लेनेका रिवाज हो तो इन ललनाओं की आवश्यकता ही न रहे, पर सब आशायें निष्फल जाती हैं तभी यह युक्ति की गई है।

(२१९) चीनकी प्रथम परिणीता वधू को सन्तान हो कि न हो, तो भी घर में उस के अधिकार अप्रतिहत होते हैं।

चीन की थोडे समय पहिले की राजमाता वेश्या थी, वह मा हुई तब उस का दर्जा महाराणी के समान हुवा, तो भी, जिस राजा की वह स्त्रीथी, उस की पहिली स्त्रीसे इस का दर्जा उच्च न था। उस सच्ची राणी की प्रतिष्ठा तो प्रथमपंक्ति की ही-थी, चीन के शाहनशाह की स्त्रीका इलकाब तो उसी को ही था, युरोप के इल्काबों की अपेक्षा ऐशिया के इल्काब ज्यादह पसन्द किये जाते हैं। सम्राट सदा दक्षिण की तरफ ही मुंह कर के बैठता है।

(२२०) चीन में सूंग हुंग एक राजपुरुष हो गया है उस का एक दृष्टांत चीनिओं के प्रेम शौर्य का जागृत उदाहरण है। असल में यह बहुत गरीब था, वह अपनीही मेहनत से एक दिन चीनका महामन्त्री हो गया। फिर शाहनशाहने उसको यह हुक्म किया कि तुम्हारी स्त्री वैश्या जैसी है उसको छोड किसी राजकन्या से शादी कर लो। तब उसने हिम्मत के साथ जवाव दिया कि नामदार! मेरे साथ रहकर जिसने रूखी सुखी रोटी खाकर सुख दुःख सहन कर सब अवस्थाओं में सुख माना है उस को अब मैं अपने महलसे नहीं निकाल सकता।

(२२१) अपने पिताके घरसे बाहर जाकर रहने से कितना दुःख आ पडता है उससे शोक उत्पन्न होता है इसके मूर्तिमन्त चित्र चीनी कवियोंने अपनी करुणामयी कविता में खींचे हैं। जिस आदमीको दक्षिणकी सूखी हवामेंसे उत्तरके शीतल प्रदेशमें नौकरी करनेको जाना पडता है वह हमेशा रोताही रहता है कि मुझे

जलवायु अनुकूल नहीं हैं। दूसरा ऐसाभी कहता है कि मुझे सब अनुकूल है पर रह रह कर घरकी याद आया करती है एक कविके वचनका भावार्थ नीचे दिया जाता है। यहांसे पूर्व रमणीय वृक्षोंके जंगल हैं पश्चिमसे सुगंधित पवनकी लहर पुष्पोंपरसे आ रही है। तोभी इस चौडी नदीकी, उसकी लहरोंकी और खेतके दूसरी तरफ आये हुवे घरके तरफही मेरी नजर जाती है।

(२२२) महाराज्यके दूरके प्रान्तों में जो अमलदार नौकरी करते हैं वास्तवमें जो देश निकालनेकी सजा भोग रहे हैं उनकी कविताओंमें भी यही अर्थ भरा हुवा होता है। परन्तु जो लोग असन्तोष राजद्रोह राज्यकी व्यवस्थामें गडबड आदि अपराधोंसे सीमान्तके देशोंमें सचमुच देशनिकालकी सजा भोग रहे हैं, उनके लेखों में भी यही भाव दीख पडता है। चीन के साहित्य में एक श्रेष्ठ और उत्तम माना जाने वाला कविता का नमूना है उस में प्रणय कथा आती है। उसको दूरके एक प्रान्तमें फोजदारी न्यायाधीशकी जगह दी गई थी, सो उसने ८३ वें दिन छोडकर यह कहा था कि "पांचसेर भातके लिये मैं अपनी हड्डी नहीं तोडवाउंगा।" वह वापस कैसे आया उसके बतलानेके लिये एक लेखा लिखा हैं।

(२२३) मैं घर आने के वास्ते चलपडाहूं, मेरे घर और खेतोंमें घास पैदा हुई होगी, मैं घर जाऊं? मेरे आत्माने मुझे आजतक गुलामकी जिन्दगीका अनुभव करवाया है तो फिर घरको

याद करके बैठे रहने में क्या हासिल ? मैं पिछली बातोंको याद करके समय नहीं खोता। अब मैं भविष्यकी तरफ ध्यान रखकर मेहनत करूंगा। मैं अब भूलमें नहीं हूं बल्कि एकबार सच्चे रास्तेपर चढ चला हूं।

(२२४) हे नौका, तू हलकी है, तू धीरे धीरे आगे चल, मेरे वस्त्र पवनके झोकेसे उडते हैं। प्रातःकाल धीमेसे होता है उसकी वेदना मुझको होती है। मुझे मेरा घर दूरसे दीखता है और मैं जल्द जल्द घर के तरफ जाने का अभिलाषी हूं। मेरे नौकर मुझको मिलने के लिये आगे आते हैं। मेरे पुत्र मेरे चारों तरफ हो कर मेरे कपडे पकडे खडे हैं, मेरा घर तो जंगल की तरह है परंतु वहां मेरे प्रिय मनुष्य और वृक्ष हैं। मैं अपने बालकों की अंगुली पकडकर घर में घुसता हुं। शराब से भरी हुई बोतलें लाई जाती हैं। उसमें से मैं लबालब प्याले भरता हूं। मैं अपने प्यारे वृक्षों की तरफ देखता हूं मुझे यह नई स्वतन्त्रता मिली है उस को मैं खिडकी के पास हिलते झुलते भोग रहा हूं। मेरी गोद में खेलते हुवे प्रिय पुत्र के चन्द्र मुख का चुम्बन लेता हूं।

(२२५) अब मैं अपने बगीचे में जाकर चित्तप्रसन्न करता हूं। उस में एक दरवाजा है पर वह सहज से खुलता नहीं। मैं जहां तहां फिरता वा बैठा हुवा होता हूं। तब लकडी का सहारा ले अपने सिरको ऊंचा कर इस सुंदर दृश्य का विचार करता हूं। बादल पर तो अपनी इच्छा के विरुद्ध छिपे हुवे पर्वत के पीछे

से निकल आये, थके हुए पक्षी अपने घोसलों में आराम करते हैं। संध्याकाल की छाया मानो चली गई, तो भी मैं वृक्षों के आसपास भटक रहा हूं। अहाहा एक बार फिर घर आया हूं। यहां मुझे दुखाने को कोई भी दोस्त नहीं आवेगा। सब समय मुझे प्रतिकूल मालूम पडता है। अब मुझे मनुष्यों से क्या लेना है? इस कुटुम्ब के निर्दोष आनन्द में मैं अपने दिन बिताऊंगा। काम से फारिग होने पर पढूंगा या बीना बजावूंगा। मेरे खेतिहर भाई आके मुझ से कहेंगे कि 'साहेब वसन्त का पाक तैयार हुवा हैं उसी तरह से खेत को जोतने बोने के समय की खबर भी मुझे देवेंगे, तब मैं गाडे में अथवा नाव में बैठकर उन में जाउंगा रास्ते में खडे होकर नदियां जंगल आदि आवेंगे उनको नहीं गिनूंगा। रास्ते में पक्षियों के सुन्दर कलरवसे भरपूर वृक्ष आवेंगे, आंख में अंधेरी आवे ऐसे ऊंचे पर्वत आवेंगे। छोटी छोटी नदियां बडी होकर बहती हुई आगे मिलेंगी। प्रत्येक ऋतु में जीवन परिवार्तित होता होगा। प्रत्येक बर्ष पुनः पुनः लौटकर आया करेगा। सचमुच यह आनन्द की बात है। पर मैं तो यह समझूंगा कि मेरी पुस्तक पूरी हुई। अहो! इस संसार में बहुत थोडे दिवस अपने को रहना है, तब मरने जाने की पर्वाह न करते हुए सुख क्यों न उडावें। चिन्तातुर रह कर हां क्या लाभ है। मुझको पैसा नहीं चाहिये। सत्ता नहीं चाहिये, और मुझे स्वर्ग की तो आशा ही नहीं है। फिर मैं अपने बागीचे

में, फल फूलों के बीच रह कर समय गुजार आनन्द मानूंगा। पर्वत पर चढ कविता गाऊंगा, निर्मल पानीके झरनों के पास बैठ कर कविता वनाऊंगा। इस तरह मैं अपने जीवन का सदुपयोग करूंगा, और भाग्य जो देगा, उतने में ही सन्तोष मानूंगा।'

(२२६) इस कविने चीनाई साहित्य में उच्च कोटि की कवितायें बनाई हैं। एवं मरणोतर पर कैसा भाषण होना चाहिये वह भी उसने लिखा है। उस में से जो अपने पास भाषण है वह इ. स. ४२७ में मरण के पहिले लिखा था, इस लेखको उसके मित्र कब्र के पास जाकर बांचते हैं फिर उस लेखो को आग में डाल देते हैं। क्यों कि जलाने से वे पर लोक में जाते हैं। कागज के घर, कुरसी, पालखी और कागज का अन्य सामान मरे हुए आत्माओं के उपयोग के लिये जला देते हैं। उस से उन जीवों की प्रतिष्ठा और आनंद में वृद्धि होती है। एवं वे लेख भी आनंद और मान के साधन हैं।

दशम प्रकरण

मिंग और चिंग राजे इ. स. १३६८ से इ. स. १९११ तक

(२२७) चौदहवीं सदी के प्रथम के ५० वर्ष में मांगोल सत्ता का पतन हुआ, और उसी समय चीन में एक बडा गरीब आदमी पैदा हुआ इस के भावी में यह निर्माण हुआ था कि यह चीन के महाराज्य के भावी इतिहास के लिए एक नवीन मार्ग ढूंढ निकालेगा। उसका नाम चु-युआन-चंग था, वह १७ वर्ष का हुआ, तब उस के मा बाप और बडा भाई सब मर गए उस वर्ष देश में दुर्भिक्ष था, इन तीनों का मरण अन्न के अभाव से हुआ था, विधियुक्त भूमिदाह करने को उस के पास पैसे भी नहीं थे। इस लिए उसने उन शवों को घर में ही गाड दिया, आखिर वह बौद्ध धर्म में साधु बन कर दाखिल हुआ लेकिन उन को भी पूरा अन्न न मिलने से उन्होंने ऐसे बहुत से नवीन उमेदवारों को खारिज कर दिया। फिर वह जहां तहां भटकने लगा, इतने में इस के चाचा के हाथ के नीचे एक बंड करने वाले की मंडली थी उसमें वह भी शामिल होगया। फिर वह झटपट सेनापति तक बन गया, एवं उस के हाथ में धीरे धीरे संपूर्ण लष्कर आ गया, सन् १३६८ में इतने प्रांत उस के हाथ में आगए कि उस ने खुद को मिंग वंश का प्रथम शहानशाह

प्रसिद्ध कर अपना नाम हुंगउ रखा, और नान्किन में अपनी राजधानी बनाई। युद्धकला में नैपुण्य बतलाने के अलावा राज्य व्यवस्था में अपूर्व कौशल बतलाया, साहित्य और विद्या का उदार आश्रय दाता बना। आजकल जो परीक्षा की पद्धति चलती है, वह इसी ने आरंभ की थी। आजकल इसी पद्धति में परिवर्तन करने का प्रयत्न चलरहा है। टँग वंश के समय चीनी जैसे कपडे पहनते थे, वे फिर से दाखिल किये। कुछ कम दण्ड देने वाला फौजदारी कायदा शुरू किया। जमीन और मिल्कत के ऊपर नोंध बही बनाई। कर के वसूल करने की व्यवस्थासर पद्धति शुरू की। वैसेही रुपये पैसों के चलन को निश्चित कर तांबे के पैसों को दाखिल किया, बडी जगह कंचुकियों को मिलती थीं सो उस ने बंद की। बौद्ध धर्म तथा ताओ धर्म इन दोनों को राजाने स्वीकार किया है यह प्रगट किया।

(२२८) १३९८ इस्वी में यह महान् शहानशाह मर गया उस के बाद उसका पौत्र गद्दीपर बैठा। बालक राजा बडे होने पर हुशियार निकला, वह कविता आदि भी करता था। उस ने गद्दी पर बैठते ही अपने दोनों चचाओं को जो अच्छी अच्छी जगहों पर थे; उन को उतार दिया एक चचा को यह सहन न हुआ, वह अपने आप बुद्धिमत्ता से विख्यात हुआ था। उस ने निमक हलाली की प्रतिज्ञा तोड दी। युद्ध हुआ चचा जीता। विजय प्राप्त कर नान्किन राजधानी में घुसा। चीन का बालक राजा जिस

महल में रहता था उस में चचा का लष्कर घुस गया, जवान पराजित राजा अदृष्ट होगया, फिर कभी दीख नहीं पडा। वास्तव में वह जवान राजा भाग कर बौद्ध दीक्षा लेकर साधू होगया, युनान नामक प्रान्त में जारहा ४० वर्ष तक घूमने के बाद पेकिन जाकर मृत्यु तक महल में ही छुपा रहा। उस के दहिने पैर में तिल देखकर कंचुकियोंने पहिचाना था लेकिन डर के मारे जबान से न कह सके।

(२२९) विजयी चचा १४०३ में गद्दी पर बैठा, उस ने अपना नाम युंग लॉ रखा। लष्कर का नेतृत्व तथा लिखना पढना और राज्य के सूत्र चलाना उस को आता था, यह बात उस ने सिद्ध कर दी, युद्ध से जो प्रान्त बरबाद हो गये थे उन में दूसरे प्रान्तों से लोग बुलवा कर बसाये। १४२१ में राजधानी पेकिन बांध कर बसाई। वही आजतक भी राजधानी ही है। उस ने भी नया फौजदारी कायदा तैयार किया। तातार लोगों के सामने अनेक बार लष्कर भिजवाये, और कंचुकियों के आधीन जावा, सुमात्रा, श्याम, लंका और ठेठ लालसमुद्र तक राज पुरुष भेजे गए। १९११ में लंका में एक वस्तु मिली है तथा गॅली नामक गांव से एक पत्थर हाथ लगा है उस में तामिल अरबी और चीनाई भाषा में लेख हैं अरबी लेख को बांचना ही कठिन है पर चीनी लेख से यह पता लगा है कि १४०९ में यह लेख तैयार हुवा होगा। चेंग हो नामक कंचुकी लंका के रस्ते होकर चीनमें

और अरबस्तान में बारबार गया है उस के भेट की यादृदाश्त कायम रखने के लिये यह पत्थर तैयार किया गया था। वह बडी मुसीबत से बच कर भाग आया था।

(२३०) यह शाहनशाह साहित्य का उत्तम आश्रयदाता था। इसने सम्पूर्ण दुनिया का जंगी काम अपने जीते जी पूरा करवाया था। ज्ञानकोष (एन्साईक्लोपीडिया) अर्थात् तमाम विषयोंका बृहत् कोष तैयार करने के लिये उसने हजारों विद्वानों को बुलाया था। इस पुस्तक में चार बडे विषयों के तमाम ज्ञान भण्डार का वर्णन है। (१) कान्फयुशियस के सिद्धान्त (२) इतिहास (३) तत्त्व ज्ञान (४) सामान्य साहित्य खगोल भूगोल, प्रकृतिशास्त्र, आयुर्वेद, भविष्य जानने का शास्त्र, बौद्ध तथा ताओ धर्म के सिद्धान्त कारीगरी, कला इत्यादि इस कार्य को पूरा करने के लिये २००० विद्वान् पांच वर्ष तक रक्खे गये थे। उस पुस्तक के २२,८७७ भाग थे। तदुपरान्त अनुक्रमणिका के ६० भाग थे। सम्पूर्ण ग्रन्थ चीनियों के ढंग से ११००० पुस्तकों में बांधा गया था। वह प्रत्येक पुस्तक आधा तसु मोटा, १ पाद ८ तसु लंबा १ पाद गहराथा। एक पर एक पुस्तक चुनकर रक्खे जावें तो हिन्दुओं के देवमन्दिर से भी ऊंची एक राशी हो। प्रत्येक विभाग में २० पत्ते हैं। अर्थात् कुल पत्ते मिल-कर ९१७,४८० जितने होंगे। और उस में ३६,६०,००,००० शब्द आये हैं। चीनियोंकी लिखने की शैली के अनुसार थोडे

शब्दों में बहुतसा अर्थ कहा जाता है, हम १३० अंग्रेजी शब्दों की जगह पर १०० चीनी शब्द समझें तो भी 'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' बडे नदी रूपी ग्रन्थ को यह भयंकर घबडाहट में डाले ऐसे ऐसे चीन के ज्ञानकोष के साथ तुलना करने से यह छोटी सी नदी जैसा मालूम होता है।

(२३१) इस राक्षसी ग्रन्थ को छापने के लिये लकडी के मुद्रा तैयार करने के वास्ते जो खर्च का हिसाब लगाया तो इतना बडा साहित्य का आश्रयदाता चीन का शाहनशाह भी घबडा उठा, फिर भी उस की नकलें की गई, एक समय सम्पूर्ण चीन में इस की तीन प्रतियां ही थीं। १६४४ में इस मिंग वंश का अच्छेद हो गया, उस समय नान्किन की दो नकलों का नाश हो गया, एवं १९०० में पेकिन में परदेशियों के निवास स्थान पर जब घेरा डाला गया, तब तीसरी नकलका भी बहुतसा अंश नष्ट हो गया। उस पर से यह महाभारत ग्रन्थ किस असाधारण शक्ति से तैयार किया गया होगा यह अनुमान हो सकता है।

(२३२) यह शाहनशाह चुस्त बौद्ध था। उस धर्म के गुरुओं को उस ने बडे बडे ओहदे दिये थे। एवं दरबार में अच्छी पहुंच थी एक समय यह बतलाया गया था कि बहुत से प्रान्तों के लोगों को भोजनार्थ अन्न न मिलने से केवल शाक पात पर ही रहे थे। उस समय पेकिन में १०,००० बौद्ध धर्म के साधु गुलछर्रे उडाते थे।

(२३३) मिंग वंश के राजाओं के समय चीनाई बर्तन ऐसे अच्छे होते थे, कि जिन की सारी दुनिया में तारीफ की जाती थी। सोलहवीं सदी के आरम्भमें इस कलाको उत्तेजन दिया गया था। क्यों कि सरकार की तरफ से ही इस की आवश्यकता बतलाई गई थी, परन्तु इस का विरोध किया गया था, चित्रकलाका भी विकाश इसी वंश के कारण हुआ था बल्कि इस वंश में भी कतिपय चित्रकार हो गये हैं जिन की सूची बहुत लंबी है। लगभग १२०० चित्रकारों के नाम हैं। जिनमें से कतिपय बहुत ऊंची पंक्तिके हैं।

(२३४) सोलहवें शतक के अन्तिम भाग में पोर्टुगीझ चीन में दाखिल हुवे। उन्होंने मकाउ में अपना निवास स्थान मुकर्रर किया, तब से मकाउ चीनका है कि पोर्टुगीझो का है यह आज तक निर्णय नहीं हुआ। वह स्थान अति सुन्दर है। उसकी हवाभी अच्छी है। एवं वह कन्तान बन्दर से ज्यादह दूर नहीं है। कुछ दिनोंतक पोर्च्युगाल के प्रख्यात कवि केमॉइन्स का प्रिय निवासस्थान था, मकाउसे थोडी ही दूरी पर सेन्ट झेवियर की मृत्यु हुईथी। रोमन केथोलिक पंथका पादरी चीन के इतिहास में सबसे पहिले चीनमे गया था। तथापि उसने उस भूमिको छोड़ कर चीन में पैर न दिया था। इस पादरी के शव को गोवा में गाड़ा था, तो भी सेन्शियस टापूका जो देशी नकशा मिलता है उस में उस के कबर की जगह बतायी हुई है। तेरहवीं सदी में रोमन के-

थॉलिक पन्थ का एक पादरी पेकिन में गया था इस से यह ज्ञात होता है कि चीन के महाराज्य में उस धर्म के अनुयायी का चीनीओं को कायम का स्थान मिला था।

(२३५) १५८३ इस्वी में मटियो रिक्षी नामक प्रख्यात पादरी चीन में गया था, और कन्तान बन्दर में दाखिल हुआ। सन् १६०१ में बडे परिश्रम से पेकिन के दरबार में पद प्रवेश कर सका। उसे उस समय के शाहनशाहका जबरदस्त आश्रय था। १६१० में वह मर गया, उसने चीन का पंचाग सुधारा, उस ने भूगोल और सामान्य विज्ञान चीनियों को सिखाया, और बौद्ध धर्म पर बहुत से आक्षेप किये। तो भी कान्फ्युशियस के सिद्धान्तों का उस ने स्पर्श भी नहीं किया। ११६३ में चीन में यहूदी लोग आ बसे थे। पहले ही पहल इस को इस बात की खबर लगी। उस के ही लेखों से चीन की संख्यादिका ज्ञान यूरोप में फैला था, बर्टन नामक एक ग्रन्थकार १६५१ में प्रसिद्ध की हुई ' ॲनेटॉमी ऑफ मेलन्कली ' नामक पुस्तक में लिखता है कि रिक्सी और दूसरे पादरी चीनियों के उद्योग का और उन के आबाद गांवों का वर्णन करते हुवे कहता है कि वहां कोई भिखारी नहीं है एवं कोई भी उद्योग बिना का भी नहीं है। अतः वह देश धनवान् और आबाद है।

(२३६) १६२५ इस्वी में एक और महत्व की शोध हुई, मध्यचीन में एक पत्थर प्राप्त हुवा, वह बडा था, और उस

में चीनाई भाषा में लिखा था एवं उस के साथ सीरिया की भाषा में भी एक छोटासा लेख लिखा था उस लेख के अक्षर अभीतक भी बांच जा सकते हैं। उस से मालूम होता है कि नेष्टर पंथ के पादियों ने वह पत्थर ७२१ में वहां रखा था, ईसु ख्रिस्त के धर्म का क्या उद्देश है और उस का विस्तार किस प्रकार से होना चाहिये, उस का सामान्य विवरण इस पत्थर में दिया है। यह पत्थर सचमुच इतना पुराना है इस में सन्देह था, वाल्टर, रेनन तथा दूसरे पण्डित लोग यह मानते थे कि लोगों को धार्मिक विषयों में ठगने के लिये यह शिला लेख खड़ा किया है परन्तु उस के पुराने होने में भी अब बिल्कुल सन्देह नहीं रहा, उसकी कीमत इतनी अधिक है कि थोड़े दिन पहिले उसे अमेरिका में ले जाने की कोशिश की गई थी, नेस्टर पन्थ के पादरियों की बात मार्को पोलो के लेखों में आती है। लेकिन चीन में एक समय वह अच्छी स्थिति में था, उसने चीनी साहित्य में जो कुछ भी प्रभाव डाला था, उसका १२ वीं सदीसे बाद नामो निशान भी नहीं रहा।

(२३७) यह मिंग वंश का अन्तिम शहानशहा विचार में अच्छा था, तथापि उस के आसपास के संयोग उसका कुछ चलने न देते थे। कंचुकी और अत्यधिक कर इन दोनों कारणों से देश में बलवा जागा। बलवे का नायक सुयोग्य लश्करी अमलदार बना और उसने एकदम इतनी विजय संपादन की कि जिससे वह

खुद बादशाह होगया। राजधानी पेकिन में अंधाधुंधी चलरही थी। खजाना खाली होगया था। किले के रक्षण का लष्कर बहुत छोटासा था। प्रधान अपने जीवन रक्षा के निमित्त लालच में पडे। १.६४५ की एप्रिल की ९ वीं तारीख के दिन पेकिन का पतन हुआ, पलायन न करने की इच्छा वाले सम्राटने पिछली रात में अपनी बडी लडकी को मारडाला, रानी को आत्महत्या करने का हुक्म दिया। तीनों लडकों को कहीं छुपा दिया। घंट बजाया गया पर कोई न आया, फिर शाहनशाह कॉबाहिल नामक पर्वत के शिखर पर चढगया, वह शिखर राजमहल के चौगान में ही था। उस पर चढकर उस ने अपना अन्तिम हुक्म अपने कोटकी छाती पर लिखा ‘हम में अच्छे गुण नहीं, इस लिए हम तिरस्कार के पात्र हैं। हमें अपने पूर्वजों को मिलते शर्म आती है, हम पर दैवी कोप हुआ है। अतः हम अपना मुख बाल से ढांक देते हैं और बलवा करने वाले लोग हमारे शरीर के टुकडे कर डालें, इसकी बाट जोह रहे हैं। हमारी प्रजा में से किसी को दुःख न देना,” इतना कह कर उस ने फांसी लगाली, उस के साथ उस के एक विश्वासु कंचुकीने फांसी लगाली, बलवे करने वाले लोगों ने उस को तथा उसकी स्त्री को सन्मान के साथ गाडने का बंदोबस्त कर दिया।

(२३८) इस तरह मिंग वंश का अन्त हुआ, परन्तु इस से बलवाखोर उस लष्करी अमलदार को कुछ फायदा नहीं हुआ

उस को पेकिन से बाहर निकाल दिया। आखिर दूर के प्रान्त के स्थानिक लष्कर ने उसे मार डाला।

(२३९) अब चीन के राज्य को मांचु लोगोंने जीत लिया वे भी परदेशी थे तो भी आनन फानन में सब देश जीत लिया। यह उन्होंने इस युक्तिसे किया कि पहले उन्होंने लष्करी ढंगसे सम्पूर्ण देशका कब्जा लेलिया, इस के किये बिना किसीकाभी नहीं चलता आजकलभी जो देश सर किये जाते हैं उनका कबजा लष्करही लेता है। बस्ती के भिन्न भिन्न स्थानपर नजर रखने के लिये बडे बडे महत्व के स्थानोंपर तातार लोगोंका लष्कर भेज दिया गया। उसका मुख्य सेनापति सर्वोच्च पंक्तिका फौजी अमलदार था। उसका यह कार्य था कि दिवानी के अमलदारों के साथ आवश्यकतानुसार सहकार्यसे काम लेना, और उनके कार्य पर देखरेख कर उनको अपने काबूमें रखना आजभी वे लष्करी टुकडियां वहीं हैं। इन फौजियोंके वंशज, एवं पेकिन से आये हुए ज्यादः आदमी भी चीनकी प्रजाके साथ उत्तम प्रकारसे रहते हैं। थोडासा अपवाद छोड इन दोनों जातियों ने अभीतक विवाह संबंध नहीं किया। यह लष्कर झंडेवालों का कहलाता है। उनको आठ भागों में विभक्त किया गया है। उनके मुख भारी और चौरस हैं। इससे वे झट पहचाने जाते हैं। चीनियों के मुंहसे तो वे ज्यादह योग्य और खटपटी मालूम पडते हैं। अबतो यह तातारलोग भी पेकिन में बोले जाने वाली शिष्ट अमलदारी भाषा बोलते हैं। जब नान-

किन राजधानी थी तबतक नानकिन की भाषा तातारलोग बोलसकते थे।

(२४०) ये विजयी तातार जिन पराजित चीनियों पर राज्य करते हैं वे उन से ही अनेक प्रकार से पराजित हुए हैं। उन तातारोंने बोलने लिखने में चीनी भाषा को ही स्वीकार किया है। एवं चीन के जो सुविख्यात राजे हो गये हैं जिनका कि राज्य इन के हाथ में है, उन राजाओं की यशस्वी दन्तकथाओं के लिये एवं चीन के साहित्य के लिये जिस प्रकार शुद्ध रक्त के चीनी अपना गौरव समझते हैं वैसे ही ये तातार भी मगरूर हैं। ये तातार वे ही मांचु। उन की मांचु भाषा अभी पेकिन में बोली जाती हैं कल्पनासे यह मानलिया जाता है कि मांचु राज भाषा है। आजकल चीन के शाहनशाहों को मांचु भाषा बालकपनसे ही पढनी पडती है, और जो महत्त्व के दस्तावेज शाहनशाह की दृष्टि में से गुजारने होते हैं उन के भाषांतर दोनों भाषाओं में अर्थात् मांचू से चीनी तथा चीनीसे मांचू में करने की फर्ज जिन को होती है ऐसे दरबारी दुभाषिया को मांचु भाषा का अभ्यास करना पडता है। उसी तरह मांचु तातार झंडेवाले लष्कर को आजतक तीरकमान का काम सीखना पडता था। एक समय का यह प्राण घातक अस्त्र जब छोड दिया गया तब लोगों को बडा दुःख हुवा था, यद्यपि इस शस्त्र का उपयोग नहीं

रहा तो भी उन लोगों को सरकारी तोशाखाने से मेहनताना मिलता रहता है।

(२४१) मांचु जाति के अथवा चिंग वंशके नौ शाहनशाह 'ड्रेगन' नामक पक्षी की निशानी वाली गद्दी पर हो गये। उन में से दो तो ऐसे सामर्थ्य वाले थे कि उन को बुद्धिमानों में श्रेष्ठ एवं सम्पूर्ण दुनियां के श्रेष्ठ शाहनशाह कहने में कुछ हानि नहीं। खांगशि नामका एक शाहनशाह हुआ है उसने अपना राज्य ६१ वर्ष तक किया। केथॉलिक वंश के पादरियों पर वह बहुत माया और ममता करता था, उन को सम्मान दे कर उन से जितना विज्ञान और प्रकृति का ज्ञान मिलता इतना लेता, वह असाधारण तथा साहित्य का उदार एवं विजयी आश्रयदाता था। चीनी भाषा का जो विश्वासपात्र कोष है उस के साथ उस का नाम हमेशा जुड़ा रहेगा, क्योंकि वह शब्दकोष उसकी ही देखरेख में हुआ था, उस में ४०,००० शब्द हैं। युरोपीय भाषाओं में विज्ञान के शोध के साथ हजारों ऐसे शब्द हैं जो रोज के कार्य में आते ही नहीं तो भी रोज रोज बनते ही चले जा रहे हैं। चीन के कोष में जो शब्द हैं वे किस ग्रन्थकारने किस जगह पर किस अर्थ में लिया है, वह सब प्रसंग के साथ बतलाया गया है। प्रत्येक युग तथा प्रत्येक के शैली के लेखकों का ऐतिहासिक क्रमसे संबद्ध प्रसंग उद्धृत किये गये हैं। इस समय इंग्लण्ड में सर जेम्समरेने अपने साथियों के साथ मिलकर एक राक्षसी कोष अंग्रजी भाषा का बनाया है।

इसी तरह ऐतिहासिक तत्त्वों को ध्यान में रख कर यह कोष कितने पहिले बनाया जा चुका है। इस शाहनशाह का सबसे बडा पराक्रम ज्ञानकोष बताने का है। चिंग वंश के राजा के बनाये हुए ज्ञानकोष के समान यह बहुत बडा न था, तो भी साधारण कोष बडे के समान ही था। उसकी छोटी आवृत्ति भी निकल गई है। उसमें दोसौ पृष्ठकी एक पुस्तक के हिसाबसे १६२८ पुस्तक हुए हैं। ज्ञानकोष का अर्थ जो यूरोपमें कियागया है वैसाही अर्थ चीनी नहीं करते, किसी विषयमें आजतकका ज्ञान रखनेवाला तज्ञ ही एक सर्वांग पूर्ण लिख गया हो ऐसा नहीं बल्कि तमाम जमानेका जो लेखक है उन सबके लेख सिलसिलेवार रखदिये जाते हैं। विषयकी चर्चा जो उन लोगोंने की हो वही स्वीकार करनी पडती है। उदाहरण के तौर पर भिन्न भिन्न साधनोंसे तैयार किये हुए सुविख्यात मनुष्यों के चारित्र्य लिखकर रखे हैं। इसके उपरान्त २४००० प्रख्यात स्त्रियों के जीवन चरित्र भी इसकोषमें हैं। इग्लण्डमें ' धी नॅशनल डिक्षनरी ऑफ बायोग्राफी ' पुस्तक मुद्रित हुई है, उसमें जितने जीवनचरित्र हैं उतने तो स्त्रियोंके चरित्र चीनकी पुस्तकमें हैं। वे सब इग्लण्ड के कौतुकागार (ब्रिटिश म्युझियम) में मौजूद हैं। इस ग्रन्थ की असल प्रति में अनेक अद्‌भुत चित्रदिये गये हैं। २० वर्ष पहिले एक छोटे कदकी उसकी आवृत्ति छापी भी गईथी।

(२४२) इसके बादके एक शाहनशाह की बात हम छोडदेंगे,

इसने रोमन केथॉलिकों को बहुत दुःख पहुंचाया था। तबसे लेकर आजतक थोडा बहुत जुल्म होता चला आरहा है। तत्पश्चात् एक उत्तम शाहनशाहके गुणानुवाद गावेंगे, जोकि इस समय गद्दी के राजाओंके वंश की कीर्ति बढाने में कारण है।

(२४३) इस शहानशाहका नाम चियन लुंगथा वह १७३५ में गद्दीपर बैठाथा, उस समय उसकी उमर २५ सालकी थी, उसको आज २०० वर्ष होगये हैं। तोभी उसके लिये चीनमें अनेक दन्तकथाएं प्रचलित हैं। उन लोगोंके कथनानुसार यह राजा अजानुबाहुथा, उसके कान कन्धेको स्पर्श करते थे। अपनी आंखोंसे वह पीछेकी भी वस्तु देख लेता था। परन्तु यह याद रखना चाहिए कि कोई भी ऐसी गप्पों को मानता नहीं है और ऐसी बातें इतिहास में ली जा भी नहीं सकती क्योंकि चीन में ऐसा नियम है कि किसी वंश का नाशहो तो उसके दफतर आदिसे उसका इतिहास छाप सकते हैं प्रत्येक शाहनशाह के कृत्य की एक नोट कीजाती है क्योंकि भविष्यकी प्रजा बादशाह की कीमत कैसे जानसके कि वह कैसा था। पर यह बात इस बादशाह के लिये नहीं थी, इस के विषय में चाहे जैसी नोट लिखो, क्योंकि ऐसे कृत्य उस के थे ही नहीं जिससे उस को नीचा देखना पडे। वह समर्थ शहनशाह था, उसे तीव्र ज्ञान की प्यास थी, वह खुद राज्य कार्य में कभी नहीं थकता, वह साक्षर वर्ग का आश्रयदाता था, उस को अपनी बनाई कविता बहुत प्यारी लगती थी। उस के बनाये बहुत

से काव्य हैं, चीन में एक कहावत है कि सब को अपनी कवि-ता अच्छी लगती है तथा दूसरे की स्त्री अच्छी लगती है उस को पादरी अच्छे नहीं लगते, उसने इसाई धर्म का प्रचार रोकने के वास्ते फर्मान भी निकाले थे।

(२४४) उसने १० वर्ष तक राज्य की अच्छी व्यवस्था की, फिर विग्रह की परंपरा चली, वे विग्रह प्रायः फतेहमंद और सम्पूर्ण हुए, उस के सेनापतिने नैपाल की तरफ केवल ३० मील गांव दूर वे जा सके थे। उन्होंने ब्रह्मदेशसे जबरदस्ती कर लिया था, तिब्बत में भी चीन की सत्ता सर्वोपरि समझी जाती थी, कुल्डजा और काशमरिया गांवों को चीन में जोड दिया था, फार्मोसा और ऐसी दूसरी जगह पर बलवे हुए थे, वे दबा दिये गये थे। ५० वर्ष में महाराज्य की वस्ती दुगुनी हो गई थी, एवं सम्पूर्ण महाराज्य में आबादी और शान्ति हो गई थी, १७५० में पोर्टुगाल की तरफसे एलची पेकिन में आया था, उस के बाद अंग्रजों के तरफसे लार्ड मेकार्टनी की प्रख्यात मण्डली वहां जा पहुंची थी, दो वर्ष बाद इस पूज्य बादशाहने अपने कार्य के ६० वर्ष पूरे किये। चीनियों के हिसाब से वे एक युग के माफक थे। फिर उसने अपने लडके को गद्दी सौंपदी, और १७९९ में मर गया।

एकादश प्रकरण

चीनी और परदेशी

(२४५) कृतज्ञता का गुण जगत् में विरले पुरुषों में दीख पडता है वह चीनीओं में प्रायः है। कोई भी चीनी अपने पर किये हुए उपकार को कभी भी भूलता नहीं। अहसान फरामोश कभी कोई चीनी नहीं दीख पडेगा। परदेशीय वैद्य के हाथ से अच्छा हुआ कोई चीनी (हॉस्पिटल) के लिये चन्दा एकत्र कर, रेशम अथवा चाह की भेट दे अथवा, लेखाङ्कित स्वर्ण मयी ध्वजा देकर अपना भाव बतलाया है। एवं ध्वजा के ऊपर प्राचीन वैद्य के समान उसकी तुलना का लेख लिखते हैं। इतना होनेपर भी वह रोगी वैद्यको कभी भी नहीं भूलता। यद्यपि परदेशी भूत ही उसको कहेगा तो भी उसकी बात हमेशा सन्मान के साथ सुनेगा। एक समय पेकिन में अंग्रेजी एलची के रहनेके स्थानपर कुछ भेंट लेकर एक चीनी २५ कोससे आया हुवा था, उस के बापकी आंखका दर्द एक परदेशी वैद्यने मिटायाथा, उस बुड्ढने यह कहा था कि अंग्रेजों को कभी भूलना नहीं। उस भेट पर चीनाई भाषामें यह लिखा था 'श्रीयुत अंग्रज भूत एलची—फलाना फलाना'

(२४६) चीनी चाहे परदेसियों को चाहते भी हों लेकिन इसकी आंखमें तो वह परदेशी भूत ही रहेगा। सैकडों वर्षोंसे

हिन्दुस्थान को छोड. चीन देश दुनिया से अलाहिदा रहा है। दूसरी प्रजाओं के संसर्ग के बिना चीनी प्रजा असन्तुष्ट बन गई है। दूसरों के उच्च विचार ऊंची भावना, अथवा अचार विचार में तुलना एवं भेद करने का अवसर ही नहीं मिला। इसी लिये उनके विचार एवं आचार संकुचित एवं सीमा के अतिक्रमण में असमर्थ हो गए हैं। रीति भांतिका विवेक, जहांतक बन सके वहांतक शरीर को न हिलाना इन दो गुणों को राज्यकर्त्ता लोग खूब अभ्यस्त करते थे। इतने में परदेशी भूत चीन पर चढ गये। वे लोग चीनसे सब बातों में विरुद्ध थे—चीनी लोग युरोपियनों को हमेशा लाल लाल बिल्ली की जैसी आंख और जल्दी जल्दी चलते फिरते। शरीर में चिपक जावें ऐसे कपडे पहरते हों एवं शरीर का चाल चलन ज्याद: हरकत करताहो उससे खडे रहने और बैठनेके प्रकार से शरीर की मानो बेडोल स्थिति हो गई हो, तत्पश्चात् पक्षियों के चक-चकाहट के समान जो समझमें न आ सके ऐसी भाषा बोलते हों। ऐसे विचित्र प्राणियों को देखकर जिन के बालक डर कर अपनी झोपडी में रोते रोते न घुस जावें इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। मंगोलिया के टट्टु युरोपियनों को देखकर न जाने क्यों भडकते हैं। उनकी आंखों पर पट्टी बांध देने पर ही वह किसी परदेशी को अपने पर बैठने देते हैं। चीन के कुत्ते भी प्रत्येक युरोपियन को देखकर भौंकने लगते हैं। एक चीनीने ऐसा

कहा था कि तमाम युरोपियनों के शरीर से एक तरह की बदबू निकलती है उससे हमारे जनावर तथा देश बन्धु भडकते रहते हैं। मजा तो यह है कि जो आरोप वह युरोपियनों पर लगाते है वही दोष युरोपियन उन पर लगाते हैं।

(२४७) चीनी स्त्री पुरुषों के काले बाल तथा काली आंखे होती हैं। कदाचित् कोई जाति ऐसी हो कि जिसकी आंखे भूरी हों। चीन के अमलदार तथा गृहस्थ लंबे झूल के माफक ढीले कपडे पहनते हैं, और धीरे २ ठाठ से चलते हैं। बैठने उठने में विवेक के नियमों को बराबर पालते हैं। चीनी अपनी भाषा को देववाणी मानते हैं। वे अनादि कालसे उसेही बोलते चले आ रहे हैं। उनको युरोपियनों को किसी प्रकारकी भी खबर नहीं। ये लोग आये कहांसे! कहांसे आवेंगे वे ऐसा मानते हैं कि पृथ्वी एक बीचका लोक है और उसके चारों तरफ समुद्र है। उनके किनारे पर जो छोटे द्वीप हैं उनमें से ही वे आये होंगे। चीनियों की पुस्तकों में यह लिखा है कि आकाश गोल है एवं पृथ्वी सम चोरस है। बुद्धिमत्ता से लिखी हुई होने के कारण इन पुस्तकों में कोई भी प्रमाद नहीं है। जब पहले पहल चीनिओं को परदेशियों का दर्शन हुवा तब उन्होंने नहीं ख्याल किया था यद्यपि आजकल शिक्षण का बहुत प्रचार हुआ है तो भी बहुत दिनों से प्रचलित समझ अभी तक दूर नहीं हुई। एक अमलदार की एक युरोपियन से मैत्री हो गई थी। उसने अपने

राष्ट्रीय वेष का व्यावहारिक रीतिसे अर्थ करते हुए उस परदेशी से कहा था कि ' अरे। तुम ऐसा तंग वेश पहनते हो उस का कारण मैं नहीं समझ सकता, कपडे में पिस्सू घुस जावेंगे तो तुम किस तरह निकालोगे ? ।

(२४८) कृतज्ञता के गुण के साथ एक भारी अवगुणभी चीनियों में है। वैर प्रतिशोधन की भारी इच्छा। चीनियोंने सात गुण गिनवाये हैं, आनंद, क्रोध, शोक, भय, प्रेम, तिरस्कार और इच्छा, और आठवां वैर निर्यातन, इस का काबू चीनियों के मन पर बडा जबरदस्त है। वैर प्रतिशोधनार्थ बेटे की बहु कुंए में गिरती है, और गिरते गिरते सन्तोष मानती है कि उस के श्वसुर के घर पर आफत तो आवेगी फिर चाहे उस घर का नाश होवे। किसी का किसीने नुकसान किया हो तो वह उस के घर पर जाके आत्महत्या कर लेता है तो उस पर बडी कठिनता आ पडती है। एक समय एक स्त्री एक तालाब में गले तक पानी में घुस गई, और चिल्लाकर कहने लगी कि मुझसे अब मेरा जीवन सहन नहीं होता क्योंकि देशमें परदेशी जंगली लोग (युरोपियन) घुस आये हैं, मैं उन को देख नहीं सकती, इस लिये डूब मरती हूं। अगर यह मर गई होती तो भूत बन कर किसी तरह वैर उगाहती।

(२४९) आश्चर्य की बात है की पितृभक्ति और भ्रातृभाव अच्छी राज्य व्यवस्था तथा देश की आबादी के वास्तविक कारण

हैं उन का प्रचार अधिक होनेसे जीवके बदले जीव लेने का जोष अर्थात् वैर लेने का जोष चीन में शुरु हुआ है। कान्फ्युशियस पुस्तक में धर्मक्रिया का ग्रन्थ भिन्न है उस में व्यक्तिशः आचरण की विधि यह है 'किसी मनुष्य के बाप को किसीने मारा हो, तो उस को मारने के वास्ते घर पर कभी भी जाने की जरूरत नहीं, किसा के मित्र को किसीने मारा हो तो खूनी जिस राज्य में रहता हो उस में नहीं रहना' यह वाक्य ईसा से एक शताब्दी पहले का है परन्तु कान्फ्युशियस अथवा उस के शिष्य मॅन्शियसने छापने के पहिले सुधारा नहीं है इस लिये इस वैर निर्यातन पद्धति को वे अपनी सम्मति देते हैं यह सन्देह जनक ही है। उपरोक्त ग्रन्थ के आधार से अगर वैर लिया जावे तो रक्त की नदियां ही बहा करें। चीनियों की मैत्री जिस तरह दृढ है उसी तरह उन का तिरस्कार भी दृढ हैं, उन की भाषा के एक वाक्य का यह अर्थ है, वे चाहते हैं तो मरने तक चाहते हैं और धिक्कारते हैं तो मनुष्य की मृत्यु हो जावे ऐसी इच्छा रखने में भी कमी नहीं करते परन्तु हम तो देख चुके हैं कि प्राचीन तत्त्व वेत्ताओं का उपदेश था कि अपकार के बदले में उपकार करो लेकिन कान्फ्युशियस आखर मनुष्य ही था, मनुष्य स्वभाव की निर्बलता और मर्यादा वह जानता था। इसी लिये उच्च भावना का उपदेश दिया। अपकारका बदला न्याय से प्राप्त करो। डर यह है कि यह हलका नियम भी चीनी

व्यवहार में नहीं पालन करते। अपने शत्रु पर भी न्याय बुद्धि रक्खो परन्तु यह अव्यवहारिक सी है।

(२५०) चीनियों के बाबत यह कहा जाता है कि इन को समय का बिलकुल ख्याल नहीं। जान पहिचान का ग्रहस्थ आवे तो इतनी देर तक बैठता है कि गृह पति तंग हो जाता है। यह अनौचित्य चीनी भी महसूस करने लगे हैं। उन के यहां एक कहावत है कि 'लंबी मुलाकात छोटे मान के लायक है' 'समय के प्रत्येक क्षण का उपयोग करलो' 'आधा घण्टा हजारों तोला चांदी से ज्याद: मूल्यवान है। इस से आप जान सकते हैं कि समयकी उनको कितनी कदर है। पहले लोग छाया यंत्रसे समयको नापते थे। एवं जलघटि (कलेप्सिड्रा) अथवा पानीके घटिका यंत्र से काम करते थे। यह चीनने आविष्कृत किया या अन्य देशों से लिया यह नहीं कहा जासकता।

(२५१) पानी से समयको मापने की यह घडी विचित्र होती है। पानी से भरा हुवा घडा रखते थे उस में एक छेद करते थे। वह पानी दूसरे घडेमें टपकता आखिर एक बरतन रखते जिसमें मापने के लिये अंक लिख देते थे एक एक अंक दो दो घंटे का समय बताया करता था। पहिले रात दिन के १२ भाग करते थे पर अब तो छोटी बडी घडिएं सब जगह दीख पडती हैं और युरोपियन लोगों के माने हुए २४ भाग सब जगह

माने जाते हैं। पहिले अगरबत्ती की तरह की धूप की छडी इतनी देर में जल जावेगी, तब इतना समय होगा ऐसा समझते थे पानी की घडी की मदद से अथवा मोमबत्तियों को जला कर समय का परिमाण निकालते थे पर अब ऐसा नहीं है।

(२५२) हिंदुओं के समान चीनी भी चांद्रवर्ष मानते हैं। चन्द्रमा पृथ्वी के चारों तरफ १२ चक्कर फिरता है तब एक वर्ष होता है। सौर वर्षकी अपेक्षा इस में दश दिन कम होते हैं। उन दोनों का मेल मिलाने के वास्ते प्रतिदिन वर्ष में एक अधिक मास माना जाता है। पहिले युरोपियन लोग बडी संख्या में नौकरों को रखने लगे तब उन्होंने कहा कि हमें विलायती महीने के अनुसार वेतन नहीं चाहिये क्योंकि प्रति तीन वर्ष में एक मासका न्यून वेतन मिलता है। प्रत्येक वर्ष पेकिन से सरकार की तरफसे एक बडा पंचांग प्रकट होता है। उस का प्रचार सम्पूर्ण राज्य में होता है। उस में सामान्य रीतिसे लोकोपयोगी हकीकत रहती है। इस के सिवाय कौन से दिन अच्छे कौन से बुरे, भिन्न २ प्रकार के कार्य करने के वास्ते शुभाशुभ मुहूर्त, और भी बहुतसी बात होती है। राज्य करने वाले तमाम शाहनशाहों की मरण तिथि उस में लिखी होती है क्यों कि उन दिनों में सब कचहरियां बन्द रहती हैं। किसी परदेसी अमलदार को चीनी अमलदार से आवश्यक मिलना हो तो पीछे के दरवाजे

से जाकर मिल सकते हैं। सामने का दरवाजा किसी तरह नहीं खोल सकते।

(२९३) चीनियों के विवेक तथा रीति भांत का सूक्ष्म विवेचन करना भी आवश्यक है–दरबार में चौराहे में एवं घरके एकान्त भागमें रीतिभात में और विवेक में जरासी भी भूल न होनी चाहिये। इतने महत्व का यह विषय माना जाता है। एवं नियम के भंग की तरफ तो बुरी तरह देखा जाता है। जिन परदेसियों की चीनियों के साथ में आनन्द और शांतिसे रहनेकी इच्छा हो उनको इन बाहर की रीतिभांतिका ज्ञान प्राप्त करना परम आवश्यक है। चीनियों का बाहरी विवेक यूरोपियनों से नितान्त भिन्न होता है लेकिन उनका रहस्य तुल्यही है। जरासी बुद्धि खर्च कर काम लिया जावे तो गरबड अथवा भयंकर परिणाम लावे ऐसी तकरार का प्रसंगही न आवे। चीन के तत्वज्ञानियों ने अपने लेखों में स्वीकार किया है कि विधि, नियम, सलाम अनुक्रम से बैठना उठना, रास्ते पर आते जाते समय पालने नियम इत्यादि को छोडकर औरों में कुछ विशेषता नहीं है। परन्तु वह ऐसी दलील करते हैं कि अगर सामाजिक नियमों में नियंत्रण न हो तो बिलकुल गडबड मच जावे। इस लिए रीत भातका एक बडा नियमका संग्रह बना डाला है। दरबार में तथा कचहरी में कैसा बर्तना उसके बहुतसे नियम हैं। परन्तु लोग जिसका

दुर्लक्ष करते हैं तथा रूढिके द्वारा जो अपने आप वर्ता जा रहा है उसी की बात करेंगे।

(२५४) चीनियों के साथ बिलकुल मिल जाना हो तो इन के नियम साधारण समझपर ही बांधे गये हैं। खाली हाथ वाला मुसाफिर बोझा ले जाने वाले आदमी को रास्ता छोड देवे। वही बोझा ले जाने वाला मजदूर सिर पर बोझा रखकर जाता हो तथा दो किंवा ज्यादह मजदूर पालकी उठाकर आते हों तो उन को हट कर रास्ता दे देवें। पालकी वाले घोडे पर चढे हुवे को रास्ता देवें, खाली पालकी वाले भरी हुई पालकी को अथवा ये सब वर-राजाको अथवा सर्कस (जुलूस) अथवा किसी अमलदार के रसाले को रास्ता छोड देवें। हां एक बात जरूर है कि चीन के राजमार्ग में किसी मनुष्य को बीचोबीच खडे रहने की इच्छा हो तो कोई रुकावट नहीं। वह आदमी अपना बोझा अथवा गाडी रास्ते के बीचमें रख देवे और चारों तरफ के जाने आने वाले मुसाफिरों को टगर टगर देखा करे। एवं लोग टेढा मेढा रस्ता निकाल कर चलते जावेंगे लेकिन यह न कहेंगे कि गाडी बीचमें क्यों खडी रक्खी। जो मित्र सायंकाल के समय हवा खाने जाते हैं वे ऐसे ही कारणों से एक के पीछे एक हो कर चलने लगते हैं और चिल्लाकर बाते करते हैं कि सब लोग सुन सकते हैं। चाहे तो एक पंक्तिमें रह कर घूम सकते हैं। गांवों में ऐसी कठिनता बहुत कम आती है। दुकानदार अपने लकडी के तख्तों को रास्ते पर

जमाकर अपना सामान खुला रख सकते हैं। जहां ज्यादह ग्राहक हों वहां फेरी वाले भी रास्ते के बीच अपनी जगह निकालकर दुकान लगा के बैठ जाते हैं। 'स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये व्यवस्था की पहिले आवश्यकता है। इस प्रख्यात सूत्र का रहस्य चीनियों के जीवन में अबतक उतरा नहीं ऐसा मालूम होता है। चीनियों के सामाजिक जीवनमें स्वातन्त्र्य देखने लायक है। वे जो स्वतन्त्रता का सुख भोग रहे हैं उस में व्यवस्था का अंश दाखिल करें एवं प्रत्येक चीनी थोडासा कष्ट सहन करे तो सुख घटने के बजाय बढे।

(२५५) अब घर में पालन किये जानेवाली कितनी ही रीतिरिवाजों का वर्णन करेंगे। परदेशी युरोपियन लोगों को उस तरफ दुर्लक्ष्य करने की जरूरत नहीं है। लेकिन इतना याद रखना चाहिये कि अपनी रीतभांत निकालकर चीनाई रीतभांत दाखिल करने की जरूरत नहीं है। उदाहरण के तौरपर कोई भी चीनी अथवा उसकी रीतभांत जाननेवाला कोई भी यूरोपवासी अपने को कोई मिलने को आवे तो कुर्सीपर से उठे विना न रहेगा। एवं यजमान का यह भी फर्ज है कि जबतक अतिथि न बैठे तबतक उसको भी न बैठना चाहिये। घर में प्रवेश करते अथवा निकलते समय, पाहुने को ही पहिले जाने देना, यजमान पहिले निकले या अंदर जाए यह विवेक की न्यूनता समझी जाती है। अलाहिदा होने के समय भी मिलने को आये हुए को घर के दरवाजे

तक छोड आना चाहिये। कितनी ही शताब्दियों से ऐसी रूढि पड गई है कि अतिथि को हमेशा अपने बांई तरफ ही बैठाना, क्यों कि वह स्थान मानवाला गिना जाता है। युरोप के माफक अतिथि को पहिले दांई तरफ बैठाने का रिवाज था, कोई मिलने को आवे उस समय अतिथि अथवा यजमान को अपनी स्त्रियों से जरासी भी बात न करनी चाहिये। जिस तरह स्पेन की रानी के पैर की बात नहीं कर सकते उसी तरह उनकी लेशमात्र भी बात नहीं कर सकत।

(२५६) चीन में एक विचित्र रिवाज है वह निजु और सरकारी मुलाकात के विषय में हैं। इस रिवाज को न जानने से एक बडी भारी उलझन उत्पन्न हो जाती है। यह रिवाज अतिथि को चाह पिरसने का है कोई पाहुना आता है कि तुरत उस को चाह दी जाती है। नौकर अपने हाथ में दो प्याले ले के आता है वह प्यालों को इस तरीके से रखता है कि अपने दहिने हाथ का प्याला मेहमान के मुंह के सामने आवे। इस समय वह मेहमान नोकरके दहिने हाथ के तरफ मुख करके बैठा होता अपने मालिक का प्याला वह बाएं हाथ में लाता है। एक पर एक हाथ रख चौकडी की तरह हाथ रख वह प्याला लाता है, किसी समय अपने पाहुने को विशेष सन्मान देने के लिए अपने दोनों हाथोंसे नौकर के हाथ से प्याले ले लेता है, और पाहुने के आगे

रखता है। क्यों कि किसी को एक हाथ से वस्तु देना बहुत बुरा माना जाता है, अब वह मेहमान अज्ञानता से अथवा प्यासा होने से अथवा ममत्त्व बतला कर जो सुगंधित चाह भेजी है, उसे पीना यह विवेक का कार्य है ऐसा समझ वह प्याला मुखके आगे ले जाता है लेकिन उसी समय नौकर लोक आपस में कुछ कानाफूसी करने लगते हैं एवं वहां का वातावरणही क्षुब्ध होजाता है। नौकर यह रिवाज अच्छी तरह जानते हैं कि मेहमानके चाह पीने पर यह उठेगा एवं मुलाकात पूरी होगई, अर्थात् मुलाकात अधिक देर तक करनी हो तो चाह को छूना नहीं चाहिए। गड़बड़ का कारण यह है कि घर के बाहर वे अतिथि की पालखी तैयार करने और जहां खडे रहना हो वहां खडे रहने के लिये पुकार मचाते हैं। इस रिवाज की एक और बात बहुत ध्यान में रखने के लायक है कि यजमान की भी यदि इच्छा हो कि पाहुना जल्दी उठे तो वह भी अपनी चाह पीने लगाता है, और अपने पाहुने को चाह पीने को कहता है। तब पाहुने को जानेकी मंजूरी मांगनीही पडती है। पुराने समय में पाहुने जूता बाहर निकालकर घर में प्रवेश करते थे, यह रिवाज अब भी जापान में है क्योंकि जापान ने अपना सब सुधार चीनसेही लिया है।

(२५७) घर में मुलाकात हो या रास्तेपर हो तब चश्मा उतारलेना चाहिये। यह एक सभ्यता है। परदेशियोंने इस

नियमको मानाही नहीं, इस लिये चीनी लोग जब परदेशी से मिलते हैं तब चश्मा नहीं उतारते ! उसी तरह विद्वान् लोग चाहे वे कितने ही गरीब हों, उनको छोटे अर्ज के कपडे पहन कर घूमना अथवा अपरिचित से मिलने में असभ्यता समझी जाती है। लेकिन खुद युरोपियन लोगों को ही तंग कपडे पहरने के कारण उनसे मिलने में चीनीलोग भी अब यह नियम नहीं पालते। मनुष्य प्रामाणिकता के साथ गरीब हो तो चीन में उसको शर्माने की जरूरत नहीं है पाश्चात्य देशों की अपेक्षा दरिद्रता का बदला विद्वत्ता से मिल सकता है। विद्वत्ता को इतना अधिक मान मिलता है कि जिसने पदवी प्राप्त की हो वह सामान्यजनों से भिन्नश्रेणी में चलता है। कोई यूरोपियन अथवा परदेशी की समझ में आसके ऐसी चीनी भाषा बोलता हो तो उसपर जंगलीपनेका आरोप कम कर दिया जाता है। इस तरह बोलने के साथ पवित्र चीनी भाषा की लिपि भी आती हो तो वह मनुष्य चीनीयों की दृष्टि में बिलकुल बदल जाता है। अर्थात् प्राचीन पवित्र पुरुषों की असर अब उस परदेशी के जंगली पन और अज्ञान को वश करने लगी है।

(२५८) लिखने की लिपिको पवित्र विशेषण लगाना सकारण है। लिपि के आविष्कार (शोध) से ही छुपेतौरपर एवं शान्तिसे असाधारण और अद्भुत परिणाम आये हैं। इस विषय में चीनियों को इतना विश्वास उत्पन्न हुआ है कि धीरे धीरे उस

में दैवी शक्ति के स्वीकार करने लगे थे। वे अक्षरों को पूज्य समझते हैं। किसी कागज के टुकडेपर अक्षर लिखा गया वा छापा गया कि वह पवित्र हुवा एवं सादे कागज से उसकी कीमत ज्यादह हो जाती है। उस कागज को बेपरवाही से नहीं फेक सकते। पैरके नीचे तो कभी उसे न आने देंगे। उसका नाश पूज्यभाव से अग्निमें हो सकता है। क्योंकि इस तरह वह पवित्र वस्तु ईश्वर के पास जा सकती है। इस से उस में लिखा हुवा आध्यात्मिक रहस्य जो कि मनुष्यों से निकला है सो उस में मिल जाता है। चीन के बडे २ रस्तों तथा छोटे २ कूचे और गलियों में टोकरी के आकार के बर्तन रक्खे रहते हैं उस में वे लोग कटे हुवे कागज के टुकडे डालते हैं फिर उनको जला डालते हैं। इस से वे कागज भ्रष्टता से बच जाते हैं। इसी लिये चीनमें परदेसियों के विरुद्ध कहा जाता है कि लिखेहुए कागजों या छापेहुए का कुछ भी उन लोगों को पर्वाह नहीं। इससे परदेशी लोगों के कागज में लिखी हुई वस्तुएं निकम्मी ही होनी चाहियें। पुस्तकों के पुठ्ठे बनवाते समय छपे हुवे कागज का उपयोग फौजदारी गुन्हा करने के बराबर माना जाता है। इसी तरह छपे हुए कागजों को जूते के तलियों में लगाना भयंकर अपराध समझा जाता है। इतना तो हम जरूर कहेंगे कि मनुष्य के अन्दर द्रव्य के लोभ की जो निर्बलता है वह इस समय जीती जाती है। फिर भी यदि जूते बनाने वाले लोग कागज का उपयोग करते हैं, तो भी

ताओ धर्म के दृष्टिबिन्दुसे इस में इतनी जिम्मेवारी है कि उसको उठाना बहुत मुश्किल है। चीनी ऐसा मानते हैं कि पृथ्वी पर किये पापके प्रायाश्चित के वास्ते मरनेके पश्चात् पापियों को दश नरक में से एक या अधिक नरकसे होकर जाना पडता है। पापी पुतलेपर से सुवर्ण के रस को उखाड लेते हैं। जो वृथा पवित्र नाम का उच्चारण करते हैं। जो लिखे वा छापे हुए कागजपर सन्मान की दृष्टि नहीं रखते, जो देवमंदिर के पास कूडा कर्कट जमा करते हैं, जो अपने पास ईश्वर के विरुद्ध एवं वीभत्स पुस्तकों को रख उसका नाश नहीं करते। दूसरों को अच्छा उपदेश प्राप्त हो ऐसी पुस्तकों को जो तोडफाड डालते हैं, ऐसे पापियोंको इन दश नरक में से छठे नरक में डाला जाता है।

(२५९) अन्य नरकों की तरह इस छठे नरक में भी न्यायाधीश बैठा हुआ होता है। उसके पास दण्ड देने के सब साधन हथियार आदि होते हैं। पापियोंको उन के पापका दण्ड देने के लिये नरक के सोलह १६ भाग किये हुए होते हैं। इस में पापियों को भिन्न २ वेदनाएं भोगनी पडती हैं उनको ज्वलन्त लोहे के खम्भों से चिपका दिया जाता है। अथवा मूत्र पुरीष के कुण्ड में गले तक डुबो देते हैं। अथवा उस के सिरपर लोहे के घाव मारकर उस के शरीर से खून निकाला जाता है। लोहे के चिमटे से उसका मुख बलात्कार से खोलकर उस में सुई भरी जाती हैं। अथवा उसको चूहोंसे कटवाते हैं। उसको

कांटोंकी जाली में कैदकर कटवाते हैं। उसका हृदय निकलवा लेते हैं, उस के शरीर का चर्म्म निकालकर उसको सुखाकर दीपक आदि बनाते हैं, बीच में से उस के शरीर के दो टुकडे किये जाते हैं। ये दण्ड किस प्रकार दिये जाते हैं उस के चित्र प्रत्येक शहर के देव मन्दिर में खिंचे रहते हैं। एवं भय का आगार समझे जाते हैं। मरण के पश्चात् दूसरी दुनिया में क्या मिलेगा, उसको बतलाने वाले घृणोत्पादक इन भयंकर चित्रों से चीनकी अशिक्षित जनता के आचरण पर कुछ असर होती है या नही यह शंका की बात है। जब तक शरीर आरोग्य युक्त एवं लक्ष्मी प्रसन्न होती है तबतक नरक के भय से कोई भी डरता नहीं जबतक ऐहिक सुख की सामग्री सिद्ध होती है तब तक प्रत्येक चीनी चाहे जो कुछ करते हुए भी पीछे नहीं हटता।

(२६०) हम कह चुके हैं कि चीनी स्वभाव से धार्मिक नहीं हैं। बौद्ध धर्म के पन्थ में दी जानेवाली लालचों से अथवा नरक के दुःखों से उस के मन पर असर नहीं पडती। लेकिन बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म को माना है, उस से कदाचित स्त्री का जन्म मिले अथवा किसी और प्राणी का शरीर मिले तो ठीक नहीं। इस का उस को बडा डर रहता है, और मुख्यतया इसी बात से उस के आचरण में कुछ परिवर्तन होता है। भिन्न भिन्न प्रसंगों पर पुनर्जन्म का विश्वास पाप करते समय किसी

अंश में अवश्य प्रतिषेध करती है, निदान यह बात तो अवश्य है कि प्रत्येक चीनी घर के पालतु जानवरों पर अवश्य प्रेम करता है। वह ऐसा मानता है कि कहीं इस जानवर का अवतार मुझ को न लेना पडे। अथवा जिस घोडे टट्टु अथवा गधे से कस कर बेदर्दी से काम लेता है कदाचित् वह जानवर का अवतार उस का मित्र हो, अथवा कोई कुटुम्बी हो। कितने ही ऐसे होते हैं कि उन को अपने पूर्वजन्म की स्थिति याद होती है, और वह जो कुछ कहते हैं वह साबित कर सकते हैं। किसी किसी समय ऐसा होता है कि मनुष्यों ने जो स्थल या मकान अपने जीवन भर में न देखें हों उन का वर्णन वे यथास्थित करते हैं। ऐसे अनेक दृष्टान्त उल्लिखित होने से चीनीओं की पूर्वजन्म की मान्यता दृढ हो जाती है। इस जन्म के साथ जिनका कुछ भी संबन्ध नहीं ऐसे दृश्य व शब्द उन्होंने देखे या सुने हों। एक दृष्टान्त है कि कोई आदमी पूर्वजन्म में घोडा था, यह उस को याद था। उस पर उठने बैठने वाले स्वार अपनी एडी किस बेदर्दी से उस को मारते थे तब उसको किस प्रकार दर्द होता था, उस का वर्णन यह तादृश करता था, आश्चर्य की बात तो वह है कि पूर्वजन्म की बात अगले जन्म में याद न रहे इस लिये नरक में विस्मृति का प्याला पिलाते हैं ते भी इस को इतना याद था।

(२६१) नरक में पापियों को सब से अधिक भयंकर

मानसिक दण्ड दिया जाता है, क्षुद्र मनुश्य शारीरिक वेदना से जितने घबराते हैं उतने मानसिक से नहीं, पांचवें नरक में बुरे लोगों के जीवों को बडी खुली छत पर ले जाते हैं। वहां पर खडे खडे वे अपने मृत्युलोक के घर में क्या हो रहा है वह देख सुन सकते हैं । वे देखते हैं कि हमारी इच्छाएं बिलकुल नहीं पाली जातीं; हमारे हुक्म का बिलकुल अनादर होता है, बडी मुसीबत से पैसे पैसे करके जोडा हुवा धन उडाया जा रहा है, स्त्रीका जीव देखता है कि उस का पति दूसरी शादी करने को तैयार हुआ है। पति देखता है कि उस की विधवा स्त्री दूसरा भर्तार करने को तैयार है । उसकी मिल्कतके दूसरेही लोग हकदार बन गये हैं । जो कर्ज हमने चुका दिया था, उसकी फिरसे मांग हो रही है, और पिछले आदमियोंने उसे सच्चा समझा है । इनका जो लेना था, वह सब डूब गया है । यह सब मृतके पिता माता तथा स्त्रीको भोगना पडता है । वे सब इसके बदले में मृत मनुष्यको गालियां देते हैं। एवं वह जीव यहभी देखता है कि बालबच्चे जुदे जुदे हो गये मित्र पलायन कर गये, कितनेही शबको हाथ लगाकर कुछ आंसू गिरा गुप्तरीतिसे हंसते हंसते जा रहे हैं। मृत स्त्रीका जीव कैदखानेमें दुःख भोगते पतिको देखता है। बिकी हुई जमीनें, घरबार आगसे जले तथा पानीसे बह गये हुए देखता है । एवं सब अव्यवस्था देख अपने पापका फल समझता है। ऐसी चीनीओंकी मान्यता है।

(२६२) प्रकृति के बाहरकी वस्तुका ऊहापोह किसीभी स्व-रूप या आकारमें करनेका निषेध कान्फ्युशियस करता है। उसका उद्देश एकयही था कि इस पृथ्वीपरके मनुष्यके जीवनको सुधारना, और मरणसे जो अवस्था प्राप्त होकर दुनियासे पृथक हो जाता है इसमें सिरमारनेका प्रयत्न करना, यह उसको अच्छा न लगा, तोभी उसको नास्तिक नहीं कह सकते। क्योंकि आध्यात्मिक विषयोंका अभ्यास मनुष्यको लाभदायक है ऐसा वह कहा करता, और मृतजीवोंका सन्मान करो, पर उससे दूर रहो, ऐसा वह अपने शिष्योंको कटाक्षमें उपदेश देता। उसने एक समय यह कहा था कि जो मनुष्य ईश्वरके विरुद्ध पाप करता है उसकी भक्तिका कुछ ध्येय नहीं। जब वह बीमार था तब उसके शिष्यने आकर उससे पूछा कि हम प्रार्थना करें? तब उसने शिर हलाकर कहाकि 'नहीं' मैं सम्पूर्ण जीवन भजन ही किया करता था अर्थात् इसका सम्पूर्ण जीवन भक्तिमयही था।

द्वादश प्रकरण

चीन का भविष्य

(२६३) चीनमें रहनेवाले परदेशियोंका यह साधारण अनुभव है कि चीनी एक अगम्य पदार्थ हैं। मनुष्य हैं लेकिन उनकी एक पदवाली विलक्षण भाषा जिस तरह दुनियांसे निराली है, इसी तरह ये भी किसी श्रेणी में नहीं आ सकते।

(२६४) चीनियोंके लिये इस तरहका ख्याल बांधना ठीक नहीं है। बहुतसी बातोंमें युरोपियन और चीनियों में विचार आचार आदि भेद दीख पडता है तोभी यह सब औपचारिक है। चीनी कहा करते हैं कि इनके होकायंत्रकी सुई का मुंह दक्षिणके बदले उत्तरकी तरफ रक्खा जाता है। जब वे मण्डली में इकट्ठे होते हैं तब टोपी सिरसे उतार कर हाथ में रख लेते हैं। घोडेपर दहिनेके बदले बाई ओर से चढते हैं। भोजनमें फलसे पहिले शोरवा पीते हैं। गरम शराबके बजाय ठंडी शराब पीते हैं। उनकी पुस्तकोंका आरंभ उल्टी तरफसे होता है। पुस्तकोंमें खडीके बजाय टेढी लकीर खेंचते हैं! वे अपने मेहमानको बाई तरफ बैठाते हैं। उनके संगीतमें कोलाहलके सिवाय कुछ नहीं, सुनकर उल्टी हंसी आती है। गानाभी गला फाडकर गाते हैं। उनकी स्त्रियां असभ्य हैं नृत्यके कमरेमें अर्ध नग्न होकर नाचती हैं।

तथा जानपहिचानके बिनाभी आलिंगन करती तथा किसी पुरुष सेभी हाथ मिला सकती हैं। लकडी हाथमें लेकर निकलनेपर निर्दोष मनुष्यको मानों मारेंगे ऐसा मालूम होता है घोडों तथा नावोंकी शर्तोंमें वे खुद जाते हैं। बाष्पयान रेल विमान आदि यांत्रिक साधनके आविष्कारमें ये बडे उस्ताद हैं। लेकिन स्वभाव से ये बडे क्रूर तथा जंगली होते हैं।

(२६५) जिस तरह चीनी यूरोपीय व्यक्तिको अगम्य प्राणी लगता है, इसी तरह चीनियोंको यूरोपीय व्यक्ति विचित्रसे प्रतीत होते हैं यह हम ऊपर कह चुके हैं। चीनीओंकी मुखाकृति जड जैसी अगम्य है इस लिए कभी२ शक हो जाता है कि इसमें मनुष्यत्त्व जैसा कोई तत्त्व है कि नहीं। सामान्य नीति के तत्त्व, पडोसियोंके प्रति कर्तव्य, कानूनन जिन बातोंकी सख्त मनाई है, तथा सामाजिक जीवनके नियम और रूढि जो प्रत्येक चीनीके विचारोंको पुष्टि मिलती है, अगर इन सबका मुकाबिला करें तो कितने एक आनुषंगिक संयोगोंको छोड वे बातें चीन और यूरोपमें समानही हैं। इस तरहके सूत्र, उपदेश और तत्त्वज्ञानके साधन होते हुए भी यूरोपीय लोगोंसे विरुद्ध स्वभावके हैं ऐसा कैसे समझ लें। बात यह है कि चीनी अगर अपने धर्मके अनुसार सच्चाईसे आचरण करें तो ताओ धर्मके तत्त्वज्ञानके अनुसार जिनको पवित्र पुरुष कहते हैं उनसेभी कुछ उत्तम कहे जावें।

(२६६) हम यह कह चुके हैं जगत की दूसरी प्रजा जिस आशय से प्रेरित होती है चीनी भी उसी आशय से प्रेरित हो कर उन को भी लोकेषणा व वित्तैषणा इष्ट है। तो भी मानते हैं कि कीर्ति और लक्ष्मी चंचल हैं। वंश वृद्धि की इच्छा से पुत्रैषणा स्वाभाविक है। कुटुंब में बैठकर सुख भोगने का, मित्र की संगति का, पुस्तक वांचने का, पर्वत पुष्प चित्र इसी प्रकार के दूसरे पदार्थों का सुख भोगना सब कोई चाहता है, इसी तरह चीनी भी चाहते हैं। स्कोच लोगों के दृष्टिबिन्दु से हम उन को मिताहारी कहेंगे ' तो भी उन को मिजबानी अच्छी मालुम होती हैं। मनुष्य का हृदय उस के पेट के पास ही रहता है, हजारों वर्ष पहले चीनी बडे शराबी थे। २००, ३००, वर्ष से वे अफीम के गुलाम बने हैं। शराब का उपयोग भी थोडासा बाकी रह गया है। अफीम खाने की अपेक्षा, हुक्केमें अफीम का पीना कम नुकसान करता है। बहुत से लोग अफीम पीते हैं बल्कि यह एक राष्ट्रीय दुर्गुण हो गया है। युरोप के देशों में शराब से जितनी खराबी पहुंची है उतनी अफीम से चीनमें नहीं पहुंची, अभी एक अफीम के बहिष्कार के लिये कानून भी पास हुआ है। परन्तु हमें यह सन्देह है कि अफीम से भी खराब असर करने वाला पदार्थ न जाने कौनसा चीनियों के अन्दर घुसा हुआ है। एवं मनुष्य स्वभाव की स्फूर्ति को जागृति पैदा करने वाला फिर कहीं न शुरु हो जावे ऐसा सन्देह

रहता है। वह नया शत्रु अफीमका सत है। उसका प्रचार रोकने के लिये इस समय गम्भीर रूप से ध्यान देनेकी आवश्यकता है। लोगों की रुचिके अनुकूल बहुतसे पदार्थोंमें अगर इसका उपयोग हुआ तो एक गढेसे निकल दूसरेमें गिरने जैसा होगा।

(२६७) हिन्दुस्थानकी तरह चीनके संबन्धमेंभी यह प्रश्न बारबार पूंछा जाता है, एवं उसका सन्तोषजनक उत्तर आजतक मिलाभी नहीं, दुनियांकी अनेक प्रजा जिनकी सभ्यता चरम कोटिको पहुंच चुकी थी क्यों छिन्नभिन्न हो गये, जिन स्थानोंपर उनकी विजय दुंदुभि बजी थी वे स्थानभी इतिहाससें लुप्त हो गये। तोभी चीनकी प्रजा और उसकी सभ्यता अनेक शताब्दियों से कैसे जीते जागते हैं। मिस्र और चीनके दफ्तरोंकी गवेषणा करनेसे मालूम होगा कि मिश्रकी सभ्यता बढ़ी चढ़ीथी। चीनके लिये तो साधारण इतनाही कह सकते हैं कि ईसासे एक हजार वर्ष पहिले बहुत सुधरे हुए थे। इसका यह तात्पर्य है कि ग्रीस देशकी जागृतिकी अपेक्षा चीन पहिले जागृत था। परन्तु ग्रीस और मिश्रका अब नामो निशानभी नहीं, और चीन वैसेका वैसाही है। अगर यूरोपीय लोगोंका संसर्ग न लगता तो अबभी वह वैसे का वैसाही रहता।

(२६८) कोई ऐसाभी करते हैं कि आजतक उनका ऐक्य कायम करनेवाली उनकी एक लिपिही है। वह सम्पूर्ण महा राज्यकी भाषा है। सब लोग पढ सकते हैं। तोभी भिन्नर

प्रान्तोंमें उसके उच्चारण अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच भाषाओंके माफक भिन्न भिन्न होते हैं। दूसरे लोग कहते हैं कि चीनीयोंके हृदय एकही बन्धनसे बांधे गये हैं। एवं प्रजाके न फूटनेका एक कारण यह है कि कान्फ्युशियसका उपदेशही ऐसा है। वह उपदेश चीनमें बौद्ध, ताओ, तथा और धर्मोंके चीन में स्पर्द्धा होनेपरभी वैसाका वैसाही है। इन सब सिद्धान्तोंमें अवश्य कुछ कुछ सत्य होगा, वह इतनेसे पूरा खुलासा नहीं होता। एक महत्वकी यह बात है कि सब चीनाई संस्थाओंमें स्वतन्त्रता का जोश प्राप्त हो रहा है, और व्यक्ति स्वातन्त्र्यके जोशके कारण यह प्रजा जरासा भी अन्याय सहन नहीं कर सकती। इसीसे इस प्रजामें महान् ऐक्य है। चीनियोंका यह विश्वास है कि शाहनशाहके अन्दर कोई ईश्वरीय हक है जिससे वह गद्दीपर बैठा है। परन्तु इसके साथ वे लोग यहभी मानते हैं कि शाहनशाहको अपने योग्य स्थानके अनुसार वर्ताव करना चाहिये। जो हक वह चाहता है उसके बदलेमें जो कर्ज उसके सिरपर हैं वे अदा करने चाहिये। अगर ऐसा न करे तो शाहनशाह का ऋण पूरा हुवा, और उसको शाहन-शाह माननेको वे तैयार नहीं। देशमें आबादी हो, युद्ध न चलते हों, महामारी न चलती हो। दुष्काल न पडा हो, तब राज्य ठीक चल रहा है ऐसा चीनी लोग मानते हैं। राज्यमें अन्धेर चलनेपर ऐसा मानते हैं कि अब ईश्वरने शाहन्शाहके पाससे अपना हुक्म खैंच लिया। तब उस शाहन्शाहको उतार ईश्वरकी

कृपाके जो पात्र हो उसे बैठाते हैं। इसका यह परिणाम होता है कि जिस वंशका शाहनशाह होता है उसका नाशही हो जाता है।

(२६९) बुरे राजाको मार डालना हमारा अधिकार है ऐसा चीनी लोग मानते हैं। जाहिरा तौरपर इस सूत्रके प्रकट करनेमें राज्यद्रोह वा फौजदारी गुन्हा नहीं माना जाता, कान्फ्युशियसके ग्रन्थोंके अन्तर्गत समाये हुवे मॅन्शियसके लेखोंमें मानी गई यह बात प्रत्येक चीनी को नौजवानीमें यह बात सिखलाई जाती है। एक मान्डलिक राजा एक समय मॅान्शियससे बातें कर रहा था, कि ८०० वर्ष पहिले एक दुष्ट राजा था। उस पर स्वदेशाभिमानी वीर पुरुषने हमला किया तब वह अपने महल के आगे आगमें जलकर मर गया। इस बातपरसे राजाने मॅन्शियससे पूंछा कि 'क्या प्रजा अपने राजा को मारभी सकती है?।' उसका उत्तर मॅान्शियसने इस प्रकार दिया, 'जो मनुष्य दूसरे मनुष्यके हृदयकी उदारता पर आघात करता है, अथवा अपने पडोसी के प्रति अपनी फर्ज अदा नहीं करता वह बदमाश है।फिर उसने कहा कि तुम जिस शाहनशाहकी बात कहते हो असल में वह शाहनशाह नहीं था कोई बदमाश था इसी लिये उसे आगमें जलाकर मार डाला। चीन जो इतने दिनों तक जीता जागता रहा उस का कारण स्वतन्त्रता और लोक मत की प्रबलता ही है। सम्पूर्ण महाराज्य की बडी सी बडी परीक्षा के कारण राव से लेकर रंक तक के लिये खुली हुई हैं । जिस में कुदरती शक्ति हो और

जिस की शक्ति प्रज्वलित हो उठी हो उन सब मनुष्यों के लिये उच्चाधिकार के स्थान खुले हुए हैं। बुद्धि वर्धन के लिये साधनों की विपुलता है। गरीब से गरीब भी उस का लाभ ले सकता है। एक अच्छे लेखक का अभिप्राय यह है कि चीन लोक मत से चलने वाले राज्यों में सब से ऊंचे दर्जे का है। नेपोलियन ने भी कहा है कि न्यायपुरःसर लोकमत से चलने वाले राज्य में सब मनुष्यों को ऊंचे चढने का अवसर प्राप्त होनेपर उस से अधिक लोभ न करना चाहिये।

(२७०) अपना हक साबित करने के लिये सादे व निर्दोष साधनों के उपयोग करने में चीनी सदैव तत्पर रहते हैं। उन को एकत्र होकर अपने अधिकार प्राप्त करने की कला को खूब उत्तेजन दिया है। ऐसा करने से इन के हाथ में अदृश्य वस्तुका सत्ताशाली उपयोगी हथियार हाथ में आया है। वे अपने को दुःख देने वाले को ढीला व नेस्त नाबूद कर देते हैं, तथा सब वस्तुओं के मालिक बन जाते हैं। चीनीओं की बहिष्कार व हडताल की पद्धति में एक बात असाधारण है वह वफादार रह कर प्रतिज्ञा पालन करते हैं। एक स्थान के मछुवाहे वा पालकी उठाने वाले हडताल करते हैं तब उस में सब लोग मिल जाते हैं, उस में फूट जाने वाला कोई भी नहीं होता। अगर एक कसाई मांस न बेचे तो सब कसाई मांस न बेचेंगे। परदेशी व्यापारियों ने चीन के मजूरों को कुछ काम कर के नाराज किया था, उस

समय सत्तावाले टोले ने ऐसे हडताल की कि उस से परदेशियों को ही नुकसान हुवा, आखिर उन्होंने निश्चय किया कि अपने को चाहे नुकसान हो जावे लेकिन इन को नुकसान न पहुंचे। एक समय परदेशी व्यापारियोंने चाह के देशी व्यापारियों को सीधा करने के लिये एक युक्ति की कि उन को उनके ही साधनों से परास्त कर देना। चीनिओं से कोई भी चाइ न लेवे आखिर उन में से ही एक फूटकर चाह खरीदने लगा, लेकिन चीनी व्यापारी अडग रह।

(२७१) चीन देश इस समय गंभीर और महत्व के परिवर्तन की आरम्भिक अवस्था में पडा हुआ है। इस में जरासी भी शंका नहीं है। उसने शिक्षण की और परीक्षाओं की पद्धति बिलकुल बदली नहीं हैं लेकिन बडा परिवर्तन उत्पन्न करने की आवश्यकता है। पुरुषों की बडी शिखा और स्त्रियों क छोटे पैर करने की रुढि निकाल देनी है। रुपये पैसे भी व्यापार की आवश्यकता के अनुसार बदल डालने है। राज्य में कायदेका अमल जापानियों की माफक करना है, एवं उसन चीन के देश अपने राज्य में मिला लिये हैं वे छोड देवे, एवं सन्धि की शरतों के अनुसार उनका पालन करे। चीन में वास करते हुए परदेशियोंपरसे अपने हक उठा लेवें, और उनपर दीवानी या फौजदारी मुकदमे का प्रसंग आवे तो उनके ही आदमी से फैसला करवाना, चीनके शहेनशाह को राज्यका पिता समझ, मानों उस

का सम्पूर्ण कुटुम्ब है इस तरह राज्यशकट चलाना है। इस पद्धति से यही प्रतीत होता है कि एक ही के हाथ में निरङ्कुश राजसत्ता है वस्तुतः ऐसा नहीं है, चीन में लोकमत को ही अधिक मान दिया जाता है, २२ सौ वर्ष से चीन के उपयोग में आरही है, तो भी समयानुसार कुछ परिवर्तन होगा इस नवीन युग का आरंभ होगा. यह युग ऐसा हो कि चीनकी प्राचीन उज्ज्वल कीर्ति के साथ इस की तुलना कर सके।

(२७२) चीन में भविष्य के कर्तव्य की रूप रेखा आलेखन करने का हमारा विचार है। परदेशों, में कायदेसर राज्य प्रबन्ध है ऐसा चीन में स्थापित किया जावे। चीन में प्रजा के पास अधिकारियों के सामने होने के लिये अथवा अपना रक्षण करने के लिये एक ही हथियार है और वह भी विनाशक है। अधिकारियों के सामने मिलकर हडताल डालना, अब चुनाव का तत्व ध्यान में रख कर प्रजाके पसन्द किये हुए मनुष्य राजकारभार करें। १९०७ के शाहनशाह के हुकुम में यही बात दुबारा कही गई थी, १९०८ में दूसरा हुकम प्रकाशित किया गया था, उस में यह बतलाया गया है कि तमाम प्रान्तों में स्थानिक स्वराज्य करने के लिये प्रांतिक मण्डल स्थापित करना प्रस्ताव करना होतो कमसे कम ३० सभ्यों की सम्मति होनी चाहिये। फिर जब बहु सम्मति से पास हो जावे तब शाहनशाह के पास अर्ज के तौर पर किया जावे, इस राज्य

सभा को हानि कारक सम्मतियां शहन्शाह फर्मान से नामंजूर कर सभाको बरखास्त कर सकता है ।

(२७२) इस राज सभा में क्या नवीन पक्ष क्या गरम पक्ष क्या पुराने विचार के, सबतरह के, लोग एक स्थानपर ही बैठते हैं । बैठक में प्रथम दो पंक्तियां अमीर उमराव लोगों के लिये होती हैं। सबसे अधिक सन्माननीय सभापति के दाहिने बैठता है, और आखिर का आदमी बाएं बैठते हैं। पीछे की बैठकों की दो पंक्तियों में अमलदार, विद्वान और व्यापार के नेता लोग बैठते हैं, और उन के पश्चात् प्रत्येक प्रान्तसे चुने गये प्रतिनिधि बैठते हैं । इस तरह एक ही सभा के अगली पंक्तियों में दिवाने खास और पीछे की पंक्ति में दिवानेआम बैठती है । अगली पंक्तियों में बैठनेवालों का झुकाव पुराने विचारों को पकड रखने का, एवं पिछले बैठे हुए सभा जन गर्म और ऊंचे विचार करने वाले होते हैं । लेकिन ऐसा भी देखा जाता है कि दीवाने खास में कोई कोई सभ्य उदात्त विचार के होते हैं, और दिवाने आम में बिलकुल पुराने ढीले विचार के लोग होते हैं ।

(२७३) इस योजना के साथ चीनियोंको स्पष्ट शब्दों में बतलादिया है कि राज्यकारबार में उनकी सलाह सच्चे अन्तःकरण से ली जावेगी । तो भी कायदा करने की सब सत्ता पहिले की तरह शाहनशाह के पास ही रहेगी । ऐसा

भी मालूम होता है कि यह तो एक हाथ से दिया और दूसरे हाथ से ले लेने के बराबर है नवीन प्रबन्ध करना हो तो युरोप में भी ऐसा प्रयोग हो। परन्तु जो चीनियों को अच्छी तरह पहचानते हैं वे जानते हैं कि वे राजकीय मामले में सलाह देते हैं तो स्वीकार करने के लिये देते हैं। ऐसे मण्डल और बहुतसे स्थानोंपर स्थापित किये जानेवाले थे। नवीन युगका आरंभ इस प्रकारसे करनेवाले थे। इस मण्डल के सभ्य बनानेके लिये निर्वाचन किया गया था। अमुक मिल्कत रखनेवालेही ऐसा मत दे सकते थे। प्रत्येक प्रान्तमें निर्वाचन मत देनेवालोंकी संख्याके अनुसार सभ्य चुने जावेंगे। इस प्रकार एकके पीछेएक हजार मत देनेवाले बैठते हैं। उसके पश्चात्के वर्षमें वसति गणना होनेवाली थी, प्रान्तके व्ययपत्र निश्चित किये जानेवाले थे, और नवीन फौजदारी निबन्ध प्रकाशित करना था। इसके आधारपर तीसरे वर्ष के अंत बडे बडे गांवोंमें नवीन अदालतें स्थापन करनी थीं। इस प्रकार उत्तरोत्तर राज्यके प्रबन्धको विकसित कर लोक मतको मान दे ठेठ १९१० में चीनमें राज्य सभा स्थापन करनी थी। उसमें श्रीमन्त और साधारण वर्ग ऐसे दो भेदकर इंग्लण्डकी तरह मुख्य प्रधानकोभी नियोजित करना था।

(२७४) इस तरह १९०९ में प्रान्तिक मंडल अक्तूबर की चौदहवीं तारीख को मिले सन् १९१० के अक्तूबर में तीसरी तारीख को राज्यसभा भरी गई उस समय लोगोंकी

इच्छा को मान देकर एक एक महीने के बाद ऐसा हुक्म निकाला गया, कि चीन को सम्पूर्ण राज्य सभा में दो संस्थायें नहीं हैं। उस में २०० आदमी हैं। उन में से १०० खुद शाहनशाह नियुक्त करता है। ६८ मनुष्यों को विशेष अधिकार वालों में से शाहनशाह चुनते हैं। ३२ बडे अमलदारों का तथा, १० विद्वान लोगों का समावेश भी इन १०० में होता है। और बाकी १०० लोग प्रान्तों से चुने हुए होते हैं। वर्ष तक इन को राज सभा में बैठक मिलती है और उनका खर्च सरकार में से डाला जाता है। यह मंडल कार्यवाहक नहीं बल्कि शाहनशाह का सलाहकार होता है। उस का कर्तव्य कर विषयक चर्चा करनी, वार्षिक व्ययपत्र प्रसिद्ध करना, कानून को दुरुस्त करना, ये सब विषय सभा में प्रविष्ट होने के पहिले प्रसंदगी के लिये शाहनशाह को बतलाने पडते हैं। तत्पश्चात् राज्य सभा में प्रान्तिक मण्डल जिन २ प्रश्नों को भेजे उसपर वाद विवाद हो कर निर्णय होता है एवं कोई भी चीनका महाराज्य लोकसत्तात्मक है, और सम्पूर्ण दुनियांमें इस प्रकारका प्रजासत्तात्मक महान् राज्य एकभी नहीं। यह ऐसा विलक्षण है कि भूतकालमें जिस तरह प्रजाकीय स्वतन्त्रताके साथ गरबड़ नहीं की है इसी तरह उसकी ताकत नहीं कि वह वर्तमान कालमें या भविष्यकालमें ऐसी गरबड कर सके। जो लोग राजधानी पेकिनमें बैठकर अधिकार चला रहे हैं वे सब अपने देशी

भाइयोंके स्वभावसे इतने परिचित हैं कि वे एक क्षणभी ऐसा नहीं मानते कि जहां ऐसे महत्वके प्रश्नोंका विचार करना है वहां स्वार्थको एक तरफ रखकर निश्चित किया हुआ जो अन्तिम सिद्धान्त वह सिद्ध करनेके लिये क्रमशः सन्तोषके साथ आगे बढना होगा। आजकलके राज्यकर्ता जो माञ्चू इस प्रसंगका लाभ लेंगे तो जो किसी कोनेपर राजद्रोहका आभास दीख पडता है, वह होनेपरभी अपने वंशको टिका सकेंगे। एवं जिस वंशने अपने आरंभमें बडे बडे पराक्रम किये हैं उस वंशको बढने देकर सम्पूर्ण चीनी प्रजाको महत् लाभान्वित करेंगे। दुर्भाग्यसे अगर यह अमूल्य तक खो देंगे, तो देशमें जैसी क्रान्ति अनेक बार हुई है ऐसी अवश्य होगी। चीन एकबार भभकती आगमें अपना पैर रक्खेगा, लेकिन उसमें ज्यादह शुद्ध बनेगा, और पूर्वसमयमें जैसा होता आया है उसी तरह ज्यादः मजबूत होकर बाहर निकलेगा।

श्री सयाजी साहित्यमाला.

प्रकाशित पुस्तक सूची.

	किंमत	
१. विज्ञान-गुच्छः—	**काची**	**पाकी**
२. भूपृष्ठविचार (बीजी आवृत्ति)		०-१२-०
११. देहधर्मविद्यानां तत्त्वो.	०-१४-०	१- ०-०
१२. विज्ञानप्रवेशिका.	०-१०-०	०-११-०
१३. जिंदगीनो विमो. (बीजी आवृत्ति)		०-११-०
१७. उदभिज्जविद्यानुं रेखादर्शन		१- ०-०
१८. करोळीआ (सचित्र)	०-१३-०	०-१४-०
२२. प्राणीविद्यानुं रेखादर्शन (सचित्र)	०-१४-०	१- ०-०
२५. मनुष्यविद्यानां तत्त्वो.	०-१५-०	१- ०-०
३५. जीवविद्या (सचित्र)	०-१४-०	१- ०-०
३८. तुलनात्मक भाषाशास्त्र.	१- २-०	१- ४-०
४६. राजनीतिनो संक्षिप्त इतिहास.		१- ४-०
४७. समाजशास्त्रप्रवेशिका.		०-१४-०
४८. बाळकछेर.		१- ८-०
५०. बाळस्वभाव अने बाळउछेर.		१- ८-०
५१. शरीरयंत्रनुं रेखादर्शन (सचित्र)		१- ४-०
६३. विद्युत् (सचित्र)		१- ४-०
६४. सुप्रजननशास्त्र.		०-१३-०
६७. प्राणीसृष्टि (सचित्र)		१- ८-०
७०. रसायनप्रवेशिका (सचित्र)		१- ३-०
७५. वडोदरानुं अर्थशास्त्र.		०-१३-०
८१ सत्यमीमांसा.		१-१-०

	काची	पाकी
८४. सनईवादन पाठमाला पु. ३. (मराठी)		१– २–०
८५. सदर सदर पु. ४. (मराठी)		१–१२–०
८६. अवताररहस्य (हिंदी)		०–१४–०
८८. सजीव सृष्टीची उत्क्रांति (मराठी) (सचित्र)		२–११–०
९१. यामिक प्रदीप, प्रथम भाग (मराठी) (सचित्र)		२– ६–०
९३. हिन्दुस्तानमां क्षयरोग.		१– ०–०
९५. मल्लविद्या (सचित्र)		१– ०–०
९६. नृकुलविद्या.		०–१५–०
९७. मनोधर्मविद्यानां मूळतत्त्वो.		०–११–०
९९. सृष्टिनी बालावस्था (सचित्र)		१– २–०
१००. आयुर्वेदनो संक्षिप्त इतिहास.		१– ०–०
१०२. सामर्थ्यनुं विज्ञान.		१– ४–०
११२. तत्त्वज्ञानांतील कूटप्रश्न (मराठी)		१– ०–०
११४. सुप्रजाजननशास्त्र (मराठी)		०–१२–०
११६. सरोवरना जीवो.		०–१३–०
११७. सूर्य.		०–१२–०
१२२. परिवर्तनवाद.		०–१०–०
१२४. नौकाबळ.		०–११–०
१२५. अर्वाचीन आर्यभाषाओनी तुलना.		१– ३–०
१३०. आपणुं प्राचीन राज्यतंत्र अथवा राजाप्रजाना धर्मो		१–४–९
१३१. धनविद्या.		०–१२–०
१३४. समाजशास्त्रनां सिद्धांतो.		०–१२–०
१३६. गर्भविद्या.		०–१२–०
१४०. केटलाक रोगो, भाग १		०–१२–०
१४२. नाणुं.		०–१२–०

	काची	पाकी
१४३. मधुमक्षिका अने भ्रमर.		०–१४–०

२. चरित्र–गुच्छः—

	काची	पाकी
८. प्रेमानंद (सचित्र)	०–१२–०	१– ०–०
१४. दयाराम.	०–१०–०	०–११–०
२०. मीरांबाई.	०–१०–०	०–१२–०
३०. गिरधर.	०–१०–०	०–१४–०
३३. भालण (सचित्र)	०–१५–०	१– ०–०
४०. तुकाराम (सचित्र)		१–०–०
४१. महाराजा शिवाजी (मराठी) (सचित्र)	१–०–०	१–६–०
४५. विष्णुदास.		१–०–०
४९. वीर शिवाजी (सचित्र)		१–०–०
५३. मणिशंकर कीकाणी (सचित्र)		१–६–०
६२. दलपतराम (बीजी आवृत्ति)		१–२–०
७२. समुद्रगुप्त (सचित्र)		०-१३-०
७४. मीरांबाई (मराठी)		०-१५-०
७७. चक्रवर्ती अशोक		०-१४-०
७८. समुद्रगुप्त (हिन्दी) (सचित्र)		०-१२-०
९८. अप्रसिद्ध ऐतिहासिक चरित्रें (मराठी)		१–०–०
१०४. शेक्सपियर.		०-११-०
१०७. अकबर (सचित्र) (बीजी आवृत्ति)		०-१४-०
१२७. पंडित जगन्नाथराय चरित्र आणि संगीत गंगालहरी (मराठी)		१–०–०
१३३. वल्लभ.		१– ०–०
१३९. चंद्रगुप्त मौर्य.		०–१०–०
१४१. नेलसननुं जीवन चरित्र		१– ०–०

	काची	पाकी
३ इतिहास—गुच्छः—		
१. संस्कृत वाङ्मयाचा इतिहास. (मराठी)		२--८--०
९. जगतनो वार्तारूप इतिहास भाग १ लो. (बीजी आवृत्ति)		३--८--०
१९. ब्रिटिश राष्ट्रीय संस्थाओ.	०--१२--०	०-१३-०
२४. पॅलेस्टाईननी संस्कृति.	०--११--०	०-१२-०
२६. जगतनो वार्तारूप इतिहास भाग २ जो. (बीजी आवृत्ति.)		२-१२-०
३१. पार्लामेंट.	१--२--०	१--४--०
३४. इतिहासनुं प्रभात.	१--२--०	१--४--०
४३. नवीन जापाननी उत्क्रांति.		१--०--०
५५. चीननी संस्कृति.		१--०--०
५६. नेपोलीअन बोनापार्ट, भाग पहेलो.		२-१२-०
५७. नेपोलीअन बोनापार्ट, भाग बीजो		२-१०-०
५८. नेपोलीअन बोनापार्ट, भाग त्रीजो		२-१२-०
५९. नेपोलीअन बोनापार्ट, भाग चोथो.		३-०-०
६०. उन्नतिविचार (पूर्वार्ध).		१-१०-०
६१. प्राचीन हिंदुस्तानमां स्थानिक स्वराज्य		२-४-०
६५. हिंदुस्थानचा अर्वाचीन इतिहास—मराठी रियासत (मध्यविभाग) भा. १ (मराठी) (द्वितीयावृत्ति)		२-१२-०
६६. सदर भाग २ "		२-१२-०
६८. सदर भाग ३ "		२-४-०
६९. हिंदुस्तानची संस्कृति		१-१२-०
८२. रोमनो इतिहास		१-०-०
८३. पार्लमेंट. (मराठी)		१-०-०
९०. मराठ्यांच्या प्रसिद्ध लढाया (मराठी)		३-०-०
१०१. अशोकना शिलालेखो.		१-६-०

		काची	पाकी
१०३.	हिंदुस्ताननना लोको अने प्रश्नो		१–०–०
१०८.	स्थानिक स्वराज्यनी संस्थाओ		०–९–०
१०९.	वडोदरा राज्यनो इतिहास.		१–१०–०
१११.	इटालीनुं जींवनप्रभात.		१–२–०
११५.	इंग्लांड अने हिंदुस्तान.		०–१५–०
१२१.	हिंदुस्ताननना लोको.		०–११–०
१२३.	हिंदुस्थानच्या इतिहासांतील गोष्टी (मराठी)		०–१३–०
१२६.	मराठी रियासत, मध्य विभाग, भाग पहेलो		२–१–०
१२८.	चीन देशांतील सुधारणा (मराठी)		१–४–०
१३७.	जर्मन साम्राराज्याची पुनः स्थापना (पराठी)		२–१४–०
१४४.	चीनकी-संस्कृति (हिन्दी)		१– ६–०

४. वार्ता-गुच्छः—

		काची	पाकी
३.	अंग्रेज बालजीवन–आपणा लघुबन्धु अंग्रेज (बीजी आवृत्ति.)		०–१५–०
४.	अल्कानी अद्भुत प्रवास (सचित्र) (बीजी आवृति)		१–४–०
१६.	वीर पुरुषो.		०–१३–०
१०५.	जातिस्वभावशतक (पूर्वार्ध)		०–१५–०
१०६.	जातिस्वभावशतक (उत्तरार्ध)		०–१३–०
११३.	सुबोधकथामाला (मराठी)		०–१५–०

५. धर्म-गुच्छः—

		काची	पाकी
६.	हिंदुस्थानना देवो (सचित्र)		४–०–०
२३.	दीघनिकाय, भा. १ ला (मराठी)		१–८–०
३२.	तुलनात्मक धर्मविचार	०–१२–०	०–१३–०
३६.	धर्मनां मूळतत्त्वो	०–९–०	०–१०–०

		काची	पाकी
४२.	विविध धर्मोनुं रेखादर्शन		०-१२-०
४४.	उत्तर युरोपनी पुराणकथा	०-१२--	०-१४-०
८०.	तुलनात्मक धर्मविचार (हिंदी)		१-४-०
११८.	सिद्धांतदर्शन		१-८-०
१३२.	श्रीमद्भगवद्गीता (शंकरानंदी टीका सहित) प्रथम विभाग.		३-४-०
१३५.	रुद्री अष्टाध्यायी		१-८-०

६. नीति—गुच्छः—

५.	माबापने बे बोल (त्रीजी आवृत्ति)		०-६-०
७.	नीतिशास्त्र		०-१४-०
२७.	नीतिविवेचन (बीजी आवृत्ति)	१-०-०	१-२-०
२९.	कॉबेटनो उपदेश (बीजी ,,)		०-१५-०
३७.	नैतिक जीवन तथा नैतिक उत्कर्ष	०-१४-०	०-१५-०
७१.	उदासीपंथनां नीतिवचनो		०-२०-०
७६.	नीतिविवेचन (हिंन्दी)		१-७-०

७. शिक्षण-गुच्छ—

१०.	बालोद्यानपद्धतीचें गृहशिक्षण (सचित्र) (मराठी)	०-९-०	०-१०-०
२८.	बालोद्यान पद्धतिनुं गृहशिक्षण.	०-१२-०	०-१४-०
५२.	शाळा अने शिक्षणपद्धति.		०-१५-०
८९.	प्राचीन हिन्दमांनी केळवणी.		०-१३-०
११९.	मुक्या मुलांचें गृहशिक्षण (मराठी)		०-१४-०

८. प्रकीर्ण-गुच्छः—

१५.	सुधारणा आणि प्रगति. (द्वितीयावृत्ति.) (मराठी)		३-०-०

	काची	पाकी
२१. शिस्त (मराठी)		१–०–०
३९. हिंदुस्तानचा लश्करी इतिहास व दोस्तराष्ट्रांच्या फौजा. (मराठी)		२–८–०
५४. संस्कृति अने प्रगति.		२–०–०
७३. जबाबदार राज्यपद्धति (मराठी)		०-१३-६
७९. इंग्रजी शिष्टाचार (मराठी).		०–१४–०
८७. नागरिकांचीं कर्तव्यें (मराठी)		०–१४–०
९२. सहकार्य अने राष्ट्रीय जीवन.		०–१३–०
९४. बडोद्याचें मराठी साहित्य (मराठी)		०–१०–०
११०. लंडननिवासीनी केळवणी		०–९–०
१२०. कादंबरीची गोष्ट (मराठी)		१–१–०
१२९. जुवानीनी चावी		२–०–०
१३८. मुंबई इलाख्यांतील जाती (मराठी)		२–०–०

श्री सयाजी बाळज्ञानमाला.

—०—

प्रकाशित पुस्तकें:—	किंमत
१ गिरनारनुं गौरव (बींजी आवृत्ति) (सचित्र)	०—६—०
२ ऋतुना रंग (बीजी आवृत्ति)	०—६—०
३ शरीरनो संचो (बीजी आवृत्ति) (सचित्र)	०—६—०
४ महाराणा प्रताप (बीजी आवृत्ति) (सचित्र)	०—६—०
५ कोषनी कथा (बीजी आवृत्ति) (सचित्र)	०—६—०
६ पाटण—सिद्धपुरनो प्रवास (बीजी आवृत्ति)	०—६—०
७ पावागढ (बीजी आवृत्ति)	०—६—०
८ औरंगजेब (बीजी आवृत्ति) (सचित्र)	०—६—०
९ मधपुडो (बीजी आवृत्ति)	०—६—०
१० रणजीतसिह (बीजी आवृरत्ति)	०—६—०
११ सुखी शरीर (बीजी आवृत्ति)	०—६—०
१२ श्री हर्ष (बीजी आवृत्ति)	०—६—०
[illegible] र्यकिरण (बींजी आवृत्ति)	०—६—०
१४ वातावरण (बीजी आवृत्ति)	०—६—०
१५ ग्रहण (बीजी आवृत्ति) (सचित्र)	०—६—०
१६ बाळनेपोलीअन (बीजी आवृति)	०—६—०
१७ कोषकी कथा (सचित्र) (हिन्दी)	०—६—०
१८ लोहीनी लीला	
१९ श्री हर्ष (हिंदी)	०—८—०
२० सिकंदरनी स्वारी	०—६—०
२१ सुरत	०—६—०
२२ एशियानी ओळखाण, भाग पहेलो	०—६—०

२३	भूस्तरनी कथा	०—६—०
२४	लॉर्ड विलियम बेन्टिक	०—६—०
२५	नाना फडनवीस	०—६—०
२६	चंद्र	०—६—०
२७	वडोदरानो वैभव	०—६—०
२८	महादजी सिंधिया	०—६—०
२९	घरघोणी	०—६—०
३०	चांचड	०—६—०
३१	पाचनक्रिया अने दूध	०—६—०
३२	एशियानी ओळखाण, भाग बीजो	०—६—०
३३	गर्भनी कथा	०—६—०
३४	बाल बाबर	०—६—०
३५	नाडीतंत्र	०—६—०
३६	बौद्ध गुफाओ	०—६—०
३७	महाबळेश्वर	०—६—०
३८	हिंदुस्ताननुं वहाणवटुं	०—६—०
३९	जाति अने ज्ञाति, भाग पहेलो	०—६—०
४०	जाति अने ज्ञाति, भाग बीजो	०—६—०
४१	विलियम युवर्ट ग्लॅडस्टन	०—६—०
४२	शूरवीर शिवाजी (सचित्र)	०—६—०
४३	आरोग्यता (हिन्दी)	०—८—०
४४	दरियाकांठो (सचित्र)	०—६—०
४५	[illegible] अने पाणी	०—६—०
४६	अर्थशास्त्रनी ओळखाण.	०—६—०
४७	संभाजी महाराज (मराठी)	०—६—०
४८	महाराणा प्रताप (मराठी)	०—६—०
४९	कोयलानी कथा	०—६—०
५०	जठरनी कथा	०—६—०

५१	ड्युक ऑफ वेलिंग्टन	०–६–०
५२	माकण अने जू	०–६–०
५३	पाणीनां पराक्रम, भाग पहेलो	०–६–०
५४	पाणीनां पराक्रम, भाग बीजो	०–६–०
५५	रसायनप्रवेश.	०–६–०
५६	बाळपृथ्वी.	०–६–०
५७	हवा अने पाणी	०–६–०
५८	कोयलानी खाण.	०–६–०
५९	उत्सर्गतंत्र.	०–६–०
६०	कोषाचें वर्णन. (मराठी)	०–६–०
६१	राष्ट्रीय केळवणी.	०–६–०
६२	फेफसांनी कथा.	०–६–०
६३	इंग्लांडनुं वहाणवटुं	०–६–०
६४	औरंगजेब (हिन्दी)	०–८–०
६५	करकसर.	०–६–०
६६	चक्रवर्ती अशोक.	०–६–०
६७	बालबाबर (मराठी)	०–६–०
६८	खडकनी कथा.	०–६–०
६९	पाणी.	०–६–०
७०	उष्मा.	०–४–०
७१	विलियम एवर्ट ग्लॅडस्टन (मराठी)	०–६–०
७२	संपत्ति व भांडवल (मराठी)	०–६–०
७३	करोळियानां कावतरां.	[illegible]–०
७४	आर्योनुं आदिनिवासस्थान.	[illegible]६–०
७५	यकृतनी कथा	०–६–०
७६	मंगळ	०–६–०
७७	जीवनरसायनविद्या	०–६–०
७८	बाल भागवत	०–८–०